चैत्र मास शुक्ल पक्ष, 22 वर्ष, अंक 77, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | शनिवार 15 अप्रैल 2023 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

उमेश पाल की हत्या उसी ने करवाई थी, उसने जेल में ही उमेश पाल की हत्या की साजिश रची थी

अतीक का कबूलनामा

प्रयागराजः उमेश पाल हत्याकांड में सबसे बड़ा खुलासा अब अतीक अहमद की तरफ से हुआ है। जानकारी के अनुसार पूछताछ में अतीक अहमद ने यह कबूल कर लिया है कि उमेश पाल की हत्या उसी ने करवाई थी। अतीक अहमद ने पुलिसकर्मियों से कहा कि उसने जेल में ही उमेश पाल की हत्या की साजिश रची थी।

अतीक ने कहा- वर्चस्व को लेकर कराई हत्याः जानकारी के अनुसार अतीक ने अपने कबूलनामे में कहा कि वर्चस्व की आदावत में उसने उमेश पाल की हत्या करवाई थी। अतीक ने पूछताछ में बताया कि उमेश पाल उसकी जमीन पर कब्जा कर रहा था और उसे सजा दिलवाना चाहता था। इसलिए उसने उमेश पाल की हत्या करवा दी।

28 फरवरी साल 2006 में हुआ था अपहरणः 28 फरवरी साल 2006 में उमेश पाल का अपहरण हुआ था। इसके एक साल बीतने के बाद उमेश पाल ने धूमनगंज थाने में अपने अपहरण की तहरीर देकर मुकदमा दर्ज कराया था। दिलचस्प बात यह है कि उमेश पाल ने यह मुकदमा तब दर्ज कराया जब प्रदेश में बसपा की सरकार आई और मायावती साल 2007 में मुख्यमंत्री बनीं। उमेश की तहरीर के आधार पर पुलिस ने अतीक, अशरफ और उनके कई करीबीयों पर केस दर्ज किया था।

आतंकियों को हथियार सप्लाई किएः प्रयागराज पुलिस ने कोर्ट को दी रिमांड कॉपी में अतीक अहमद का पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई और आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा से संबंध का खुलासा किया है। रिमांड कॉपी में माफिया अतीक से मिली जानकारी के हवाले से बताया गया है, 'मेरे पाकिस्तान के आईएसआई और आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा से संबंध हैं। मेरे पास हथियारों की कोई कमी नहीं है।'

एसटीएफ ने दो को उठाया, असद को छिपने में की थी मदद, गाड़ी भी दी

झांसीः मुठभेड़ में मार गिराया गए पांच लाख के इनामी बदमाश असद और शूटर गुलाम के मददगार के तौर पर एसटीएफ ने बड़ागांव इलाके से दो लोगों को उठाया है। पूछताछ के लिए एसटीएफ पहले उनको बड़ागांव थाने ले आई। यहां से उनको फिर अज्ञात स्थान पर ले जाया गया है।

पुलिस का कहना है असद यहां पिछले दो दिन से छिपा हुआ था। उसको यहां छिपने में इन लोगों ने मदद की थी। इन लोगों ने उसको छिपने की जगह दिलाने के साथी एक गाड़ी भी उपलब्ध कराई थी। एसटीएफ उनसे अतीक और उमेश पाल हत्याकांड में फरार अन्य लोगों के बारे में पूछताछ करने में जुटी है। एसटीएफ को अंदेशा है कि इन लोगों ने ही दूसरे बदमाशों को भगाने में मदद की है। एसटीएफ ने गुरुवार दोपहर माफिया अतीक अहमद के बेटे असद को एनकाउंटर में मार गिराया। असद अहमद और शूटर गुलाम के एनकाउंटर के बाद यूपी पुलिस के एडीजी कानून व्यवस्था प्रशांत कुमार ने लखनऊ में प्रेस कॉन्फ्रेंस की और पूरे घटनाक्रम की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि 24 फरवरी को प्रमुख गवाह उमेश पाल की हत्या के मामले में आरोपियों की पहचान कर उनके पीछे पुलिस टीम लगाई गई थीं। हत्यारोपियों को ढेर कर दिया गया है। उन्होंने कहा है कि अतीक और अशरफ को छुड़ाने के लिए पुलिस काफिले पर असद हमला करना चाहता था।

अतीक के बेटे को लगीं दो गोलियां, एक दिल को चीर हुई आरपार

झांसीः झांसी के पारीछा डैम के पास एनकाउंटर में मारे गए माफिया अतीक अहमद के बेटे असद और शूटर गुलाम मोहम्मद का शुक्रवार रात 2:30 बजे तक पोस्टमार्टम चला। 3 डॉक्टरों का पैनल शामिल रहा। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के मुताबिक सामने आया कि माफिया अतीक के बेटे असद को दो गोलियां लगी हैं। एक गोली पीछे से पीठ में लगकर दिल और सीने को चीरते हुए बाहर निकल गई। जबकि दूसरी गोली सीने में लगी और गले में जाकर फंस गई। डॉक्टरों की टीम ने शरीर के भीतर से गोली को बरामद किया है। वहीं, शूटर गुलाम को सिर्फ एक गोली लगी, जो पीठ में लगकर दिल व सीने को चीरते हुए बाहर निकल गई। गोली से ही दोनों की मौत हुई है।

पोस्टमार्टम की हुई वीडियोग्राफीः डॉ. शैलेश गुप्ता, डॉ. नीरज सिंह और डॉ. राहुल पाराशर के पैनल ने रात करीब 9 बजे पोस्टमार्टम शुरू किया। दोनों शवों के पोस्टमार्टम करने में करीब 5 घंटे का वक्त लगा। इस दौरान पूरे पोस्टमार्टम की वीडियोग्राफी भी कराई गई है।

'पाकिस्तान से हथियार ड्रोन की मदद से पंजाब सीमा पर गिराए जाते हैं और स्थानीय कनेक्शन उन्हें इकट्ठा करते हैं। इसी खेप से जम्मू-कश्मीर में आतंकियों को हथियार मिलते हैं। यदि आप मुझे अपने साथ ले जाएं, तो मैं उस पैसे और घटना में इस्तेमाल किए गए हथियार और गोला-बारूद को बरामद करने में आपकी मदद कर सकता हूं।'

पीएम ने गुवाहाटी एम्स का किया उद्घाटन

आयुष्मान कार्डों का वितरण अभियान का शुभारंभ किया

गुवाहाटीः प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने (शुक्रवार) अपने एक दिवसीय गुवाहाटी यात्रा के दौरान गुवाहाटी एम्स, तीन मेडिकल कॉलेजों का उद्घाटन करने के साथ आईआईटी गुवाहाटी परिसर में असम एडवांस्ड हेल्थकेयर इनोवेशन इंस्टीट्यूट (आही) की आधारशिला रखी। प्रधानमंत्री मोदी ने गुवाहाटी के चांगसारी में 1123 करोड़ रुपये की लागत से नवनिर्मित अखिल भारतीय चिकित्सा विज्ञान संस्थान (एम्स) राष्ट्र को समर्पित किया। गुवाहाटी एम्स पूर्वोत्तर भारत का 750 बिस्तरों वाला अपनी तरह का विशिष्ट संस्थान है। इसके साथ ही 1,17,119 वर्गमीटर क्षेत्रफल में निर्मित नलबाड़ी (615.47 रुपये), 1,29,500 वर्ग मीटर क्षेत्रफल में निर्मित नगांव (599.80 रुपये) एवं 92,129 वर्ग मीटर क्षेत्रफल में निर्मित कोकराझार (535.87 करोड़ रुपये) में नवनिर्मित तीन मेडिकल कॉलेज एंड अस्पताल का उद्घाटन किया। वहीं, आईआईटी गुवाहाटी परिसर में 546 करोड़ रुपये की लागत से बनाए जाने वाले वाले असम एडवांस्ड हेल्थकेयर इनोवेशन इंस्टीट्यूट की आधारशिला प्रधानमंत्री ने रखी। यह परियोजना असम सरकार एवं आईआईटी गुवाहाटी की संयुक्त पहल है। औषधि एवं स्वास्थ्य सुरक्षा में अनुसंधानों एवं नवोन्मेषण को प्रोन्नत करने का लक्ष्य, औषधि के सीमांत क्षेत्रों में बहुआयामी आरएंडडी का पोषण इसके जरिए होगा।

साथ ही राष्ट्र द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं की पहचान करना एवं उनके निदान का लक्ष्य तथा आयातित प्रतिस्थापन को लक्ष्य कर उनका दीर्घकालिक समाधान उपलब्ध कराना भी इस संस्थान की जिम्मेदारी होगी।

प्रधानमंत्री मोदी ने यहीं से 1.1 करोड़ आयुष्मान भारत पीएम-जेएवाई कार्डों के वितरण का शुभारंभ किया।

भारत के सपने और आकांक्षाएं असीमित हैंः मोदी

गुवाहाटी/नई दिल्लीः प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को कहा कि 21वीं सदी में भारत के सपने और आकांक्षाएं असीमित हैं। उन्होंने कहा कि इनकी पूर्ति में लोकतंत्र के एक स्तम्भ के तौर पर सशक्त और संवेदनशील न्यायतंत्र की भूमिका भी उतनी ही अहम है। प्रधानमंत्री गुवाहाटी उच्च न्यायालय के प्लेटिनम जुबली समारोह के उपलक्ष्य में गुवाहाटी के श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम के दौरान, प्रधानमंत्री ने असम पुलिस द्वारा डिजाइन किए गए एक मोबाइल एप्लिकेशन असम कॉप का शुभारंभ किया।

विपक्षी एकजुटता के साथ बैठक होने के बाद पूरे देश का करेंगे दौराः नीतीश कुमार

पटनाः मुख्यमंत्री नीतीश कुमार दिल्ली से लौटने के बाद पूरे तेवर में नजर आ रहे है। वह भाजपा पर हमलावर है। शुक्रवार को डॉ. भीमराव आंबेडकर की 132 वीं जयंती पर जदयू कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने लोगों से भाजपा को वोट न देने की अपील खुलकर की। मुख्यमंत्री ने कहा कि भाजपा के लोगों को वोट देंगे तो अपना नाश कर लेंगे। आप समझ लीजिए। इन लोगों के खिलाफ वोट देंगे तो अपना भी विकास होगा। राज्य और देश का भी। केन्द्र की भाजपा सरकार के काम पर प्रश्नचिन्ह लगाते हुए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा कि भाजपा के लोग तो खाली भाषण देते हैं। कोई काम नहीं करते। केंद्र को कह रहे थे कि हमें विशेष राज्य का दर्जा दो लेकिन नहीं ना दे रहा है। हम लोग तो अपने ढंग से काम कर रहे हैं। दिल्ली में बैठे लोग इतिहास बदलने में लगे हैं। पुरानी चीजों खत्म करते चले जा रहे हैं। उनको आजादी की लड़ाई से मतलब था? कोई मतलब नहीं था। आजकल कुछ-कुछ बोलते हैं। उन्होंने कहा कि यह लोग विपक्षी लोगों को परेशान करते हैं। विभिन्न राज्यों के लोगों को परेशान करने में लगे हैं। भाजपा वाले ऐसे ही लोग हैं।अब तो हम लग गए हैं। 7 महीना पहले भी हमने विपक्षी पार्टियों से बात की थी।

आप लोगों को बता देते हैं...परसों ही बात हुई है। सब लोगों से बात हो गई है। सब लोग तैयार हैं। बहुत जल्दी ज्यादा से ज्यादा पार्टियां एकजुट होंगी। कांग्रेस पार्टी के साथ बातचीत हो गई है। सब सहमत हो गए हैं। सब लोगों की सहमति के बाद कल सीपीआई-सीपीएम से भी बात हो गई है। सब लोग एक दूसरे से बात करेंगे। हमारा उद्देश्य यही है कि जितने लोग एक साथ हो जाएंगे वे एक साथ बैठेंगे। क्या करना है वह तय करना है। कहां कौन कितनी सीटों पर लड़ेंगे तय कर लेना है। इसके बाद पूरे देश का दौरा करेंगे।

बंगाल में अमित शाह की हुंकार

ममता बनर्जी के हिटलर शासन को चलने नहीं देंगे

कोलकाताः पश्चिम बंगाल के दो दिवसीय दौरे पर बीरभूम पहुंचे केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सिउड़ी में जनसभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को लेकर हमला बोला है। शुक्रवार अपराह्न यहां संबोधन करते हुए उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी ममता बनर्जी के तानाशाह शासन को चलने नहीं देगी। उन्होंने कहा कि ममता बनर्जी यह सपना देख रही हैं कि उनके बाद उनके भतीजे (अभिषेक बनर्जी) राज्य के मुख्यमंत्री बनेंगे लेकिन मैं गारंटी देता हूं कि राज्य में अगला मुख्यमंत्री भाजपा का होगा। मवेशी तस्करी मामले में गिरफ्तार बीरभूम जिले के बाहुबली नेता अणुव्रत मंडल का जिक्र करते हुए शाह ने ममता बनर्जी पर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि भ्रष्ट नेता मवेशी तस्करी मामले में गिरफ्तारी के बाद से जेल में बंद हैं लेकिन ममता बनर्जी ने आज भी उन्हें जिलाध्यक्ष बना रखा है। ममता शासन की एक ही पहचान है- भ्रष्टाचार, गुंडागर्दी, हत्या, गौ तस्करी। जब तक ममता बनर्जी रहेंगी तब तक बंगाल में यह सब बंद होने वाला नहीं है। इसे केवल एक शख्स बंद कर सकता है और वह है प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी। शाह ने कहा कि बुआ-भतीजे की सरकार मिलकर पूरे राज्य को लूट-खसोट रहे हैं। मैं आश्वस्त करता हूं कि भाजपा ममता बनर्जी के इस तानाशाह शासन को हर हाल में खत्म करेगी।

शराब घोटाले में केजरीवाल को सीबीआई का समन

नई दिल्लीः दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को केन्द्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने शराब नीति मामले में पूछताछ के लिए रविवार सुबह 11 बजे बुलाया है। सीबीआई सूत्रों ने इसकी पुष्टि की है। इस मामले में आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने ट्वीट किया है। उन्होंने लिखा, अत्याचार का अंत जरूर होगा। अरविंद केजरीवाल जी को सीबीआई द्वारा समन किये जाने के मामले में शाम 06 बजे प्रेसवार्ता करुंगा।

कोविशिल्ड वैक्सीन का उत्पादन हुआ शुरू

तीन महीने में सत्तर लाख डोज होगी उपलब्ध

पुणेः देश में दिन-प्रतिदिन कोरोना मरीजों की संख्या में हो रहे इजाफे और सरकारी चिकित्सा केंद्रों में वैक्सीन उपलब्ध नहीं होने से अफरा-तफरी का माहौल बन रहा है। ऐसे में सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया ने एक बार फिर कोविशिल्ड वैक्सीन का उत्पादन शुरू कर दिया है। अगले तीन महीने में 6 से 7 मिलियन (सत्तर लाख) कोविशिल्ड वैक्सीन की डोज तैयार की जाएगी। सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया के अदार पूनावाला ने कहा कि एक बार फिर कोविशिल्ड वैक्सीन का उत्पादन शुरू कर दिया गया है। अगले कुछ पखवाड़े में 6 से 7 मिलियन (सत्तर लाख) कोविशिल्ड वैक्सीन की डोज तैयार कर दी जाएगी। उन्होंने कहा कि "ओमीक्रोन एक्सएक्सबी और इसके वेरियंट के साथ कोरोना के मामले फिर से बढ़ रहे हैं। यह उम्र दराज लोगों के लिए गंभीर हो सकता है। मैं बुजुर्गों को राय दूंगा कि वह मास्क पहने और कोवोवेक्स बूस्टर लें, जो कोविन एप पर उपलब्ध है।

आंबेडकर ने आधुनिक भारत की मजबूत नींव रखी : मायावती

लखनऊः उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री व बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की अध्यक्ष मायावती ने शुक्रवार को आंबेडकर जयंती के अवसर पर पार्टी के प्रदेश कार्यालय पर उनकी प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें याद किया। इस अवसर पर बसपा प्रमुख मायावती ने कहा कि अति मानवतावादी व कल्याणकारी संविधान देकर आधुनिक भारत की मजबूत नींव रखने वाले बाबा साहब डॉ भीमराव आंबेडकर को आज उनकी जयंती पर शत-शत नमन व अपार श्रद्धा सुमन अर्पित कर रही हूं। उनका जीवन संघर्ष करोड़ों गरीबों, मजदूरों, वंचितों व अन्य मेहनतकश लोगों के लिए आज भी उम्मीद की किरण है। बसपा प्रमुख ने कहा आंबेडकर से प्रेरणा लेकर उनके आत्मसम्मान व स्वाभिमान के रुके कारवां को आगे बढ़ाने तथा जाति के आधार पर तोड़े गए लोगों को जोड़ने के लिए आज ही के दिन 14 अप्रैल 1984 को बहुजन समाज पार्टी की देश में स्थापना की गई।

देविका पर बना पुल टूटने से करीब 25 से 30 लोग घायल

उधमपुर/चिनैनीः तहसील चिनैनी के बिनी संगम में बैसाखी मेले के दौरान देविका पर बना पुल अचानक गिर जाने से उस पर खड़े करीब 25 से 30 लोगों के घायल होने की सूचना प्राप्त हुई है।

जानकारी अनुसार तहसील चिनैनी के बिनी संगम में देविका तट पर बैसाखी मेला चल रहा था कि कुछ देर पहले ही देविका पर बना पुल अचानक गिर गया जिससे इस पुल पर व पुल के नीचे खड़े लोग जो स्नान आदि कर रहे थे घायल हो गए। इससे वहां पर हाहाकार मच गया। इसकी सूचना तुरंत तहसील प्रशासन व पुलिस को दी गई।

आम्बेडकर जयंती पर 1 करोड़ ग्रामीण परिवारों को हर घर जल पहुंचाकर दी अनूठी श्रद्धांजलि

उप्रः हर घर नल योजना ने छुआ रिकार्ड का आसमान

लखनऊः योगी सरकार की हर घर नल योजना ने बाबा साहब डॉ. भीमराव आम्बेडकर की 132वीं जयंती पर रिकार्ड का आसमान छूते हुए उनको अनूठी श्रद्धांजलि दी। उत्तर प्रदेश ने शुक्रवार को एक करोड़ ग्रामीण परिवारों को नल से जल की अब तक की सबसे बड़ी सौगात दी।

राज्य सरकार ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की महत्वाकांक्षी जल जीवन मिशन की हर घर जल योजना से 1,00,37,256 ग्रामीण परिवारों तक नल से जल पहुंचाने का बड़ा कार्य पूरा किया। योजना का लक्ष्य वर्ष 2024 तक 2 करोड़ 65 लाख से अधिक ग्रामीण परिवारों तक नल से जल पहुंचाना है। नमामि गंगे एवं ग्रामीण जलापूर्ति विभाग ने ग्रामीणों, किसानों, मजदूरों के घरों तक नल से जल पहुंचाने के महा अभियान की इस बड़ी उपलब्धि को पूरे प्रदेश में भव्य रूप में मनाया।

एमडी जल निगम (ग्रामीण) डॉ बलकार सिंह के साथ जल शक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह ने लखनऊ के मोहनलालगंज स्थित दाउदनगर प्रोजेक्ट पर पहुंचकर वहां मजदूरों के साथ पंगत में बैठकर पत्तल पर भोजन किया। उन्होंने 1 करोड़ ग्रामीण परिवारों को हर घर जल की सौगात दिये जाने पर विभाग के समस्त अधिकारियों-इंजीनियरों-कर्मियों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि मोदी और योगी सरकार बाबा साहब के सपनों को साकार कर रही है। बहुत जल्द हर घर जल योजना उप्र में लक्ष्य को पूरा करेगी। राज्य सरकार के एक प्रवक्ता का कहना है कि बदलते हुए नए उत्तर प्रदेश में जल जीवन मिशन की योजना ग्रामीणों को घर-घर तक स्वच्छ पेयजल पहुंचाने का काम तेज गति से पूरा कर रही है। यूपी देश में प्रतिदिन 40 हजार नल कनेक्शन देने वाला पहला राज्य बना है। सर्वाधिक नल कनेक्शन देने में भी उप्र देश के बड़े राज्यों में तीसरे स्थान पर पहुंच गया है। ग्रामीणों, किसानों और मजदूरों को हर घर जल देने की मुहिम यूपी में लगातार नए आयाम स्थापित कर रही है।

दया याचिकाओं पर फैसले में देरी का फायदा उठा रहे हैं दोषीः सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्लीः सुप्रीम कोर्ट ने राज्य सरकारों और संबंधित अधिकारियों को दया याचिकाओं पर जल्द से जल्द फैसला लेने का निर्देश दिया। साथ ही कहा कि मौत की सजा का सामना कर रहे दोषी अपनी दया याचिकाओं पर निर्णय में हो रही अत्यधिक देरी का फायदा उठा रहे हैं।

शीर्ष अदालत ने महाराष्ट्र सरकार द्वारा बॉम्बे हाई कोर्ट के एक आदेश के खिलाफ याचिका दायर की थी। जिसको लेकर सुप्रीम कोर्ट ने यह टिप्पणी की।

"पीड़ितों को मिल सके न्याय": जस्टिस एमआर शाह और जस्टिस सीटी रविकुमार की पीठ ने कहा कि शीर्ष अदालत द्वारा अंतिम निष्कर्ष दिए जाने के बाद भी, दया याचिका पर फैसला करने में अत्यधिक देरी होने से मौत की सजा का उद्देश्य विफल हो जाएगा। इसलिए राज्य सरकारों या संबंधित अधिकारियों को दया याचिकाओं पर जल्द से जल्द फैसला लेना चाहिए, ताकि दोषी को भी अपने भाग्य का पता चल सके और पीड़ित को भी न्याय मिल सके।

7 साल 10 महीने तक लंबित रही दया याचिकाः हाई कोर्ट ने मृत्युदंड को आजीवन कारावास में इस आधार पर बदल दिया था कि राज्य या फिर राज्य के राज्यपाल की ओर से आरोपी द्वारा दायर की गई दया याचिकाओं पर फैसला नहीं करने में एक असामान्य और अस्पष्ट देरी हुई थी, जिसे करीब सात साल 10 महीने तक लंबित रखा गया था।

खबर संक्षेप

मेडिकल स्टोर संचालक फांसी पर लटका मिला

नैनी। कोतवाली क्षेत्र में दोस्त के साथ अपार्टमेंट में रहने वाले एक मेडिकल स्टोर संचालक ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। रीवा में रहने वाले परिवार को पुलिस के जरिए शुक्रवार को सुबह सूचना मिली तो वह शाम को पोस्टमार्टम हाउस पहुंचे। घूरपुर थानांतर्गत गौहनिया निवासी रामराज यादव का गौहनिया में मेडिकल स्टोर है। एक मेडिकल स्टोर उनका रीवा में भी है। रामराज पाल वही पर रहते है। उनका बड़ा बेटा अनिल यादव (32) नैनी में मेडिकल स्टोर चलाता था। साल भर पहले उसने मेडिकल स्टोर बंद कर दवा सप्लाई का काम शुरू कर दिया था। वह नैनी के काटन मिल के समीप स्थित माया श्री अपार्टमेंट में अपने मित्र ओम प्रकाश यादव के साथ रहता था।ओम प्रकाश यादव के मुताबिक बीती रात हम दोनों खाना खाए। उसके बाद दोनों अपने अपने कमरे में सोने चले गए। सुबह दोनो देर से उठते थे।11 बजे के आ पास ओम प्रकाश अनिल यादव को जगाने गया तो उसका दरवाजा खुला था। अंदर पंखे में गमछे के फंदे से वह लटक रहा था। यह देख ओम प्रकाश अवाक रह गया। पुलिस को सूचना दी गई। पुलिस पहुंची और शव को फंदे से नीचे उतारकर पोस्टमार्टम हाउस भेज दिया।

नैनी में निर्माणाधीन मकान का बारजा गिरा एक की मौत 5 लोग घायल

अखंड भारत संदेश

नैनी। कोतवाली क्षेत्र के फूलमंडी,भट्ठा गांव निवासी बहादुर लाल पुत्र मन्ना लाल का दो मंजिला पक्का मकान छह महीने पहले बनकर तैयार हुआ था। पलस्तर हो गया था। पुताई बाकी थी। मोहल्ले के लोग गर्मी में बहादुर लाल के घर के बारजे के नीचे बैठते थे। शुक्रवार को दोपहर में मोहल्ले के बच्चे वही खेल रहे थे। मोहल्ले के काजू बिंद की पत्नी सुनीता बिंद (32) वही बारजे के नीचे बैठी थी। उसका भी 10 साल का बेटा बजरंगी अन्य बच्चो के साथ खेल रहा था। अचानक से बहादुर लाल के मकान के पहले तल का बारजा सुनीता और वहा खेल रहे बच्चों के ऊपर गिर गया। उसके मलबे में सुनीता और उसका बेटा बजरंगी तो दबा ही गए चार अन्य बच्चे भी दब गए। शोर होने पर आस पास के लोग दौड़े मलबा हटाकर उसमे सभी लोगो को बाहर निकाला। बाहर निकालने के बाद पता चला कि कुछ छह लोग घायल है। जिसमें की सुनीता का बेटा बजरंगी बारजे के मलबे के नीचे दबा हुआ था

प्रयागराज गोविंदपुर के रहने वाले अजय कुमार सरोज किसी काम से नैनी आ रहे थे उन्होंने जब देखा तो अपनी स्कूटी खड़ी कर मकान के पास गए और बजरंगी को मलबे से हटाने लगे आसपास के लोगों से बोले इसको हमारी स्कूटी में बैठा अजय पास के अस्पताल में ले कर गए वहां पर डॉक्टरों ने मेडिकल के लिए बोल दिया। सभी को तत्काल अस्पताल ले जाया गया। जहां काजू बिंद के 10 वर्षीय बेटे बजरंगी को चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। उसकी मां सुनीता बिंद, अंकित बिंद (30) पुत्र लाला बिंद, केतन बिंद (13) पुत्र वीरेंद्र कुमार, प्रियांशु बिंद (13) पुत्र

घटनास्थल के पास से ही गुजर रहे अजय कुमार सरोज ने जब यह नजारा देखा तो एक बच्चे को मलबे से निकालकर अस्पताल लेकर गये

राजू बिंद और अनुराग उर्फ राज बिंद (8) पुत्र मुन्ना बिंद को उपचार के लिए भर्ती कराया गया। कुछ देर बाद हालत ज्यादा बिगड़ने पर सुनीता बिंद, अंकित और केतन को एसआरएन अस्पताल रेफर कर दिया। सूचना पर पहुंचे चौकी इंचार्ज फूलमंडी उमेश यादव ने बजरंगी के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हाउस भेज दिया।

न्यूज झरोखा

आज जो आप लोगों के सामने मैं खडा हूं यह बाबा साहब की देन है : शोएब अंसारी

मऊआइमा। आज में जो आप सभी के बीच में हूं यह बाबा साहब भीमराव अंबेडकर की देन हैं उक्त बातें पूर्व चेयरमैन शोएब अंसारी ने अम्बेडकर जयंती पर कस्बा के विभिन्न मोहल्लों में जा कर संविधान रचयता के चित्र पर माल्यार्पण कर कही। मऊआइमा कस्बा के विभिन्न मोहल्लों में अंबेडकर जयंती पर पूर्व चेयरमैन शोएब अंसारी ने संविधान रचयता डाक्टर बाबा भीमराव आंबेडकर के चित्रों और गौतम बुद्ध की चित्रों पर माल्यार्पण कर कहे कि अगले वर्ष बाबा साहब की जयंती इस प्रकार नहीं मनाई जाएगी बल्कि और भव्य ढंग से मनाया जाएगा। शोएब अंसारी ने कहा कि यदि मोहल्ला मुस्तफाबाद में थोडी सी जमीन मिल जाए तो वह डाक्टर साहब की एक भव्य मूर्ति की स्थापना करेंगें। इस अवसर पर रीना भारतीय, विजय गौतम, कुंदन ,पिंटू, रमेश, सुरेश, लालजी, भुवर, कुल्लू आदि मौजूद रहे।

मऊआइमा में अंबेडकर जयंती पर निकाली गई भव्य रैली

मऊआइमा। बाबा भीमराव अंबेडकर की जयंती पर मऊआइमा में भाव्य रैली निकाली गई। संविधान रचयता डॉ.भीम राव अम्बेडकर जयंती पर मऊआइमा क्षेत्र में भव्य रैली निकाली गई। जिसमें बडी संख्या में लोगों ने भाग लिया, बाबा साहेब अमर रहे के नारों से ग्रामीण क्षेत्र गुजयमान रहा।यह रैली मोहम्मदपुर से निकल कर बाबा साहब की जीवन पर चर्चा करते हुए मोहम्मदपुर से होते हुए तिलई बाजार, मोहन का पूरा , दमोदरपुर, नौगिरा ,अलीपुर ,से होते हुए मलखानपुर ,भले का वन आदि स्थानों पर होते हुए अपने गंतव्य स्थान पर पहुंची।इस अवसर पर महेंद्र सरोज, संतोष बौद्ध, ओमप्रकाश बौद्ध, रवि पटेल,अनिल पटेल,सुनील,विशाल,सोनू, लोकेंद्र,गुलशन आदि बडी संख्या में बाइकों और चार पहिया वाहनों से लोग शामिल हुए।

चनेथू रफ्टा पुल पर नये पुल का निर्माण कार्य का शुभारंभ

जंघई। चनेथू नीबी, बरियांवा ग्राम सभा के मध्य बरुणा नदी पर बना रफ्टा पुल जीर्ण शीर्ण अवस्था में हो गया था जिसके कारण आवागमन बंद हो गया था।इस मार्ग का प्रयोग प्रयागराज, फूलपुर, हंडिया, वारी, दुर्गागंज, भदोही, ज्ञानपुर, विंध्याचल आदि स्थानों पर जाने के लिए लोग करते हैं। बारिश में यह रास्ता बिल्कुल बंद हो जाता था पानी पुल के उपर से बहता है पुल में जगह जगह बड़े बड़े गड्ढे हो गए हैं आवागमन बंद हो गया था। जनप्रतिनिधियों एवं ग्रामीणों द्वारा एसडीएम हंडिया, लोक निर्माण विभाग एवं अन्य अधिकारियों एवं जनप्रतिनिधियों को जर्जर पुल की मरम्मत हेतु प्रार्थना पत्र दिया था जिसके फलस्वरूप लोक निर्माण विभाग द्वारा नये पुल का निर्माण शुक्रवार से प्रारंभ हो गया। निर्माण कार्य प्रारंभ होने पर प्रधान चनेथू मुन्ना पांडेय, प्रधान बरियांवा राजीव दुबे मटरू, हरिश्चंद्र दुबे, दिलीप कुमार दुबे, धर्मेंद्र दुबे, आकाश दुबे सहित तमाम ग्रामीणों ने प्रशन्नता व्यक्त किया है।

जलालपुर से जंघई तक निकली डीजे के साथ रैली

जंघई। पूरे देशभर में संविधान निमार्ता बाबा साहब भीमराव अंबेडकर की जयंती 14 अप्रैल को बड़े ही धूमधाम से मनाई गई।जलालपुर हरिपुरपट्टी चंपापुर रोड पर रंजित ड्राइवर के घर के पास यात्रा प्रारम्भ हुई। इस अवसर पर उपस्थित लोगों ने बाबा साहेब डॉ भीमराव अंबेडकर के चित्र पर माल्यार्पण करते हुए श्रद्धांजलि दिया। इसके बाद गाजे बाजे डीजे के साथ रैली का शुभारंभ जलालपुर से हरिपुरपट्टी, चंपापुर होते हुए चौका मोड़, जंघई बाईपास से होते हुए वापस होते चौका मोड़ से होते जलालपुर विद्यालय से नेदुला बाजार से कार्यक्रम स्थल जलालपुर हरिपुरपट्टी पहुंचकर संपन्न हुई।इसी क्रम में डबरा स्टेट मिल गेट चौराहा पर बाबा साहेब की प्रतिमा पर माल्यार्पण कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम में शहर गांव के सभी युवा वर्गों ने इसमें बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और बाबा साहब की गाजे-बाजे के साथ रैलियां भी निकाली। इस दौरान सभी जनप्रतिनिधि और युवाओं ने जन्मोत्सव की एक-दूसरे को बधाइयां दी और जय भीम के नारे भी लगाए।इस अवसर पर संस्थापक शिव शंकर गौतम रवि, कोषाध्यक्ष सचिन कुमार गौतम, विशाल कुमार सिंटू, श्रीकांत सांवरा भोजपुरी सिंगर, पवन कुमार, राजा, राहुल, सौरभ, टिंकू, विवेक रंजन, विशेष रंजन, नितेश रंजन सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

विद्यालय प्रबंधन तंत्र ने जगौती में मनाई अंबेडकर जयंती

करछना। भारतीय संविधान के निमार्ता डा भीमराव अम्बेडकर जी की १३२ वीं जयंती श्री मती इन्दिरा गांधी विद्यालय जगौती में मनाईं गई विद्यालय के प्रबंधक डा दिनेश कुमार सोनी ने भारतीय संविधान के निमार्ता डा भीमराव अम्बेडकर के विषय में विस्तार से जानकारी दी इस अवसर पर अरुण कुमार मिश्र पधानाचार्य राम मणि द्विवेदी आनन्द कुमार पटवा रंजना विश्व कर्मा सीखा पाण्डेय खुशबू मौर्य पवनेश कुमार सोनी आस्था पटवा आदि मौजूद रहे।

वरिष्ठ अधिवक्ता के निधन पर व्यक्त की गई शोक संवेदना

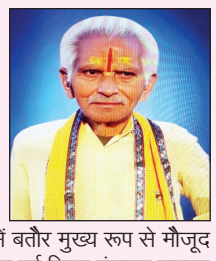

करछना। तहसील क्षेत्र के कबरा गांव निवासी रहे वरिष्ठ अधिवक्ता व पूर्व भाजपा के प्रथम करछना मंडल के उपाध्यक्ष रहे महेंद्र नारायण तिवारी 86 वर्ष के गत दिवस हुई आकस्मिक मृत्यु पर एक शोक सभा कबरा गांव में शुक्रवार को आयोजित हुई। जिसमें उनकी मृत्यु पर गहरा शोक व्यक्त किया गया। साथ ही साथ दो मिनट का आपस में मौन रहकर मृत आत्मा की शांति हेतु ईश्वर से प्रार्थना की गई । शोकसभा में बतौर मुख्य रूप से मौजूद रहे पूर्व ब्लांक प्रमुख करछना विजय कुमार मिश्र व पूर्व जिला पंचायत सदस्य व भाजपा यमुनापार के वरिष्ठ जिला उपाध्यक्ष त्रिवेणी प्रसाद पांडेय ने उनके कृतित्व व व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि महेंद्र नारायण तिवारी एक वरिष्ठ अधिवक्ता के साथ ही साथ सत्यम आईटीआई के संस्थापक भी रहे । और एक महान कवि भी रहे। जिन्होंने लसना शक्ति धाम और गौरी शंकर शक्ति धाम सहित आदि धार्मिक स्थलों की रचनाएं भी की है । शोक सभा का संचालन प्रधानाचार्य केपी तिवारी ने किया । इस मौके पर चंद्रिका प्रसाद शुक्ल जितेंद्र नारायण शुक्ल विनोद तिवारी शिवाकांत पांडेय धवल प्रकाश तिवारी राजेश तिवारी आशीष तिवारी चंद्र प्रकाश तिवारी कृष्ण प्रकाश तिवारी राम सजीवन यादव आदि लोग मौजूद रहे।

जितेंद्र यादव बने ग्राम पंचायत अधिकारी संघ के अध्यक्ष

मऊआइमा। विकास खंड मऊआइमा के ग्राम पंचायत अधिकारी संघ का चुनाव हुआ जिसमें सर्वसम्मति से जीतेंद्र यादव को अध्यक्ष , चंद्रशेखर मौर्य को उपाध्यक्ष , दिनेश कुमार पटेल मंत्री, मिथिलेश कुमार साहू कोषाध्यक्ष , हरिदेव पटेल जिला प्रतिनिधि, श्रेया राय ऑडिटर एवं नीरज यादव को मीडिया प्रभारी चुना गया।इस अवसर पर सभी ने जीतेंद्र यादव को बधाई दी है।

सब्जी मंडी के सामने फल खरीद रहे युवक को तेज रफ्तार पिकअप ने रौंदा, मौत

अखंड भारत संदेश

फूलपुर। फूलपुर सब्जी मंडी के सामने फल खरीद रहे युवक को तेज रफ्तार अनियंत्रित पिकअप ने रौद दिया। जिससे उसकी मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। वही पिकअप चालक सब्जी मंडी के सामने लगे फल के ठेलों को रौंदते भागने लगा। ग्रामीणों ने किसी तरह पकड़कर उसे पुलिस के हवाले कर दिया। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पीएम के लिए भेज दिया। फूलपुर कोतवाली क्षेत्र के बौड़ई (नोनईया) गांव निवासी रामजी 22 पुत्र राज करन शुक्रवार सुबह 8 बजे इफको पुलिस चौकी अंतर्गत सराय अब्दुलमलिक स्थित नवीन सब्जी मंडी से सब्जी खरीदने गया था। सब्जी खरीदने के बाद प्रयागराज गोरखपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर लगे फल के ठेलों से अभी वह फल खरीद ही रहा था कि फूलपुर की तरफ से तेज रफ़्तार आ रही पिकअप ने उसे रौद दिया। जिससे युवक की मौके पर ही मौत हो गई। इस दौरान बूल्लू पुत्र इस्माइल भी गंभीर रूप से घायल हो गया। ग्रामीणों ने भाग रहे पिकअप को पकड़ कर चालक सहित पुलिस को सौंप दिया। पुलिस ने युवक के शव का पंचनामा कर पीएम के लिए भेज दिया। घटना से मृतक के परिजनों में कोहराम मच गया । मृतक के पिता ने पुलिस को तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की। सड़क किनारे लगे ठेलों के कारण होती ही दुर्घटना फूलपुर तहसील से लेकर इफको व बाबूगंज बाजार में सड़क किनारे लगे ठेलों से जहां जाम की स्थिति बनी रहती है वहीं आए दिन दुर्घटनाएं होती रहती है। मंडी के पास हुई घटना देख सब्जी मंडी के सामने दर्जनों फलों की दुकानें एकाएक गायब हो गई।

अध्यक्ष पद के लिए एक व सदस्य के लिए 29 प्रत्याशियों ने भरा पर्चा

अखंड भारत संदेश

मेजा रोड। नगरीय निकाय सामान्य निर्वाचन नामांकन के चौथे दिन अध्यक्ष पद के लिए एक और सदस्य के लिए 29 प्रत्याशियों ने पर्चा भरा।जिसमें नगर पंचायत भारतगंज के लिए अध्यक्ष पद के लिए न नामांकन हुआ और न ही पर्चा खरीदा गया।वहीं सदस्य के लिए 13 लोगों ने पर्चा भरा और 5 फार्म खरीदे गए।सिरसा से अध्यक्ष पद के लिए वर्तमान अध्यक्ष श्यामकृष्ण यादव उर्फ पप्पू ने पूर्व विधायक करछना उज्ज्वल रमन सिंह, व्यापार मंडल अध्यक्ष पप्पू उपाध्याय, योगेंद्र सिंह, लल्लन सिंह,देशराज,दिलावर सिंह और अन्य समर्थकों के साथ पर्चा भरा।इनके प्रस्तावक मिश्रीलाल रहे।सिरसा से अध्यक्ष के लिए 2 फार्म खरीदे गए। वहीं सदस्य पद के लिए 16 लोगों ने नामांकन किया और 9 फार्म खरीदे गए।जिसमें सिरसा के 11 वार्ड और भारतगंज के 13 वार्ड शामिल हैं। नगर पंचायत भारतगंज के सहायक निर्वाचन अधिकारी खंड विकास अधिकारी मेजा सईद अहमद ने बताया कि आज न तो कोई पर्चा खरीदा गया और न ही कोई नामांकन हुआ। इसी क्रम में नगर पंचायत सिरसा के निर्वाचन अधिकारी एसडीएम करछना राजेश श्रीवास्तव ने भी बताया कि आज एक मात्र वर्तमान अध्यक्ष श्यामकृष्ण यादव उर्फ पप्पू यादव ने पर्चा भरा और 2 पर्चे खरीदे गए। वहीं आचार संहिता का कड़ाई से पालन कराने के लिए दोनों काउंटरों पर भारी पुलिस बल तैनात है। फिलहाल नगर पंचायत चुनाव को लेकर तहसील मुख्यालय मेजा में छुट्टी के कारण माहौल शांत रहा।

जुमा के दिन मस्जिद में खैरो बरकत के लिए हुई दुआएं

हर मोमिन को सदका फितरा जकात देना फर्ज : मौलाना रिजवी

कोरांव। रमजानुल मुबारक के पवित्र महीने में जुमा के दिन खास नमाजों के पेशतर हजरत मौलाना सरफुद्दीन रिजवी ने बतौर इमाम तकरीर करते हुए कहा कि हर साहिबे मोमिन को अपनी माल,अशबाब,कमाई में जेवरातों का जकात निकालना फर्ज है और जरूरी भी। इस लिए यतिमों, गरीबों, मिसकिनों को सदका, फित्रा के अलावा जकात जरूर निकालें जिससे हमारी आप की भलाई हो सके। क्योंकि हमारी आपकी कमाई में गरीबों का भी हक समाया हुआ है। मौलाना ने कहा कि नकद,बैंक बैलेंस,जेवरात,और धंधे जिससे कमाई की जा रही हो ढाई परसेंट जकात दिन दुखियों गरीबों मिसकिनों हर जरूरत मंद को देना लाज़िम है। खेती जिसमे बर्षात के पानी से अनाज पैदा होता है उसमे दस किलो ग्राम अनाज में एक किलो गरीब मोहताजों का हक है। जिसमे अपनी संसाधन से सिंचाई कर पैदावार अनाज में बीस कोलो ग्राम में एक किलो ग्राम गरीबों को देना होगा। जिस भी धंधे में चाहे गाड़ियों से कमाई की जाती हो या किसी कारखाने वगैरह में कमाई करी जाए सभी में जकात देना फर्ज है। उन्होंने सभी रोजदारों, नमाजियों से अल्लाह और उसके रसूल के बताए हुए रास्ते पर चलने की ताकीद की। मौलाना ने तकरीर में कहा कि अल्लाह हमारी आपकी हर हरकतों पर अच्छाई बुराई पर नजर रखे हुए हैं। हमे आपको मुल्क और समाज में ऐसा कोई कदम न उठाना चाहिए कि हमारी गलती हमारा समाज,परिवार, भुगते। उन्होंने इस पवित्र माह के जुमें की हर नमाजों में लोगों को अपने नबी के बताए हुए रास्तों पर चलने इबादत करते रहने रोजा नमाज की पाबंदी से अदा करते रहने की और अपने साथ हर गरीब दुखिया बेवा यातिमों की मदद करने की अपील के साथ मुल्क की तरक्की और भाई चारा कायम रखने की खोदा की बारगाह में दुआएं की।

अम्बेडकर जयंती पर बाबूगंज में निकली भव्य शोभायात्रा

अखंड भारत संदेश

फूलपुर। शिक्षित ब्यक्ति ही अपने अधिकारों के लिए आवाज उठा सकता है। ब्यक्ति को हर तरह से सबल बनने के लिए शिक्षा को अनिवार्य रूप से प्राप्त करना चाहिए। यह बातें बोधिसत्व भारत रत्न बाबा साहेब डा० भीमराव अम्बेडकर के 132वें जन्मोत्सव समारोह के अवसर पर बाबूगंज में आयोजित गोष्ठी को संबोधित करते हुए गोष्ठी के मुख्य अतिथि ने शुक्रवार को कही। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अन्य वक्ताओं ने भी बाबा साहेब के जीवन संघर्षों पर अपने विचार रखे। कार्यक्रम के आयोजक शैलेन्द्र कुमार ने कहा कि समतामूलक समाज की स्थापना में सतत प्रयत्नशील रहे बाबा साहेब आंबेडकर ने दलितों,वंचितों व अशिक्षितो के लिए आजीवन कार्य किया। अपनी शिक्षा की बदौलत ही भारतीय संविधान की रचना कर वो देश के लिए आदर्श बनें। गोष्ठी से पूर्व क्षेत्र के पाली, चकमाली, बिगहिया, फतेहगंज, तारडीह, टटीहरा, आटा, नरई, पूरेभुलई, वीरकाजी सहित दर्जनों गांव में डीजे के साथ बाबा साहेब डा० भीमराव अम्बेडकर की झांकी निकाली गई। जिसमे शामिल महिलाएं व पुरुष संविधान शिल्पी के जयकारे लगाते रहे।अनेक स्थानों से होकर निकलने वाली झाकी बाबूगंज स्थित कार्यक्रम स्थल पर पहुंचकर गोष्ठी में तब्दील हो गई। गोष्ठी में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी हुआ जिसमें लोक कलाकारों ने बाबा साहेब के संघर्षों को अपनी गीतों के माध्यम से बताया। कार्यक्रम के आयोजक मंडल ने सभी का आभार व्यक्त किया। गोष्ठी में मुख्य रूप से दिलीप आजाद,सुरेश जायसवाल,उदय नारायण नेता, कर्मवीर सिंह,शिव मिलन गौतम, भगवती प्रसाद वर्मा,पारस नाथ,ओमकार नाथ फौजी,अशुमान वर्मा,जंगबहादुर पटेल, अरूण कुमार, श्यामलाल पटेल,शनि कुमार,अजय कुमार सहित सैकड़ों की संख्या में पुरुष व महिलाएं मौजूद रहे। शोभायात्रा में दर्जनों डीजे के साथ निकले बाबा साहेब के अनुयाइयों को किसी प्रकार से कोई समस्या न हो इसके लिए इफको पुलिस चौकी इंचार्ज पंकज भास्कर डटे रहे। पुलिस की मुस्तैदी से दो किमी की शोभायात्रा में आवागमन भी प्रभावित नहीं हुआ जिसके लिए आयोजकों ने पुलिस को धन्यवाद भी दिया।

बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर को साहू कल्याण समिति किया नमन

नैनी। साहू कल्याण समिति यमुना पार नैनी ने युग पुरुष संविधान निमार्ता बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर के132 वी जयंती नमन करते हुए बधाई दी है। साहू कल्याण समिति यमुना पार नैनी संरक्षक ओम प्रकाश साहू ने बाबा साहेब के कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि बाबा साहब युग दृष्टा थे। उन्होंने दलित समाज के दर्द को जिया है। इसीलिए उन्होंने दलित बौद्ध आंदोलन को प्रेरित किया। और अछूतो से सामाजिक भेद भाव के विरुद्ध अभियान चलाया था। श्रमिको किसानों और महिलाओं का समर्थन भी किया था। सबको समान अधिकार मिले संविधान में ऐसी व्यवस्था दी। आज हमे उनके बताए हुए मार्ग पर चल कर समाज को शिक्षित संगठित व संघर्स शील बना कर मजबूत करे। बैठक में राम सागर गुप्ता कमलेस साहू रविंद्र गुप्ता डी डी गुप्ता अमृत लाल साहू लाल बहादुर साहू सत्य नारायण गुप्ता धीरज साहू विमल गुप्ता श्याम देव साहू प्रेम चंद्र गुप्ता अशोक कुमार साहू गिरजा शंकर गुप्ता वीरेंद्र कुमार साहू आदि लोगो ने बधाई दी।

बाबा साहब को नमन करते मनाई गई जयंती

सहसों। संविधान निमार्ता बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की जयंती क्षेत्र में लोगों ने संगोष्ठी के माध्यम एवं आधुनिक वाद्य यंत्रों बाजा गाजा के साथ जुलूस निकालकर नमन करते हुए बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाई। सहसों स्थित युवा डेवलपमेंट वेलफेयर सोसाइटी के कार्यालय पर संस्था द्वारा एक बैठक आयोजित कर बाबा साहब की जयंती पर उनको श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए शत शत नमन किया गया। इस अवसर पर गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए संस्था के अध्यक्ष चन्द्र प्रकाश केसरवानी ने बैठक में उपस्थित लोगों को बाबा साहब के जीवन पर उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भीमराव रामजी आम्बेडकर यानी डॉ० बाबा साहब आम्बेडकर के नाम से जन-जन में लोकप्रिय, भारतीय बहुज्ञ, विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, कुशल राजनीतिज्ञ, संविधान मर्मज्ञ एवं समाज सुधारक रहे। उन्होंने दलित बौद्ध आंदोलन को प्रेरित करते हुए अछूतों से सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध अभियान चलाया था। यही नहीं सामाजिक उत्थान के लिए श्रमिकों, किसानों और महिलाओं के अधिकारों का अधिकार दिलाने का समर्थन भी किया था। इस मौके पर संस्था के सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने उपस्थित होकर बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर को नमन करते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित कर जयंती मनाई।

सभासद प्रत्यासी ने मनाया अम्बेडकर जयंती

कोरांव। नगर पंचायत कोरांव बहादुर शाह नगर के निवासी अजय प्रकाश केशरी उर्फ डब्बू सर्राफ ने कुछ स्थानीय लोगो के साथ अपने घर पर डॉ भीमराव की अम्बेडकर जयंती मनाये बता दे की अजय प्रकाश केशरी वार्ड नंबर 04 से सभासद पद के प्रत्यासी भी है इस मौके पर कल्लू सोनी हरिदास केशरी राजीव केशरी कृष्णदेव मिश्र समेत अन्य कई लोग मौजूद रहे। इसी तरह ग्रामीण अंचलों में भी अंबेडकर जयंती धूम धाम से मनाई गई। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन भी हुए।

अंबेडकर के विचारों को सरकार जन जन तक पहुंचाने का कार्य कर रही है

घूरपुर। भारतीय जनता पार्टी के स्थापना सप्ताह के अंतर्गत शुक्रवार के दिन गौहनिया स्थित गीता ज्ञान मंदिर स्कूल में भारतीय संविधान के प्रणेता व भारतीयों के हृदय में समता, समानता एवं विश्व बंधुत्व की भावना को झंकृत करने वाले डॉ.भीमराव अंबेडकर की जयंती मनाई गई। भाजपा अनुसूचित मोर्चा के जिला अध्यक्ष राजमणि पासवान ने कहा की डॉ.भीमराव अंबेडकर भारत में समानता व्याप्त करने के लिए अनेक संघर्षों का सामना किया। उनके उच्च विचारों को हमारे देश प्रदेश की सरकार जन जन तक पहुंचाने का कार्य कर रही है। अध्यक्षता कर रहे कौंधियारा मंडल अध्यक्ष शिव प्रसाद केसरवानी ने कहा कि आज हम लोगों को अंबेडकर जी की भावनाओं एवं राष्ट्रीय एकता हितार्थ उनके शब्दों को अपने जीवन में उतारने की अति आवश्यकता है, हमारी देश प्रदेश की भाजपा सरकार द्वारा अंबेडकर जी की राष्ट्रवादी सोच एवं विश्व बंधुत्व की भावना को जन जन तक पहुंचाने का कार्य कर रही है। तथा मंडल उपाध्यक्ष इंद्रजीत पटेल ने उनकी जीवनी पर प्रकाश डाला इस अवसर पर शक्ति केंद्र संयोजक जितेंद्र दास, मंडल मीडिया प्रभारी गौरीशंकर बिंद, क्रेश मालवीय ,अमित त्रिपाठी ,संदीप त्रिपाठी ,राममूरत पटेल, रामजी यादव ,आजाद सिंह, पटेल ने भी डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जी के बारे में अपने महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किए।कार्यक्रम का संचालन दिनेश प्रजापति महामंत्री मंडल कौंधियारा ने किया। अन्य संभ्रांत लोगों में हनुमंत लाल पटेल, नरेंद्र कुमार यादव ,मंगला प्रसाद प्रजापति, दिनेश पांडेय ,वीरेंद्र विश्वकर्मा ,सदफ, पुष्पा पटेल ,अशोक प्रजापति, मोहनलाल, बिंद आदि मौजूद रहे।

इफको मजदूरों ने संविधान के रक्षा की ली शपथ

प्रयागराज। शांतिपूर्ण लोकतांत्रिक तरीके से इफको फूलपुर ठेका मजदूर संघ संबद्ध ऐक्टू द्वारा बिरकाजी कार्यालय पर डॉ भीमराव अंबेडकर की 132वी जयंती पर समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत डॉ भीमराव अंबेडकर की तस्वीर पर माल्यार्पण से शुरू हुआ, डॉ भीमराव अंबेडकर की यादगार सभा को सम्बोधित करते हुए ऐक्टू राष्ट्रीय सचिव व इंडियन रेलवे इम्प्लाइज फेडरेशन राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ कमल उसरी ने कहा कि आज वर्तमान सरकार भारत रत्न डॉ भीमराव अम्बेडकर साहब ने जो श्रमिकों हितकारी दर्जनों कानून बनाए थे, उसे 4 श्रमिक कोड बनाकर खत्म कर रही है, डॉ भीमराव अंबेडकर ने 1944 में मजदूरों की कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए कहा था कि मजदूरों को अपनी मुक्ति के लिए अनिवार्य रूप से ब्लूरूसो के सोशल कॉन्ट्रैक्ट मार्क्स के कम्युनिस्ट मैनीफेस्टो पोप लियो तेरहवें के एनसाईक्लिकल ऑन द कंडीशनस ऑफ लेबर और जॉन स्टुअर्ट मिल के लिबर्टी को पढ़ना चाहिए, मनमाड़ में रेलवे कर्मचारियों को सम्बोधित करते हुए डॉ भीमराव अंबेडकर ने कहा था कि मजदूरों का शोषण पूंजीवाद औ ब्राह्मणवाद दोनों करते हैं, वर्णव्यवस्था न केवल श्रम का बंटवारा करती है बल्कि श्रमिको का भी बटवारा करती है,कार्यक्रम को राजाराम रेडियो, वरिष्ठ किसान नेता सुभाष पटेल, अधिवक्ता वीरेंद्र सिंह ने भी सम्बोधित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कॉम विजय सिंह- अध्यक्ष -इफको फुलपुर ठेका मजदूर संघ व संचालन कॉम त्रिलोकी नाथ- मंत्री इफको फूलपुर ठेका मजदूर संघ ने किया, कार्यक्रम में मुख्य रूप से इफको फुलपुर ठेका मजदूर संघ उपाध्यक्ष- त्रिभुवन नाथ, कोषाध्यक्ष- फूलचंद प्रजापति, प्रचार मंत्री- जगदीश कुमार, कार्यालय मंत्री- राजनाथ सेकेंड, संगठन मंत्री- अमर सिंह, उपमंत्री मनोज कुमार, रामचंद्र गौतम, नान्हू दास, राजेश पटेल, श्याम बहादुर, कमल सिंह, आदि रहे।

खबर संक्षेप

शास्त्री पुल से प्रेमी युगल गंगा में कूदे

झूंसी। शास्त्री पुल से प्रेमी युगल के गंगा में छलांग लगाने की सूचना पर शास्त्री ब्रिज पर लोगों का जमावड़ा लग गया वही मौके पर पहुंची जल पुलिस के साथ दारागंज पुलिस ने घंटों सर्च ऑपरेशन चलाया न कूदने वाले का पता चला ना ही सूचना देने वाले का पुलिस ने मामला फर्जी बताया। गुरुवार की शाम किसी ने फोन पर पुलिस को सूचना दी की शास्त्री ब्रिज से एक लड़की और लड़के ने गंगा में छलांग लगा दी है सूचना मिलते ही झूंसी इंस्पेक्टर ने जल पुलिस को सूचना दी। जल पुलिस के साथ दारागंज पुलिस घंटों हलकान रही पर कूदने वाले की कोई जानकारी नहीं मिल पाई घटना की सूचना की वजह से शास्त्री ब्रिज पर लोगों की भीड़ लग गई जिसकी वजह से जाम लग गया। एसीपी दारागंज आईपीएस जिराग जैन ने मामला फर्जी था। सूचना देने वाले ने भी अपना नंबर बन्द कर लिया। शास्त्री पुल पर आवागमन सुचारू करा दिया गया।

23 घंटे की पूछताछ में बिगड़ गई माफिया की तबीयत

अखंड भारत संदेश

अस्पताल में कराया गया भर्ती

प्रयागराज। अतीक अहमद और उसके छोटे भाई अशरफ को लेकर प्रयागराज की पुलिस शुक्रवार रात कौशांबी पहुंची। उसे यहां संदीपन घाट थाना क्षेत्र स्थित महंगाई कस्बा लाया गया। पुलिस सूत्रों के मुताबिक जांच टीम में ईडी के अधिकारी भी मौजूद थे। उन्होंने अतीक से उसकी बेनामी संपत्ति कहां-कहां और किस-किस के जरिए संचालित होती है। इस बारे में पता लगाने की कोशिश की।अधिकारी अभी उससे पूछताछ कर ही रहे थे कि अतीक की तबीयत बिगड़ गई। उसने सीने में दर्द और घबराहट होने की बात कही। जिसके बाद पुलिस उसे वापस लेकर प्रयागराज के कॉल्विन हॉस्पिटल पहुंची। जहां पर डॉक्टरों ने उसका चेकअप किया। इसके बाद उसे मोतीलाल नेहरू मण्डलीय अस्पताल भेज दिया। साथ में उसका भाई अशरफ भी है। यहां पर अतीक का टेस्ट किया जा रहा है।

अतीक से 23 घंटे हुई पूछताछ :

कस्टडी रिमांड मिलने के बाद गुरुवार की रात 10.30 बजे से दोनों को प्रयागराज के धूमनगंज थाने में रखा गया था। यहां दोनों से अलग-अलग और आमने-सामने बैठाकर कई राउंड पूछताछ हुई। सोने के लिए दोनों को बोरे का बिस्तर दिया गया। शुक्रवार की रात 9 बजे तक कुल 23 घंटे पूछताछ हुई। उसके बाद धूमनगंज थाने की पुलिस अतीक अहमद और उसके भाई अशरफ को लेकर कौशांबी के लिए निकली। माना जा रहा है कि अतीक अहमद पाकिस्तान से मंगाए गए हथियारों की बरामदगी करा सकता है।अतीक ने इंट्रोगेशन में कुबूला है कि वो पाकिस्तान से ड्रोन के माध्यम से बार्डर पास कराकर अत्याधुनिक हथियार मंगाता था। हथियारों का जखीरा बरामद करने में पुलिस को सफलता मिल सकती है। अतीक के साथ जांच अधिकारी धूमनगंथ इंस्पेक्टर राजेश शर्मा और बड़ी संख्या में पुलिस फोर्स है।

बेटे असद के जनाजे में शामिल होने के लिए की मिन्नतें : पुलिस सूत्रों के मुताबिक इंटेरोगेशन के दौरान अतीक बार-बार एनकाउंटर में मारे गए बेटे असद के जनाजे में शामिल होने की मिन्नतें करता रहा। अतीक ने पुलिस अफसरों से बेटे की तस्वीर भी दिखाने को कहा। हालांकि पुलिस पूरी तरह पूछताछ पर फोकस रही क्योंकि माफिया की सिर्फ 4 दिन की रिमांड ही पुलिस को मिली है। पुलिस के 200 सवालों के सामने माफिया कभी असहज और कभी उग्र नजर आया। ज्यादातर सवालों का जवाब देने से कतराता रहा। केवल हां, हूं में जवाब देता रहा। हालांकि बार-बार सवाल पूछने पर उसने कई बार जांच अधिकारियों को आंखें भी दिखाईं। उमेश पाल की हत्या की एफआईआर उनकी पत्नी जया ने धूमनगंज थाने में 24 फरवरी को दर्ज कराई थी। इसमें अतीक, उसका भाई अशरफ, अतीक की पत्नी शाइस्ता परवीन, असद समेत 9 लोगों को नामजद किया गया था। धूमनगंज थाने जाने वाली सड़क को बैरिकेडिंग कर बंद कर दिया गया है। किसी को थाने के आसपास भी फटकने नहीं दिया जा रहा है। उमेश पाल मर्डर केस की जांच कर रहे थानाध्यक्ष धूमनगंज राजेश कुमार मौर्य ने अतीक-अशरफ की रिमांड मांगने के लिए कोर्ट में दलील दी थी।

असद के जनाजे की तैयारी पूरी, ताबूत मंगवाया : अतीक अहमद के चकिया स्थित घर पर मोहल्ले की महिलाएं इकट्ठा हो चुकी हैं। घर को सरकार गिरा चुकी है। वहां खंडहर है। असद के जनाजे की तैयारियां पूरी हो चुकी हैं। ज्यादातर महिलाएं आसपास की हैं, लेकिन परिवार-रिश्तेदार वहां मौजूद नहीं हैं। असद को कसारी-मसारी कब्रिस्तान में सुपुर्द-ए-खाक किया जाएगा। यहां उसके पुरखों की कब्र भी है। हालांकि दोपहर 2.30 बजे तक असद और गुलाम का शव झांसी में ही पोस्टमॉर्टम हाउस में रखा हुआ है। वहां बाहर पुलिस का कड़ा पहरा है। अभी असद-गुलाम के परिवार का कोई भी सदस्य वहां नहीं पहुंचा है। चर्चा है कि पुलिस खुद शव को लेकर प्रयागराज आएगी। हालांकि इस बारे में पुलिस अफसर कुछ भी नहीं बता रहे हैं।

अतीक से मिलने पहुंचा वकील, पुलिस ने अनुमति नहीं दी : वकील निसार अहमद अतीक और अशरफ से मिलने धूमनगंज थाने पहुंचा। वकील के मुताबिक अतीक बीमार है। पुलिस अतीक से मिलने की इजाजत नहीं दे रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि सीजेएम कोर्ट ने कस्टडी रिमांड के दौरान तीन वकीलों को मिलने की इजाजत दी है। फिर भी वकीलों को मिलने नहीं दिया जा रहा है।

17 अप्रैल तक पुलिस करेगी पूछताछ :

अतीक जनाजे में शामिल होगा या नहीं? इसको लेकर अभी तक तस्वीर साफ नहीं है। बताया जा रहा है कि अतीक के वकील दया शंकर मिश्रा की तरफ से सीजेएम कोर्ट में अर्जी दी जाएगी। इसमें असद के जनाजे में अतीक और उसके परिवार के शामिल होने की इजाजत मांगी जाएगी। अतीक, उसका भाई अशरफ, बेटों- उमर, अली और दो नाबालिग बेटों के जनाजे में शामिल होने की मांग की जाएगी। अतीक का बड़ा बेटा उमर लखनऊ जेल में, अली नैनी जेल में है। दो नाबालिग बेटे बाल सुधार गृह में हैं।

दहेज उत्पीड़न में दो के खिलाफ आपराधिक कार्यवाही रद्द, शेष आरोपियों को नहीं मिली राहत

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने दहेज उत्पीड़न के मामले में प्राथमिकी रद्द करने की मांग वाली याचिका को आंशिक रूप से स्वीकार करते हुए दो आरोपियों के खिलाफ आपराधिक कार्यवाही को रद्द कर दिया है। कोर्ट ने कहा कि दो याचियों के खिलाफ आपराधिक कार्यवाही कुछ और नहीं बल्कि कानूनी प्रक्रिया का उल्लंघन है। न्याय के उद्देश्य को सुरक्षित करने के लिए अनिवार्य है कि याची पूजा और मीनू के खिलाफ कार्यवाही को रद्द किया जाए। यह आदेश न्यायमूर्ति उमेश चंद्र शर्मा ने जानकी शरण त्रिवेदी उर्फ अमन व सात अन्य की याचिका को निस्तारित करते हुए दिया है। कोर्ट ने शेष अन्य अभियुक्तों को फिलहाल राहत नहीं दी है। अन्य अभियुक्तों को ट्रायल का सामना करना पड़ेगा।मामले में याचियों के खिलाफ महोबा के मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट के समक्ष दहेज निषेध अधिनियम और धोखाधड़ी में मुकदमा लंबित है। मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट ने सभी के खिलाफ गैर जमानती वारंट जारी किया है। इसके खिलाफ याचियों ने हाईकोर्ट में शरण ली। याचियों पर आरोप है कि उन्होंने शिकायतकर्ता की भतीजी से 2008 में सगाई की रस्म पूरी होने के बाद शादी से इन्कार कर दिया। हालांकि, याचियों ने गिरफ्तारी से बचने के लिए पहले ही हाईकोर्ट से स्थगनादेश ले रखा है।कोर्ट ने जब न्यायिक प्रक्रिया शुरू की तो सभी ने प्राथमिकी रद्द करने की मांग की। याची की ओर से तर्क किया गया कि न्यायिक मजिस्ट्रेट ने बिना संज्ञान लिए ही चार्जशीट के अनुसार प्रक्रिया शुरू कर दी। याचियों को समन नहीं दिया गया और न ही नोटिस जारी किया गया।

नए भारत के निर्माता हैं डॉ अम्बेडकर : प्रो. सीमा सिंह

अखंड भारत संदेश

मुक्त विश्वविद्यालय में बाबा साहब के जन्मदिन पर व्याख्यान का आयोजन

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज के समाज विज्ञान विद्या शाखा के तत्वावधान में शुक्रवार को भारत रत्न डॉ भीमराव अम्बेडकर के जन्म दिवस के अवसर पर आधुनिक भारत के निर्माण एवं विकास में डॉ अम्बेडकर का योगदान विषय पर व्याख्यान का आयोजन सुनिश्चित किया गया। इस अवसर पर अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर सीमा सिंह ने कहा कि डॉ अम्बेडकर नए भारत के निमार्ता हैं। उनका व्यक्तित्व बहुत विराट था। उन्होंने विधिवेत्ता, समाज सुधारक, शिक्षक एवं राजनेता के रूप में ख्याति प्राप्त की। बाबा साहब को दायरे में सीमित करना बहुत मुश्किल है। ऐसा कोई भी क्षेत्र और आयाम नहीं जहां उन्होंने अपनी उपस्थिति दर्ज ना करायी हो। वे न्याय का एक मूर्त स्वरूप थे। उन्होंने समाज में व्याप्त छुआछूत व भेदभाव को मिटाने का संकल्प लिया और समतामूलक समाज की स्थापना की।

इस अवसर पर व्याख्यान देते हुए समाज विज्ञान विद्या शाखा में शैक्षणिक परामर्शदाता प्रोफेसर पी एल विश्वकर्मा, अवकाश प्राप्त प्रोफेसर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने कहा कि समाज से अस्पृश्यता को समाप्त कराने में बाबा साहब का बहुत बड़ा योगदान है। बाबा साहब के प्रयासों से ही समाज में कई बुराइयां दूर हुई। डॉ अम्बेडकर बहुत दूरदर्शी थे एवं भविष्य द्रष्टा थे। वह मानते थे कि समान नागरिक अधिकार लोगों को समान बना देंगे। आज समाज में यह समानता परिलक्षित हो रही है। समानता की संकल्पना डॉ अम्बेडकर की पहचान है। उन्होंने सबके लिए एक कानून बनाया। संविधान में बाबा साहब ने कहीं भी अपने स्वार्थ व निजी विचार को व्यक्त नहीं किया और न ही लाभ उठाया। अतिथियों का स्वागत कार्यक्रम निदेशक प्रोफेसर एस कुमार ने किया। इस अवसर पर अतिथियों एवं शिक्षकों ने बाबा साहब के चित्र पर पुष्प अर्पण करके उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किए। कुलपति प्रोफेसर सीमा सिंह ने इस अवसर पर शैक्षिक आकलन एवं मूल्यांकन पुस्तक का विमोचन किया। व्याख्यान का संचालन आयोजन सचिव डॉ सुनील कुमार ने तथा धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव कर्नल विनय कुमार ने किया। इस अवसर पर प्रोफेसर पी के स्टालिन, प्रोफेसर एस कुमार, डॉ एम एन सिंह, प्रोफेसर छत्रसाल सिंह, प्रोफेसर जे पी यादव, डॉ आनंदानंद त्रिपाठी, डॉ जीके द्विवेदी, डॉ दिनेश सिंह, डॉ आरजे मौर्य एवं डॉ प्रभात चन्द्र मिश्र आदि उपस्थित रहे।

अंबेडकर जयंती के अवसर पर आयोजित किया गया जागरुकता कार्यक्रम

प्रयागराज। उ0प्र0 राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ तथा माननीय अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण/जनपद न्यायाधीश इलाहाबाद संतोष राय के दिशा-निर्देशन में अंबेडकर जयंती के अवसर पर विधिक साक्षरता एवं जागरुकता शिविर का आयोजन प्राथमिक विद्यालय ग्राम देवघाट झलवा प्रयागराज में यूनाइटेड लॉ कॉलेज के सहयोग से सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण इलाहाबाद सुभाष चंद्र मौर्य की अध्यक्षता में किया गया । कार्यक्रम में यूनाइटेड लॉ कॉलेज के विधि छात्र छात्राओं द्वारा उपस्थित आम जनमानस को उनके अधिकारों के बारे में तथा नालसा द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं के बारे में अवगत कराया गया सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण इलाहाबाद द्वारा बाबा भीमराव अंबेडकर जयंती के अवसर पर उनके द्वारा बनाया गया संविधान के बारे में सबको जानकारी प्रदान करते हुए लोगों को मौलिक अधिकार व कर्तव्य के बारे में बताया गया व आगामी दिनांक 13 मई 2023 को आयोजित राष्ट्रीय लोक अदालत के महत्व के बारे में बताया गया डॉ लकी द्वारा उपस्थित जनमानस को लोक अदालत से संबंधित वादों के निस्तारण हेतु गाय के बारे में बताया गया आम जनमानस को लोक अदालत ने अपने वादों के निस्तारण हेतु प्रेरित किया गया कार्यक्रम मै यूनाइटेड कॉलेज के श्री श्रवण व श्री जीवेश इत्यादि उपस्थित रहे यह जानकारी सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण इलाहाबाद और प्रदान की गई।

न्यूज झरोखा

शहीदों की स्मृति में प्रत्येक वर्ष मनाया जाता है अग्निशमन सेवा दिवस

प्रयागराज। आज ही के दिन 1944 में बम्बई (वर्तमान नाम मुंबई) बंदरगाह पर एक मालवाहक जहाज जिसमे कि रुई व विस्फोटक सामिग्री भरी हुई थी जिसमें आग लग गई इस आग को बुझाने में 66 अग्निशमन कर्मियों की जलने/ दम घुटने से मृत्यु हो गई थी। उन्ही शहीदों की स्मृति में प्रत्येक वर्ष अग्निशमन सेवा दिवस मनाया जाता है ।और आज प्रत्येक फायर स्टेशन पर शहीदों के याद मे प्रत्येक फायर स्टेशन पर 02मिनट का शोक रखा गया और प्रत्येक फायर स्टेशन पर फायर रैली निकाली गयीऔर जनपद मे बरिष्ठ अधिकारिओ को पिन फ्लैग लगाया गया।

नैनी एवं छिवकी स्टेशनों का डीआरएम ने किया निरीक्षण

नैनी। एवं छिवकी स्टेशनों का शुक्रवार को डीआरएम रेलवे हिमांशु बडोनी ने निरीक्षण किया। इस दौरान उनके साथ कई अधिकारी मौजूद रहे। उन्होने छिवकी जंक्शन पर प्लेटफार्मों का निरीक्षण किया। एफओबी व चल रहे कार्यो की प्रगति की जानकारी ली। इसके बाद वह नैनी स्टेशन पहुंचे जहां वह स्टेशन पर बने टिकटघर, वेटिंग हॉल समेत अन्य स्थानों का निरीक्षण किया। उन्होने नैनी स्टेशन से संगम जाने वाली सड़क की भी जानकारी ली और उसपर होने वाले कार्य के बारे में जानकारी ली।

यूथ पार्लियामेंट में छात्रों ने कि बजट 2023 पर चर्चा

नैनी। यूनाइटेड इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एफयूजीएस, नैनी ने शुक्रवार को युनाईटेड ऑडिटोरियम में केंद्रीय बजट 2023 विषय पर यूथ पार्लियामेंट 2023 का आयोजन किया इस अवसर पर केंद्रीय बजट 2023 के विभिन्न पहलुओं पर सत्ता पक्ष और विपक्षी दल का प्रतिनिधित्व करने वाले छात्रों के बीच गहन चर्चा हुई। बीबीए-बीसीए के छात्रों द्वारा बजट के फायदे और नुकसान पर डेटा आधारित मंथन किया गया कार्यक्रम की शुरूआत दीप प्रज्जवलन कर हुई। प्राचार्य डॉ देवेंद्र कुमार तिवारी ने सभी अतिथियों का स्वागत किया और कार्यक्रम के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। एचएनबी सरकार पीजी कॉलेज, प्रयागराज से आई मुख्य अतिथि प्रो. सुबर्णा सरकार ने छात्रों को बजट 2023 के बारे में विस्तार से बताया। छात्र कृष्ण कुमार को विजेता तथा कृष्ण कुमार सिंह को उपविजेता घोषित कर पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

अनशन जारी करते हुए आज चौथा दिन, पीड़ित की हालत बिगड़ी

अखंड भारत संदेश

बारा/लालापुर। जिस न्यायालय में क्षेत्रीय जनमानस न्याय की आस लगाकर आते हैं, उसी न्यायालय में अपने हक के लिए तीन-चार दिन से अन्न ग्रहण न करने से एक पीड़ित बच्चा बैठा हुआ है लेकिन उपजिलाधिकारी बारा ने एक बार भी मिलकर उसकी समस्या जानना नहीं चाहा।सोमवार से बारा तहसील मुख्यालय पर ओसा गाँव निवासी किसान अंकुश कुमार पुत्र अशोक कुमार शुक्ला आमरण अनशन पर बैठा हुआ है।अनशनकारी किसान के तहसील प्रशासन बारा पर न्याय न करने का आरोप लगाया है।आरोप है कि लगभग 11 महीनों तक तहसील कार्यालय का चक्कर लगाते-लगाते थक हारकर उसने यह कदम उठाया है इसी अन्यायपूर्ण रवैये के कारण उसके पिता की हार्ट अटैक से मृत्यु भी हो गई है। अंकुश का कहना है कि नायब तहसीलदार बारा के कार्यालय से उसके मामले में 6 फरवरी 2022 को पारित अंतिम आदेश की मूलप्रति को पत्रावली से गायब कर दिया गया है पत्रावली में अंतिम आदेश दर्ज न होने से विपक्षी पार्टियों ने उस जमीन को बेचने लगे हैं।पीड़ित अंकुश ने बताया कि वह 11 महीनों से अधिक समय से तहसील कार्यालय का चक्कर लगाते हुए परेशान हो गया था लेकिन न्याय नहीं मिला। तब पीड़ित द्वारा उपजिलाधिकारी बारा को आमरण अनशन शुरू करने की जानकारी 6 अप्रैल को ही दे दी गई थी।इस प्रकरण में उपजिलाधिकारी बारा ने पीड़ित व्यक्ति से एक बार भी मिलना उचित नहीं समझा।पिछले तीन-चार दिनों से अंकुश केवल जल ग्रहण कर रहा है।अन्न ग्रहण न करने से उसका ब्लड प्रेशर भी बहुत कम होने लगा है, उसकी हालत बिगड़ने लगी है।पीड़ित से प्राप्त जानकारी के अनुसार मंगलवार और बुधवार को तहसीलदार बारा ने मुलाकात कर जाँच करने की बात कही है,लेकिन स समस्या का निराकरण करने की बात नहीं कही गई है।जिससे तहसील प्रशासन बारा के द्वारा किये जा रहे अन्यायपूर्ण रवैये से क्षेत्रीय किसानों में आक्रोश व्याप्त हो गया है।

भा प सं के पूर्व संरक्षक पी एस मिश्रा के निधन पर संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने जताया दुःख

मेजा। एक हिंदी दैनिक अखबार के पूर्व महाप्रबंधक और भारतीय पत्रकार संघ के पूर्व संरक्षक पी एस मिश्रा के निधन पर भारतीय पत्रकार संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष उमेश चंद्र द्विवेदी और मेजा इकाई की ओर से शोक संदेश जारी कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजली दी गई है। श्री द्विवेदी ने कहा कि मिश्रा का जाना संगठन के लिए एक अपूर्णनीय क्षति है। बता दें कि श्री मिश्र विगत सालों से अस्वस्थ चल रहे थे। वह अपने पीछे पत्नी सहित एक बेटा और एक बेटी छोड़ गए हैं। बेटी की शादी फरवरी में ही कर दिए थे। शोक सभा के दौरान प्रमुख रूप से संगठन के संरक्षक शशिकांत तिवारी, नरेंद्र श्रीवास्तव सूर्यकान्त शुक्ला, विवेक वाजपेयी, हरिश्चन्द्र मिश्र,राज बहादुर श्रीवास्तव, फोरात अब्बास, रवि गुप्ता, वरिष्ठ पत्रकार हरिश्चंद्र त्रिपाठी, नीरज मिश्र, संजय शुक्ला, राहुल यादव, आशीष शुक्ला, चंद्रमा प्रसाद, अतुल तिवारी शकील अहमद आदि पत्रकार शामिल रहे।

तमाम बुराइयों से दूर रहने की शिक्षा देता है कुरान : मुफ्ती फजलुर्रहमान इलाहाबादी

मऊआइमा। कुरान तमाम बुराइयों से दूर रहने की शिक्षा देता है ।कुरान अल्लाह की तरफ से उत्तरी गई आसमानी पुस्तक है। जो लोगों की रहनुमाई के लिए आखरी पैगंबर मोहम्मद साहब पर नाजिल की गई। उक्त बातें युवा आलिम मुफ्ती फजलुर रहमान इलाहाबादी ने जामा मस्जिद आजमपुर मे तरावीह में मौखिक पढी गयी कुरान सम्पूर्ण होने पर कही। मौलाना ने कहा कुरान तमाम बुराइयों से दूर रहने की शिक्षा देता है आपसी सौहार्द प्रेम को बढ़ावा देता है कुरान में एक मनुष्य की हत्या को सारी मानवता की हत्या करार देता है। उन्होंने कहा रमजान का महीना बहुत ही बा बरकत है ।रमजान के जो दिन शेष बचे हैं उनकी कदर करें उन्होंने कहा शबे कद्र अत्यंत पवित्र रात है। जिसमें इबादत करना एक हजार महीने से बेहतर है इसलिए इस पवित्र रात में जरूर इबादत करें उन्होंने कहा इस पवित्र महीने में गरीबों बेसहारा लोगों की मदद करें क्योंकि रमजान का महीना गरीबों की मदद करने उनका हर तरह से सहयोग करने का महीना है, उन्होंने कहा इस्लाम में मालदार पर जकात वाजिब है मौजूदा समय में जिसके पास 44 हजार रुपया हो और उस पर साल गुजर गया हो ऐसे आदमी पर ढाई फीसद जकात में देना वाजिब है जकात का मकसद गरीबों की सहायता करना है जकात ना अदा करने पर सख्त गुनाह है हदीस में है जिस माल पर जकात अदा नहीं की जाती। वह माल कयामत में अजाब का जरिया होगा इसलिए जकात गरीब, विधवा यतीम आदि का हिस्सा है आप जकात दे रहे हैं ।गरीबों पर एहसान नहीं कर रहे हैं। जकात की अदायगी में गफलत न करें। वरना अल्लाह का अजाब सख्त होगा।

पिता को बंधक बनाकर युवती से दुष्कर की कोशिश मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। मऊआइमा के एक गांव में आधा दर्जन उवको ने घर में घुस कर पिता को बंधक बनाकर युवती को जमीन पर पटख करा दुष्कर्म करने की कोशिश किए विरोध पर युवती को कुल्हाड़ी से मार कर उसके पिता और छोटी बहन को भी पीटे पुलिस को फोन करने पर आरोपी गालियां देते हुए भाग गए। युवती की तहरीर पर पुलिस ने आधा दर्जन के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के के एक गांव निवासिनी एक युवती का आरोप है कि वह घर पर काम कर रही थी। तभी गांव के आधा दर्जन युवक उस के घर मे घुस आए उसके पिता को बंधक बनाकर बदनियती के इरादे से उसको पकड कर जमीन में पटख दिए और दुष्कर्म करने की कोशिश किए। युवती का आरोप है कि जब उसने शोर मचाते हुए विरोध किया तो उसे कुल्हाड़ी से सिर पर मार दिए तथा उसके पिता और छोटी बहन को भी मारे पीटे। युवती द्वारा पुलिस को सूचना देने पर गालियां देते हुए भाग गए। युवती ने थाने में तहरीर दी कर बादलपुर गांव निवासी छोटे ,शहजादे, तबरेज, फैज, सलमान, कम्मू के खिलाफ मऊआइमा थाने में संगीन धाराओं में मुकदमा दर्ज करा दिया है।

संविधान सब को सम्मान व शिक्षा का अधिकार देता है : मुकुंद लाल मौर्या

अखंड भारत संदेश

उतरांव। सैदाबाद ब्लाक अंतर्गत14 अप्रैल दिन शुक्रवार को संविधान के रचायिता पिछडो के मसीहा कहे जाने वाले डॉ 0 भीमराव अम्बेडकर की 132वां जयंती आज भारत ही नहीं बल्कि आज पुरे विश्व मे बहुत हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। विधानसभा प्रतापपुर के सिठौली चौराहे पर बाबासाहब जयंती पर सैदाबाद ब्लॉकप्रमुख राजेंद्र सिंह पटेल और विशिष्ट अतिथि के रूप विधानसभा प्रतापपुर के समाजसेवी व भाजपा नेता मुकुंद लाल मौर्या रहे।आये हुए अतिथियों ने डॉ 0 बी आर अम्बेडकर के चित्र पर पुष्प अर्पित करते हुए फूलो की माला पहनाकर शत शत नमन किया। सैदाबाद ब्लॉकप्रमुख राजेंद्र सिंह पटेल ने अपने सम्बोधन मे कहा की आज भारत के एक एक गांव मे संविधान के रचयिता पिछड़ो के मसीहा बाबा साहब का जन्मदिन बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। विधानसभा प्रतापपुर के समाजसेवी भाजपा नेता मुकुंद लाल मौर्या ने कहा की दुनिया मे मनावता का सन्देश देने वाले असली समाजसुधारक पिछड़ों के मसीहा डॉ 0 भीमराव अम्बेडकर की जयंती बहुत ही धूमधाम से मनाई जा रहीं है। समाजसेवी ने आगे कहा सम्मान और शिक्षा और लोकतंत्र मे सब को हक और अपना अपना मत देने अधिकार दिलाने वाले डॉ 0 भीमराव अम्बेडकर का जन्मदिन आज पुरे विश्व मे बहुत ही धूमधाम से मनाया जा रहा है। समाजसेवी ने उपस्थित सभी लोगो को कहा की आप सब लोग एक रोटी कम खाये लेकिन अपने बच्चों को जरूर पढ़ाये। क्यों की शिक्षा ओ शेरनी का दूध है जो पियेगा वहीं दहाड़ेगा। शिक्षा से ही सब को सम्मान और अधिकार मिल सकता है। इस मौके पर राकेश कुमार पाल मंडल अध्यक्ष बलीपुर, अशोक कुमार, अनिल कुमार, नागेंद्र कुमार, रंगबहादुर, शंकरलाल, शिवअचल, राजाराम, सूरत, आदि लोग उपस्थित रहे। जयंती कार्यक्रम का संचालन मनोज ने किया। जयंती कार्यक्रम के आयोजक पूर्व जिला पंचायत प्रत्याशी व समाजसेवी पप्पू पासी रहे।

भारतीय जनता पार्टी के कार्यकताओं ने बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर की जयंती मनाई

नैनी। चक भटाई वार्ड नंबर 81 में अरविंद सेक्टर संयोजक के आवास पर भारतीय राजनीति के शिल्पकार एवं महान समाज सुधारक बाबा साहेब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जी की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि सुमन अप्रति की गई जिसमें मुख्य रुप से नैनी भाजपा मंडल उपाध्यक्ष सुरेश पटेल अरविंद पटेल दीनानाथ कुंदन पटेल भोला पटेल आयुष पटेल गुलशन पटेल कुलदीप पटेल जनार्दन पटेल एवं चक भटाई के काफी लोग शामिल हुए मुख्य रूप से सुरेश पटेल ने लोगों को बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर जी के सिद्धांतों पर चलने के लिए लोगों को समझाया।

बिना पट्टे के सार्वजनिक जमीनों पर अबैध कब्जा

लेडियारी। तहसील कोरांव के ग्राम पंचायत पवांरी में बिना आबंटन के सरकारी भूमि पर दबंग लोग अबैध ढंग से पक्का मकान बनाकर रह रहे हैं। उक्त तहसील के पवांरी ग्राम पंचायत के नवीन परती, ऊसर, बंजर, अस्पताल, साधन सहकारी समिति की भूमि को अबैध ढंग से कब्जा करने के बाद पक्का मकान बना लिया गया है उक्त ग्राम पंचायत में कोई बोल नहीं सकता हैक्योंकि दबंग लोगों द्वारा राजस्व कर्मचारियों तथा प्रधान को बिरोध करने पर फर्जी ढंग से फंसा कर जेल भेज देने या हत्या करवा देने की धमकी देते हैंइतना ही नहीं उक्त दबंग लोगों ने पूर्व प्रधान को भी जान से मारने की धमकी दी जा चुकी हैंजिसके कारण आज तक कोई प्रधान तथा राजस्व कर्मी कलम चलाने को तैयार नहीं हो पाता है। इतना ही नहीं कुछ ऐसे भी लोग हैं जो लोगों को बरगला कर प्रधान, मंत्री, लेखपाल को फर्जी ढंग से फंसाने की भी साजिश की जाती हैग्राम वासियों ने उच्च अधिकारियों से जांच कराने के बाद पवांरी ग्राम पंचायत की सार्वजनिक सम्पत्तियों से अबैध कब्जा हटवाने की मांग की है।

दस लीटर कच्ची शराब के साथ एक धराया

मऊआइमा। पुलिस के गश्त के दौरान वन विभाग में एक संदिग्ध को दस लीटर गैलेंस के साथ पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। मऊआइमा थाना क्षेत्र के रेलवे फाटक स्थित वन विभाग में एक संदिग्ध व्यक्ति को दस लीटर कच्ची शराब के साथ गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार शराब बिक्रेता ने अपना नाम मुकेश कुमार पुत्र पवन लाल ग्राम मलाक चतुरी सोरांव बताया। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर मुकेश कुमार के खिलाफ विधिक कार्यवाही की है।

कार्यालय ग्राम पंचायत आइमापुर विकास खण्ड नेवादा जनपद कौशाम्बी

(अल्पकालिक निविदा सूचना)

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत आइमापुर विकास खण्ड नेवादा जनपद कौशाम्बी में 15 वा केंद्रीय वित्त पंचम राज्य वित्त आयोग,मनरेगा योजना,कायाकल्प योजना,राष्ट्रीय स्वच्छता मिशन के अन्तर्गत शौचालय निर्माण व मरम्मत,नाली निर्माण,नाली मरम्मत,खडन्जा निर्माण,हैण्डपम्प मरम्मत,हैण्डपम्प रिबोर,इण्टरलाकिंग,स्कूल निर्माण व मरम्मत,पंचायत भवन मरम्मत,आंगनबाडी केन्द्र निर्माण व मरम्मत,सोलर लाइट,सोलर पम्प स्ट्रीट लाइट इंटरलॉकिंग स्कूल बाउंड्री एमडीएम सेट कैटल शेड व अन्य कार्यो में प्रयुक्त होने वाली सामग्री आपूर्ति हेतु पंजीकृत फर्मो द्वारा दिनांक 15/04/2023 से 22/04/2023 तक सील बन्द निविदा आमंत्रित की जाती है। जो दिनांक 24/04/2023 को 12 बजे दिन में उपस्थित फर्मो के समक्ष खोली जायेगी। निविदा स्वीकृत/अस्वीकृत करने का अधिकार अधोहस्ताक्षरी में निहित होगा सामग्री की मात्रा ग्राम पंचायत में स्वीकृत प्राक्कलन के अनुसार पृथक पृथक होगा। निविदा ग्राम पंचायत में वित्तीय वर्ष 2023-24 में कराये जाने वाले सभी कार्यो हेतु प्रभावी होगा।

अखिलेश सिंह
पंचायत सचिव
विकास खण्ड नेवादा
जनपद कौशाम्बी

आशीष कुमार यादव
ग्राम प्रधान, ग्रा0 पं0आइमापुर
विकास खण्ड नेवादा
जनपद कौशाम्बी

बाबा साहब डा0 भीमराव अम्बेडकर जी के बताये हुये आदर्शों, सिद्धान्तों पर चलें: डीएम

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। भारत रत्न बाबा साहब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर की जयन्ती जनपद में बड़े धूमधाम से मनाई गई। कलेक्ट्रेट सभागार में जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल ने बाबा साहब के चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किया एवं जनपदवासियों व अधिकारियों/कर्मचारियों को बाबा साहब डा0 भीमराव अम्बेडकर की जयन्ती की शुभकामनायें दी।

इस अवसर पर जिलाधिकारी ने कहा कि बाबा साहब ने संविधान बनाते समय समाज के हर वर्ग, हर तबके का ध्यान रखा। उन्होने कहा कि डा0 भीमराव अम्बेडकर जातिवाद, सम्प्रदायवाद और भ्रष्टाचार जैसी कुरीतियों को विकास के मार्ग में सबसे बड़ा अवरोध मानते थे। बाबा साहब शोषित, दलित एवं पिछड़े व सर्वसमाज के उत्थान के लिये जीवन पर्यन्त संघर्ष किये, उनके इस योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। बाबा साहब अम्बेडकर एक व्यक्ति ही नही एक सोच है, एक व्यक्तित्व है जिनकी जीवन शैली को अगर हम अपने अन्दर धारित करेगें तो हम देश को विकसित कर सकते है। उन्होने कहा कि हम जहां भी, जिस भी पटल पर है वहां स्वयं को रखकर सोचे और हर जरूरतमंद की मदद करें तो निश्चित ही समाज की दशा और दिशा बदल जायेगी। इस दौरान मुख्य राजस्व अधिकारी राकेश कुमार गुप्ता सहित अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों ने डा0 भीमराव अम्बेडकर के चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किये। इस अवसर पर कलेक्ट्रेट के कर्मचारी सहित आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे। इसी प्रकार विकास भवन, क्षेत्रीय ग्राम्य विकास संस्थान अफीम कोठी सहित समस्त तहसीलों व समस्त ब्लाकों में भी डा0 भीमराव अम्बेडकर के चित्र पर माल्यार्पण किया गया तथा उनके जीवन दर्शन एवं आधुनिक भारत के निर्माण में योगदान पर चर्चा की गयी।

जनपद में धूमधाम से मनाई गई डा0 भीमराव अम्बेडकर की जयन्ती

डा0 भीमराव अम्बेडकर के चित्र पर माल्यार्पण करते डीएम डा0 नितिन बंसल।

सृजना कुटीर में डॉ. अम्बेडकर जयंती धूमधाम से मनाई गई

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। सृजना साहित्यिक संस्था प्रतापगढ़ द्वारा सृजना कुटीर, अजीतनगर, प्रतापगढ़ में बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जयंती धूमधाम से मनाई गई। सर्वप्रथम डॉ. अम्बेडकर के चित्र पर माल्यार्पण किया गया। अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार एवं बाल न्यायाधीश डॉ. दयाराम मौर्य रत्न ने कहा कि महान विद्वान बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने भारत का संविधान बनाकर भारत को विश्व का सर्वश्रेष्ठ लोकतांत्रिक देश बनाया। मुख्य अतिथि के रूप बोलते हुए शिक्षाविद् एवं प्रधानाचार्या बहन लीलावती सरोज ने कहा कि बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर ने नारियों के उत्थान के लिए अनेक कानून बनाये। नारी समाज उनका सदा ऋणी रहेगा। अति विशिष्ट अतिथि अम्मा साहेब ट्रस्ट के ट्रस्टी आनन्द मोहन ओझा एवं साहित्यकार प्रेमकुमार त्रिपाठी प्रेम ने संयुक्त रूप से कहा कि भेदभाव सहित तमाम कुरीतियों का उन्मूलन होना चाहिए। संचालन शिक्षाविद् राकेश कनौजिया ने किया।

डा0 भीमराव अम्बेडकर के जीवन चरित्र पर डाला गया प्रकाश

अखंड भारत संदेश

कटरा गुलाब सिंह, प्रतापगढ़। भारतीय संविधान के शिल्पकार भारत रत्न डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की जयंती आज अमर जनता इंटर कॉलेज के सभागार में आयोजित की गई। कॉलेज की प्रधानाचार्य डॉक्टर स्निग्धा पांडे के द्वारा अंबेडकर के चित्र पर दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इस मौके पर डॉ पांडे ने अपने संबोधन में बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉक्टर अंबेडकर के सामाजिक चिंतन पर विस्तार से चर्चा किया। कार्यक्रम में शिक्षक आनंद प्रकाश श्रीवास्तव ने डॉक्टर अंबेडकर के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से बताया।

कार्यक्रम में शिक्षक शिशिर कुमार श्रीवास्तव, विनय सिंह व दिनेश कुमार के साथ विद्यालय की बालिका भावना शुक्ला प्रिया सिंह याशिका वर्मा रुचि मिश्रा खुशी शर्मा ने भी डॉ भीमराव अंबेडकर के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला। उधर डॉ० भीमराव अंबेडकर पर आधारित लघु फिल्म बच्चों को मॉडल उच्च प्राथमिक विद्यालय कटरा गुलाब सिंह के स्मार्ट क्लास में दिखाया गया। बच्चे बहुत ही उत्सुकता के साथ अंबेडकर के व्यक्तित्व और कृतित्व को देखा। डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की 132 वीं जन्मदिन पर विद्यालय के प्रभारी प्रधानाध्यापक मोहम्मद फरहीम, पितामह यादव, आशा मिश्रा, शिखा श्रीवास्तव, मनोज कुमार सहित बच्चों के साथ संविधान की प्रस्तावना पर शपथ लिया। विद्यालय के प्रभारी प्रधानाध्यापक ने अंबेडकर की जीवनी तथा व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला।

जयन्ती पर संगोष्ठी एवं निबन्ध प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। संविधान निमार्ता डॉ भीमराव अम्बेडकर की 132 वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए डॉ रणजीत सिंह ने बताया कि डॉ भीमराव अम्बेडर का नाम आते ही भारतीय संविधान का जिक्र अपने आप आ जाता है, सारी दुनिया आमतौर पर उन्हें या तो भारतीय संविधान के निर्माण में अहम भूमिका के नाते याद करती है। डॉ अवधेश कुमार सिंह, कृषि वैज्ञानिक ने कहा देश के आर्थिक विकास में महिलाओं के योगदान की अहमियत को हाईलाइट करने का काम भी डॉ अंबेडकर ने उस दौर में किया था। संगोष्ठी के पश्चात डॉ भीमराव अंबेडकर के जीवन चरित्र पर एक निबन्ध प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

डा0 अम्बेडकर के संविधान से ही आगे बढ़ रहा है देश

नगर पालिका कार्यालय में संविधान निमार्ता की मनी जयंती

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर पालिका कार्यालय में संविधान निमार्ता डा0 भीमराव अम्बेडकर के जन्मदिन पर आयोजित एक गोष्ठी में नगर पालिका के अधिषाषी अधिकारी राम अचल कुरील ने कहा कि डा0 अम्बेडकर के संविधान से ही हमारा देष आगे बढ़ रहा है। आधुनिक भारत के निर्माण में डा0 अम्बेडकर का योगदान कभी भुलाया नहीं जा सकता। प्रारंभ में ईओ राम अचल कुरील ने नगर पालिका में आयोजित इस कार्यक्रम में दीप प्रज्जलवन कर कार्यक्रम की शुरूआत की तथा डा0 अम्बेडकर के चित्र पर माल्यार्पण करने के बाद डा0 अम्बेडर के योगदान की चर्चा की गई। इस अवसर पर सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह ने बताया कि आज के दिन ही मध्य प्रदेष में जन्म लेने वाले डा0 अम्बेडकर दलितों के पुरोधा माने जाते हैं। भारत का संविधान बनाकर उन्होंने देष व दुनिया में भारत का परचम लहराया। कार्यक्रम में आरआई राजेष बिंद, स्वच्छ भारत मिषन के वरुण कुमार सिंह तथा मिथिलेष सिंह ने भी डा0 अम्बेडकर के जीवन दर्षन पर प्रकाष डाला। नगर पालिका में शुक्रवार को पूर्वान्ह दस बजे से बारह बजे तक हुए कार्यक्रम में नगर पालिका के सभी कर्मचारी व अधिकारी मौजूद रहे।

डा0 अम्बेडकर के चित्र पर माल्यार्पण करते ईओ नगर पालिका राम अचल कुरील।

नहीं रहे डा. वीरेन्द्र मिश्र, प्रमोद व मोना ने जताया दुःख

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। नगर के बहुगुणा पीजी कालेज प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष व पूर्व विधायक स्व. रामअंजोर मिश्र के चिकित्सक पुत्र डा. वीरेन्द्र मिश्र का गुरूवार की देर रात हृदयगति रूकने से निधन हो गया। सत्तर वर्षीय डा. वीरेन्द्र मिश्र लालगंज में कई शिक्षण संस्थाओं के स्वयं भी संस्थापक रहे। निधन की जानकारी होने पर नगर की बाजार मे शोक छा गया। डा. वीरेन्द्र अपने पीछे पत्नी सेवानिवृत्त प्रधानाचार्या डा. पूर्णिमा मिश्रा समेत दो पुत्रियों को छोड गये हैं। वहीं बडी संख्या मे लोग उनके आवास पहुंचे। शुक्रवार की सुबह डा. वीरेन्द्र की शव यात्रा घर से निकली तो शिक्षकों, व्यापारियों व स्थानीय लोगों का हुजूम डिग्री कालेज गेट तक उन्हें अंतिम विदाई देने मे गमगीन दिखा।

राज्यसभा मे विपक्ष के उपनेता प्रमोद तिवारी तथा कांग्रेस विधानमण्डल दल की नेता आराधना मिश्रा मोना ने डा.वीरेन्द्र को मृदुभाषी एवं शैक्षिक तथा सामाजिक क्षेत्र में दिये गए बहुमूल्य योगदान को अविस्मरणीय ठहराते हुए उनके निधन को दुखद तथा पारिवारिक क्षति कहा है। पूर्व मंत्री एवं भाजपा नेता प्रो. शिवाकांत ओझा ने भी डा. वीरेन्द्र की स्मृति को नमन करते हुए पार्थिव शरीर पर पुष्प अर्पित किये। सांसद प्रमोद तिवारी के प्रतिनिधि भगवती प्रसाद तिवारी, मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल, चेयरपर्सन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी, हाईकोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता अनुराग पाठक, पूर्व प्राचार्य दयाशंकर पाण्डेय, डा. सौरभ मिश्र, डा. आरएस त्रिपाठी, डा. डीपी ओझा, इं. नरेन्द्र तिवारी, व्यापारी नेता रमाशंकर शुक्ल, ब्लाक प्रमुख अमित सिंह, संयुक्त अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष अनिल त्रिपाठी महेश, डा. पुरूषोत्तम शुक्ल, उदयशंकर दुबे, बृजेन्द्र पाण्डेय मंटू ने भी डा. वीरेन्द्र मिश्र के निधन को सामाजिक क्षति कहा है।

जिले के विद्यालयों में हर्षोल्लासपूर्वक मनी डा0 भीमराव अम्बेडकर की जयंती

डीआईओएस ने डा0 अम्बेडकर की प्रतिमा का किया अनावरण

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी डॉ नितिन बंसल के आदेशानुसार जिला विद्यालय निरीक्षक प्रतापगढ़ डॉ ओपी राय द्वारा दिए गए निर्देश के क्रम में जनपद के समस्त माध्यमिक विद्यालयों में बाबा साहब डॉ भीम राव अम्बेडकर की जयंती हर्षोल्लास पूर्वक मनाई गई। जिला विद्यालय निरीक्षक द्वारा कार्यालय में बाबा साहब डॉ भीम राव अम्बेडकर की प्रतिमा का अनावरण किया गया तथा माल्यार्पण कर पुष्प गुच्छ अर्पित किया गया। जिला विद्यालय निरीक्षक के आदेशानुसार बाबा साहब डॉ भीम राव अम्बेडकर की जयंती के अवसर पर राजकीय बालिका इंटर कॉलेज प्रतापगढ़ में जनपद स्तरीय कार्यक्रम प्रधानाचार्य गरिमा श्रीवास्तव की अध्यक्षता एवं गीता उप प्रधानाचार्य के कुशल संयोजन में एवं डॉ मोहम्मद अनीस के कुशल संचालन में संपन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में जिला विद्यालय निरीक्षक प्रतापगढ़ डॉ ओपी राय के प्रतिनिधि प्रधानाचार्य राजकीय इंटर कालेज बरहदा प्रतापगढ़ डॉ विंध्याचल सिंह उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ बाबा साहब डॉ भीम राव अंबेडकर की प्रतिमा का अनावरण किया गया तथा मुख्य अतिथि सहित प्रधानाचार्य और सभी शिक्षकों व विद्यार्थियों द्वारा श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया।

डा0 अम्बेडकर के चित्र पर माल्यार्पण करते डीआईओएस।

तीन बालिकाओं का अलीगढ़ यूनिवर्सिटी में चयन

प्रतापगढ़। जिले की तीन बालिकाओं का चयन अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में हुआ है। ये बालिकाएं कक्षा-6 के इंटेज्स इक्जाम अलीगढ़ युनिवर्सिटी में दी थी, जिसमें तीनों बालिकाओं का चयन कक्षा-6 के लिये हुआ है। ये बालिकाएं उम्मे सबिया, सादमा बानो व खुसनाज बानो एम0एच0यू0 हाईस्कूल व एम0एम0आई0 गर्ल्स इंटर कालेज में पढ़ती हैं। इन बालिकाओं के चयन पर प्रधानाचार्य हाफिज मो0 मुस्लिम ने बताया कि इन बच्चियों ने स्कूल में जो तालीम हासिल की है, उसका नतीजा रहा कि इन बच्चियों का चयन अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में हुआ। उनके चयन पर स्कूल के सरपरस्त मौलाना मो0 फारुख अहमद कासमी, मौलाना मो0 असद कासमी, हाजरा बेगम, मौलाना नईमुद्दीन, मेराज अहमद खान ने इनके उज्जवल भविष्य की कामना किया।

श्रद्धा के साथ मनाया गया खालसा पंथ का सृजना दिवस

गुरुद्वारों में सजाय गये कीर्तन दरबार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। शुक्रवार को गुरुद्वारा नानकशाही बाबागंज में व गुरुद्वारा सिंह सभा पंजाबी कालोनी में खालसा पंथ के सृजना दिवस (बैशाखी) का पर्व बड़े प्यार व श्रद्धा के साथ मनाया गया। इस अवसर दोनो गुरुद्वारों में कीर्तन दरबार सजाए गए।

ज्ञानी विपिन प्रीत सिंह व ज्ञानी हरविंदर सिंह ने अपने जत्थो के साथ सबद कीर्तन गायन किया व बैसाखी के बारे मे बताया कि आज ही के दिन 1699 को गुरुगोबिंद सिंह ने आनंद पुर साहिब खालसा पंथ की स्थापना की थी। इस अवसर पर नव जन्मे बच्चों को अमृत पान कराया गया व नामकरण भी किया गया। इस अवसर पर रात्रि में भी गुरुद्वारा सिंह सभा पंजाबी कालोनी में एक विशाल कीर्तन दरबार सजाया जाएगा जिसमे कानपुर से विशेष तौर पर बीबी जसबीर कौर अपने जत्थे के साथ सबद कीर्तन गायन करेंगे सुबह अरदास 10.30 हुई। उपरांत सभी को प्रसाद व गुरु का लंगर वितरण किया गया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से सरदार मंजीत सिंह छाबडा कर्मजीत सिंह, सुरेन्द्र सिंह, इंद्रजीत सिंह, जसबीर सिंह, पृथ्वीपाल सिंह, अमोलक सिंह, गुरसेवक सिंह, उजागर सिंह, जिम्मी, जगमीत सिंह आदि रहे।

गुरुद्वारा में सबद कीर्तन करते ज्ञानी।

करंट की चपेट मे आने से वृद्ध की मौत, युवक झुलसा

लालगंज, प्रतापगढ़। लीलापुर थाना क्षेत्र के चमरूपुर ग्रामसभा अर्न्तगत बलीपुर परसन निवासी मेवालाल पाण्डेय 70 घर पर रहकर खेती का कार्य करता था। वह शुक्रवार की सुबह करीब सवा आठ बजे खेत में अपनी सब्जी की फसल की सिंचाई करने गया था। वह सिंचाई के लिए खेत मे पाइप लगा रहा था कि इसी बीच खेत किनारे लगे विद्युत पोल के स्टे में उतरे करंट की चपेट मे आ गया। कुछ देर बाद उसकी पत्नी तारावती वहां पहुंची तो खेत में मेवालाल को पड़ा देख चीखने लगी। शोर सुनकर गांव के शिवांशु पाण्डेय 22 पुत्र प्रेमनाथ पाण्डेय वहां पहुंचा और वृद्ध को उठाना चाहा तो वह भी करंट की चपेट मे आने से झुलस गया। जानकारी होते ही ग्रामीणों की सूचना पर विद्युत आपूर्ति बंद करायी गयी। इसके बाद लोग मेवालाल व शिवांशु को लेकर जिला अस्पताल पहुंचे। यहां चिकित्सकों ने मेवालाल को मृत घोषित कर दिया। वही शिवांशु का इलाज जारी है।

शिक्षिका ने प्रधानाध्यापक को दुष्कर्म में फंसाने की दी धमकी

विलंब से आई अध्यापिका को हस्ताक्षर करने से किया था माना, अधिकारियो से शिकायत कर लगाया गंभीर आरोप

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। विलंब से स्कूल पहुंची अध्यापिका को जब प्रधानाध्यापक ने हस्ताक्षर करने से मना किया तो वह दुष्कर्म के मामले में फंसाने की धमकी दे डाली।शिक्षक ने मामले की शिकायत बीईओ से की है।

स्थानीय विकास खंड के एक संविलियन विद्यालय में वर्चस्व को लेकर कोई न कोई नया मामला आए दिन सुर्खियो में आता रहता है।अभी हाल ही में इसी स्कूल की छात्राओं ने प्रधानाध्यापक पर ही अश्लील हरकत करने का आरोप लगाते हुए एबीएसए से शिकायत की थी।यह मामला शांत ही हुआ की अब शिक्षिका ही प्रधानाध्यापक को दुष्कर्म में फंसाने की धमकी दे रही है।शिक्षक ने एबीएसए से शिकायत कर आरोप लगाया है की विलंब से आई स्कूल की एक शिक्षिका ने बिना बताए हस्ताक्षर कर दिया।

जब मैंने विरोध किया तो मुझे दुष्कर्म के मामले में फंसाने की धमकी देने लगी।यही नहीं एकल पुरुष होने के कारण आए दिन सभी शिक्षिकाए गुट बनाकर मानसिक रूप से मुझे प्रताड़ित करती रहती है।जब कि शिक्षिकाओं की माने तो शिक्षक के सभी आरोप निराधार है।अब इस दशा में एक शिक्षित वर्ग में हो रहे आपस में आए दिन विवाद से स्कूल के बच्चो पर क्या प्रभाव पड़ेगा?सूत्रों की माने तो मुख्य विवाद प्रधानाध्यापक के पद को लेकर हो रहा है।और एक दूसरे को फंसाने के लिए कही न कही लोग तरह-तरह की योजना बनाते रहते है।अब शिक्षक सही है या शिक्षिकाएं यह तो जांच के बाद ही पता चलेगा।

आखिर ऐसे कैसे लगेगा अंकुश?

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। स्थानीय विकास खंड के एक पदाधिकारी ने एक विद्यालय की हकीकत खंगालने पहुंच गए। स्कूल में तैनात शिक्षिका ने खूब जमकर फटकार लगाई,साथ ही गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कराने की धमकी भी दी। सूत्रों की माने तो मामला महिला आयोग तक जा पहुंचा।जांच आई तो विभागीय लोगो ने किसी तरह मामले में समझौता कराया। विभागीय पदाधिकारी को जांच हेतु उस स्कूल में न जाने की हिदायत भी दी गई। यही हाल रहा तो मनमानी पर क्या अंकुश लग पाएगा?

इस मामले की जांच की जा रही है जो भी दोषी होगा उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। : **प्रभाकर यादव**

पीड़ित परिजनों ने शव का अंतिम संस्कार करने से किया इंकार

करेंट से हुई दो मौत के मामले मे पुलिस को मिली तहरीर

परियावां, प्रतापगढ़। नवाबगंज थाना क्षेत्र के जनवामऊ पैड़ापुर गांव मे गुरुवार की सुबह बिजली के करेंट की चपेट मे आने से एक महिला समेत किशोर की मौत के मामले मे मृतिका के ससुर की तरफ से घटना की नामजद तहरीर दी गई।

मृतिका के ससुर उक्त थाना क्षेत्र निवासी राम औतार पुत्र गयादीन पटेल पैडापुर जनवामऊ निवासी ने घटना के दूसरे दिन शुक्रवार को नवाबगंज पुलिस को दिये गये नामजद तहरीर मे आरोप लगाया है कि मेरी बहू राम दुलारी पत्नी दिनेश कुमार पटेल (40) वर्षीय व बहू का भाई मोहित पुत्र रामउजेर (12) व सविता पुत्री राम कृपाल पटेल(17)वर्षीय गुरुवार की सुबह लगभग साढ़े दस बजे खेत मे लगे पानी को देखने के लिए जा रही थी।

व्यापार मण्डल ने वाणिज्य कर डिप्टी कमिश्नर र को सौंपा सम्मान पत्र

व्यापारियों को दुर्घटना बीमा योजना देने में की त्वरित कार्यवाही

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल प्रतापगढ़ जिलाध्यक्ष राजेंद्र कुमार केसरवानी के नेतृत्व में वरिष्ठ उपाध्यक्ष लखन बाबा, जिला महामंत्री संजय सोनी एवं अन्य पदाधिकारियों के साथ वाणिज्य-कर डिप्टी कमिश्नर राम भवन को आभार/सम्मान-पत्र देकर सराहना की।

ज्ञात हो कि विगत कई वर्षों से उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल के रा./प्रां.अध्यक्ष बनवारी लाल कंछल ने व्यापारी परिवारों के हित-हेतु, केंद्र व प्रदेश सरकार से मांग की थी, कि किसी व्यापारी का घटना-दुर्घटना में अकस्मात मृत्यु हो जाने पर दुर्घटना-बीमा-योजना के अंतर्गत दस लाख रुपए सहायतार्थ उनके परिजनों को दिया जाए। इसी क्रम में अब तक प्रतापगढ़ जनपद के लगभग 10 व्यवसायियों के परिजनों को सरकार द्वारा वाणिज्य कर विभाग के माध्यम से दुर्घटना-बीमा-योजना के तहत सहायतार्थ दस-दस लाख रुपए की धनराशि प्राप्त हो चुकी है। अभी लगभग एक सप्ताह पूर्व रानीगंज के दुर्घटना में मृतक दो व्यवसायियों के परिजनों को दस-दस लाख रुपए सहायतार्थ धनराशि वाणिज्य कर विभाग के डिप्टी कमिश्नर राम भवन द्वारा प्राप्त हुआ है। आभार संदेश में जिलाध्यक्ष राजेंद्र कुमार केसरवानी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष लखन बाबा, जिला महामंत्री संजय सोनी के साथ मुख्य रूप से कृष्ण मोहन केसरवानी, विष्णु सिंह, राहुल केसरवानी, धीरज उपाध्याय, पंकज केसरवानी, जगदीश मौर्या (जंबो) आदि अन्य पदाधिकारी एवं व्यापारी बंधु उपस्थित रहे।

युवक की मौत, कोहराम.....

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। लालगंज कोतवाली क्षेत्र के नेकनामपुर निवासी उमेश सरोज 22 पुत्र स्व. रामकिशोर सरोज का शव शुक्रवार सुबह करीब नौ बजे गांव स्थित एक पुराने कुएं मे उतराया मिला। गांव से मवेशी चराने निकले कुछ चरवाहों ने उत्सुकतावश कुएं मे झांका तो शव उतराया देख आवाक रह गये। लोगों ने भाग कर इसकी सूचना गांव मे अन्य ग्रामीणों को दी। जानकारी होते ही मौके पर ग्रामीणो की भीड जुट गयी। सूचना पर पहुंची कोतवाली पुलिस ने ग्रामीणों की सहायता से शव को बाहर निकलवाया।

खबर संक्षेप

तमंचा कारतूस के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद मे अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के क्रम में थाना सदीपनघाट पुलिस बल द्वारा वाहन चेकिंग के दौरान अभियुक्त सुनील कुमार उर्फ गुण्डा पासी पुत्र राजाराम निवासी महगांव थाना संदीपनघाट को देवेश हास्पिटल के सामने से एक अदद तमंचा 315 बोर व एक अदद जिन्दा कारतूस 315 बोर के साथ गिरफ्तार कर गिरफ्तारी व बरामदगी के आधार पर थाना स्थानीय पर मुकदमा पंजीकृत कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

चार वारण्टी अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना सरायअकिल पुलिस बल द्वारा दो वारंटी अभियुक्तों अवधेश पुत्र छेदीलाल व ओम प्रकाश पुत्र भगवती प्रसाद निवासीगण किशुनपुर अम्बारी थाना सराय अकिल व जाफर रजा पुत्र मो० रजा निवासी रसूलपुर सुकुवारा उर्फ रानीपुर थाना सराय अकिल को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्तों को न्यायालय भेज दिया है इसी प्रकार थाना पिपरी पुलिस बल द्वारा वारंटी अभियुक्त लाला पुत्र ज्ञान चन्द्र निवासी लोधौर थाना पिपरी को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

डॉ. भीमराव आम्बेडकर के चित्र पर माल्यार्पण कर डीएम सीडीओ ने श्रद्धासुमन किया अर्पित

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। डॉ0 भीमराव आम्बेडकर की जयन्ती के अवसर पर जिलाधिकारी सुजीत कुमार एवं मुख्य विकास अधिकारी डॉ0 रवि किशोर त्रिवेदी ने सम्राट उदयन सभागार में आयोजित कार्यक्रम में डॉ0 भीमराव आम्बेडकर के चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किया इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी जयचन्द्र पाण्डेय एवं मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ0 सुष्पेन्द्र कुमार सहित कलेक्ट्रेट/विकास भवन के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा भी डॉ0 भीमराव आम्बेडकर के चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किया। जिलाधिकारी ने कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा कि बाबा साहब डॉ0 भीमराव आम्बेडकर के जीवनदर्शन, आदर्श एवं व्यक्तित्व से बहुत कुछ सीखने का मिलता है, हम सभी लोगों को उनके जीवन आदर्शों को अपने जीवन में उतारना चाहिए। डॉ0 भीमराव आम्बेडकर ने बहुत ही विषम परिस्थितियों में शिक्षा ग्रहण की, उनके द्वारा लिखित पुस्तकों के अध्ययन से पता चलता है कि उनके सोंचने का दर्शन अद्वितीय था। डॉ0 भीमराव आम्बेडकर आजाद भारत के प्रथम कानून मंत्री थे। डॉ0 भीमराव आम्बेडकर द्वारा किये गये कार्यों की जितनी सराहना की जाय, उतनी ही कम है। डॉ0 भीमराव आम्बेडकर ने विश्व भर के संविधानों का गहन अध्ययन कर भारतीय परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए सबसे बेहतर संविधान का निर्माण किया। मुख्य विकास अधिकारी ने कहा कि डॉ0 भीमराव आम्बेडकर का शिक्षा पर विशेष बल था। डॉ0 भीमराव आम्बेडकर ने स्त्री शिक्षा एवं महिलाओं को आगे बढ़ाने में भी विशेष कार्य किया, जिसका परिणाम है कि बेटियाँ आज सभी क्षेत्रों में बेहतर कार्य कर देश के विकास में योगदान कर रहीं हैं। भारतीय संविधन को तैयार करने वाली प्रारूप समिति का नेतृत्व बाबा साहब डॉ0 भीमराव आम्बेडकर ने किया, इस संविधान के बल पर भारत ने अभूतपूर्व विकास किया है, ऐसे महापुरूष का यह देश हमेशा ऋणी रहेंगा कार्यक्रम को जिला विद्यालय निरीक्षक सच्चिदानन्द यादव एवं जिला बेसिक शिक्षाधिकारी प्रकाश सिंह सहित अन्य अधिकारियों/कर्मचारियां ने भी सम्बोधित किया।

निरोधात्मक कार्यवाही में 17 अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद में अपराध के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में साधारण मारपीट व शांति भंग करने के आरोप में थाना मंझनपुर से एक थाना पश्चिम शरीरा से एक थाना सराय अकिल से छः थाना सैनी से पांच थाना कड़ाधाम से चार कुल 17 अभियुक्तों को गिरफ्तार कर चालान न्यायालय किया गया।

चेकिंग के दौरान की गई कार्यवाही

कौशाम्बी। जनपद में चलाये जा रहे यातायात से सम्बन्धित अभियान के क्रम में जनपद स्तर पर विभिन्नथानों व यातायात पुलिस द्वारा यातायात नियमों का पालन न करने वालों के विरुद्ध सघन चेकिंग की गई एंव चेकिंग के दौरान दो पहिया व चार पहिया वाहनों को चेक किया गया जिसमे यातायात नियमों का उल्लघन करने वाले 118 वाहनों का ई-चालान किया गया।

न्यूज झरोखा

अनियंत्रित स्कार्पियो डिवाइडर से टकराई पांच घायल

कौशाम्बी। सैनी कोतवाली क्षेत्र के अंतर्गत पहाड़पुर के पास वृहस्पतिवार सुबह एक स्कार्पियो अनियंत्रित होकर डिवाइडर से जा टकराई। डिवाइडर से टकराने के बाद एक बाइक सवार को भी टक्कर मार दिया और स्कार्पियो सड़क के किनारे नीचे खेत में जा गिरी। इस घटना में कुल पांच लोग जख़्मी हो गए। स्कार्पियो में चालक समेत तीन लोग सवार थे और दो लोग दो पहिया वाहन से जा रहे थे। यह दुर्घटना देख स्थानीय लोगों ने 108 एम्बुलेंस को कॉल किया। सूचना मिलते ही 108 की तीन एम्बुलेंस यूपी 32बीजी 9990, यूपी 32बीजी 8807, यूपी 32ईजी 4475 मौके पर पहुंची और घायलों का इलाज करते हुए जिला अस्पताल मंझनपुर में भर्ती कारवाया।

अज्ञात वाहन ने दो पहिया वाहन को मारी टक्कर

कौशाम्बी। मंझनपुर चौराहे के पास वृहस्पतिवार रात लगभग 10 बजे एक आज्ञात ऑटो ने दो पहिया वाहन को टक्कर मार दी जिससे दो पहिया वाहन पर सवार दोनो लोग घायल हो गए। जिला अस्पताल से लौट रही 102 एम्बुलेंस ने घायलों को देखा तो तत्काल अपनी एम्बुलेंस रोका और घायलों को एम्बुलेंस पर बैठाकर जिला अस्पताल में भर्ती करवाया है सूचना पाकर मौके पर स्थानीय पुलिस भी पहुंच गई है घायलों का इलाज जिला अस्पताल में चल रहा है खबर लिखे जाने तक घायलों का नाम पता नहीं मालूम हो सका है।

कड़ा धाम से लौट रही बोलेरो पलटी, 108 एम्बुलेंस ने अस्पताल पहुंचाया

कौशाम्बी। सैनी कोतवाली अंतर्गत रघवापुर के पास शुक्रवार सुबह एक बोलेरो पलट गयी जिसमे तीन बच्चों सहित दस लोग सवार थे बोलेरो सवार लोग कड़ा धाम से दर्शन करके के चित्रकूट अपने घर जा रहे थे। सिराथू से मंझनपुर की तरफ निकले थे कि रघवापुर पेट्रोल पंप के पास बोलेरो का अगला टायर फट गया। टायर फटते ही बोलेरो अनियंत्रित होकर पलट गयी। आस पास के लोग और पुलिस प्रशाशन मौके पर पहुंचें और बोलेरो में सवार सभी यात्रियों को बाहर निकाला और 108 एम्बुलेंस के द्वारा सभी घायलों को जिला अस्पताल मंझनपुर में भर्ती करवाया।

आगजनी से खेत में खडी गेहूँ की फसल जलकर खाक

कौशाबी। सिराथू तहसील के ईचौली गाँव में गेहू की खेत में खडी फसल में अचानक आग लग गयी जिससे दो बीघा से अधिक की गेहूँ की फसल जलकर राख हो गयी सूचना पर फायर बिग्रेड की गाडी पहुंच कर आग को बुझाया। जानकारी के मुताबिक स्वर्गीय श्याम कुमार त्रिपाठी के पुत्री गीता देवी के गेहूं के खेत में आग लग गयी जिस समय आग लगी गीता देवी घर पर नहीं थी वह इलाहाबाद में रहती है सूचना पर वह ईचौली गाँव पहुँची और अपने खेतों की जली फसल को देख कर बहुत ही दुखी हुई फायर बिग्रेड को आनन फानन में सूचना दी गयी मौके पर फायर बिग्रेड की गाडी पहुंच कर आग को बुझाया वहीं गीता देवी के मुताबिक उनकी पच्चीस हजार रुपये से अधिक की गेहूँ की फसल जल कर राख हो गयी तथा प्रशासन का ध्यान आकृष्ट कराते हुए गीता देवी पुत्री स्वर्गीय श्याम कुमार त्रिपाठी ने आगजनी से जली गेहूं की फसल की मुआवजे की माँग की है

धूमधाम से मनाई गई डॉ भीमराव अंबेडकर जयंती

कौशाम्बी। भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर की 132वीं जयंती धूमधाम से मनाई गई ।भीमराव अंबेडकर जयंती पर्व पर एमयू कॉन्वेंट स्कूल के बच्चों और टीचरो ने डॉ. भीमराव अंबेडकर की तस्वीर पर पुष्प अर्पित किए। डायरेक्टर अंसार उल्लाह ने भीमराव अंबेडकर के पद चिन्हों पर चलने का संकल्प लेते हुए उनकी जीवनी के बारे में विस्तार से बच्चों को बताया ।उन्होंने कहा कि बाबा साहेब की पहचान एक संविधान निमार्ता के तौर पर होती है. इसके अलावा, वह भारतीय विधिवेत्ता, राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, मानवविज्ञानी, इतिहासकार और अर्थशास्त्री भी थे. उन्होंने समाज के निचले तबके के उत्थान के लिए ढेरों काम किए हैं.उन्होंने कहा कि अंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को हुआ था. उन्होंने भारतीय जाति व्यवस्था के खिलाफ अभियान चलाया. आगे चलकर उन्होंने बौद्ध धर्म अपना लिया था

शराब के साथ छः अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद में विभिन्न थानों द्वारा कुल छः अभियुक्तों को गिरफ्तार कर कब्जे से कुल 64 लीटर अवैध शराब बरामद की गयी गिरफ्तार सभी अभियुक्तों के विरुद्ध सम्बन्धित थानो पर अभियोग पंजीकृत कर अभियुक्तों का चालान न्यायालय कर दिया है। थाना पश्चिम शरीरा पुलिस बल द्वारा अभियुक्त बृजलाल पुत्र विश्वनाथ निवासी गढ़ी बाजार मजरा रक्सौली थाना पश्चिम शरीरा से 8 लीटर इसी प्रकार थाना चरवा पुलिस बल द्वारा अभियुक्त शिवबाबू सिंह पुत्र रामखेलावन निवासी अर्कापतेहपुर थाना करारी से 12 लीटर इसी प्रकार थाना मोहब्बतपुर पाइंस पुलिस बल द्वारा आशीष कुमार यादव पुत्र उदय प्रताप सिंह निवासी ग्राम मैदहाई थाना मोहब्बतपुर पइन्सा से 15 लीटर इसी प्रकार थाना कोखराज पुलिस बल द्वारा अभियुक्त गुलाब चन्द्र पुत्र राम स्वरूप नाई निवासी शहजादपुर थाना कोखराज से 10 लीटर व राममूरत रैदास पुत्र मटरू निवासी टीकरडीह थाना कोखराज से 9 लीटर व अवधेश कुमार पुत्र बड़ी निवासी फरीदपुर टप्पा थाना कोखराज से 10 लीटर अवैध शराब बरामद कर सभी अभियुक्तों का चालान न्यायालय कर दिया है।

नामांकन के चौथे दिन अब तक 09 अध्यक्ष और 59 सदस्यो ने किया नामांकन

अब तक अध्यक्ष के 292 और सदस्यो के 1280 नामांकन पत्र खरीदे गए

कौशाम्बी। जिले में नगर निकाय चुनाव को लेकर प्रशासन ने पूरी तैयारी कर रखी है,नामांकन के चौथे दिन के बाद अब तक अध्यक्ष पद के लिए कुल 09 ने नामांकन दाखिल किया वही सदस्य पद के लिए अब तक कुल 59 प्रत्याशियों ने अपना नामांकन दाखिल किया ह। मंझनपुर तहसील क्षेत्र के नगर पालिका मंझनपुर के लिए अध्यक्ष पद के लिए अब तक केवल एक नामांकन दाखिल किया गया,वही सदस्य पद के लिए कुल 15 ने अपना नामांकन दाखिल किया है।जबकि अध्यक्ष पद के लिए अब तक 38 और सदस्य पद के लिए 260 नामांकन पत्र खरीदे गए है। करारी नगर पंचायत के अध्यक्ष पद के लिए अब तक 26 और सदस्य पद के लिए 72 नामांकन पत्र खरीदे गए है,और सदस्य पद पर अब तक कुल 02 प्रत्याशी ने नामांकन किया है। नगर पंचायत पूरब पश्चिम शरीरा के अध्यक्ष पद के लिए अब तक 15 और सदस्य पद के लिए 139 प्रत्याशियों ने नामांकन पत्र खरीदे है,वही अध्यक्ष पद के लिए 02 और सदस्य पद पर 10 प्रत्याशी ने नामांकन पत्र दाखिल किया है। चायल तहसील क्षेत्र के भरवारी नगर पालिका के अध्यक्ष पद के लिए अब तक कुल 32 और सदस्य पद के लिए 266 नामांकन पत्र खरीदे गए है,लेकिन अभी तक किसी भी पद के लिए एक भी नामांकन दाखिल नही किया गया है। चायल नगर पंचायत के अध्यक्ष पद के लिए अब तक कुल 27 और सदस्य पद के लिए 58 नामांकन पत्र खरीदे गए हैं,और सदस्य पद के लिए 01 प्रत्याशी ने अपना नामांकन दाखिल किया है। चरवा नगर पंचायत के अध्यक्ष पद के लिए अब तक 42 और सदस्य पद के लिए 128 नामांकन पत्र खरीदे गए हैं,और अध्यक्ष पद के लिए 02 और सदस्य के लिए 01 ने अपना नामांकन दाखिल किया है। सराय अकिल नगर पंचायत के अध्यक्ष पद के लिए अब तक 39 और सदस्य पद के लिए 59 नामांकन पत्र खरीदे गए हैं,वही अध्यक्ष पद के लिए 01 प्रत्याशी ने अपना नामांकन दाखिल किया है। सराय अकिल नगर पंचायत के अध्यक्ष पद के लिए अब तक 39 और सदस्य पद के लिए 59 नामांकन पत्र खरीदे गए हैं,वही अध्यक्ष पद के लिए 01 प्रत्याशी ने अपना नामांकन दाखिल किया है। सिराथू तहसील क्षेत्र के सिराथू नगर पंचायत के अध्यक्ष पद के लिए अब तक कुल 11 और सदस्य पद के लिए 69 नामांकन पत्र खरीदे गए हैं,वही अध्यक्ष पद के लिए 01 और सदस्य पद के लिए 11 प्रत्याशियों ने अपना नामांकन दाखिल किया है। अझुवा नगर पंचायत के अध्यक्ष पद के लिए अब तक कुल 27 और सदस्य पद के लिए 80 नामांकन पत्र खरीदे गए हैं,और सदस्य पद के लिए 06 प्रत्याशियों ने अपना नामांकन दाखिल किया है। कड़ा धाम नगर पंचायत के अध्यक्ष पद के लिए अब तक कुल 35 और सदस्य पद के लिए 149 नामांकन पत्र खरीदे गए हैं,अध्यक्ष पद के लिए 02 और सदस्य पद के लिए 13 प्रत्याशियों ने अपना नामांकन दाखिल किया है।

भारत के टॉप 30 में शामिल हुए प्रखर सक्सैना

कौशांबी। कौन कहता है आसमां में सुराख नही हो सकता एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारों....। जी हां इस कहावत को चरितार्थ कर दिखाया है प्रखर सक्सेना ने पूरे देश के टॉप 30 में नाम लाकर दिखा दिया है कौशांबी वीरों व बुद्धिमानो की नगरी है जहाँ से देश ही नही बल्कि विश्व मे शिक्षा की अलख जगाई है। कहते हैं योग्य लोगों की कौशांबी में कमी नहीं है उन्हें निखारने की जरूरत है आए दिन कौशांबी के छात्र जिले का नाम देश प्रदेश स्तर रोशन कर रहे हैं आज फिर भरवारी कस्बे के पत्रकार राजू सक्सेना के बेटे प्रखर सक्सेना ने पूरे भारत में टॉप 30 में क्वालीफाई करके बीएस मेहता डिग्री कॉलेज भरवारी के साथ-साथ जिले का नाम रोशन किया है प्रखर सक्सैना के इस सफलता की जानकारी जैसे ही भरवारी नगर के लोगों को मिली नगर के लोगों ने प्रखर सक्सैना के साथ-साथ उनके पिता राजू सक्सेना पत्रकार को बधाई दी है। प्रखर सक्सेना की मां शिक्षिका है और उनकी बेहतर परवरिश ने प्रखर सक्सैना को ऊंचाइयों तक पहुँचाया है प्रखर सक्सैना की इस सफलता पर परिवार के लोगों ने उन्हें मिठाई खिलाकर उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है।

संविधान बनाकर बाबा सहाब भीमराव की हुई कठिन परीक्षा

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। महामाया राजकीय महाविद्यालय, कौशाम्बी मे 14 अप्रैल 2023 को डॉ0 भीमराव अम्बेडकर जयंती के अवसर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता डॉ0 अनिल कुमार असि0 प्रो0 गणित और डॉ0 अरविंद कुमार ,प्राचार्य, महामाया राजकीय महाविद्यालय ने बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर और माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यपर्ण एवं दीप प्रज्वलित करके संगोष्ठी का शुभारंभ किया। ततपश्चात मुख्य वक्ता डॉ0 अनिल कुमार ने कहा कि ₹ बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर ने अपने जीवन में सदैव चुनौतीपूर्ण कार्य किया है। इन्ही चुनौतियों में एक चुनौती थी भारतीय संविधान का निर्माण कार्य। बाबा साहब जब संविधान सभा में सदस्य के रूप में निर्वाचित होने की प्रक्रिया में बम्बई से चुनाव हार जाते है। तो फिर वह बंगला देश से अपनी उम्मीवारी घोषित करते है। वहाँ मुस्लिम लोग के सहयोग से वह चुनाव जीत जातें हैं। मगर 1947 में जब देश आजाद होता है तो बंगाल पकिस्तान के हिस्से पूर्वी पाकिस्तान के रूप में चला जाता है। बाद के दिनों में बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर को वी0एन0राव के स्थान पर निर्वाचित करके संविधान सभा में प्रारूप समिति के अध्यक्ष के रूप में पहुँचतें है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 अरविन्द कुमार ने कहा कि ₹बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर की 132 वी जयंती के अवसर पर हम सभी का कर्तव्य बनता है, कि हम बाबा साहब की दी हुई शिक्षओं को आत्मसात करे और उनके अनुसार अपने जीवन को सवारने का कार्य करें। जिससे हम अपने साथ-साथ अपने समाज को भी सही दिशा दिखा सके। उहोंने आगे कहा कि हमें संविधान के मायने समझना होगा। यदि हम बाबा सहाब भीमराव अम्बेडकर को संबिधान में ही खोजेंगे तो श्याद हम पूरे बाबा सहब को ना बराबर पा पायेगें। इसलिए हमें बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर को शोषित तबकों ,गरीबों, बंचितों में खोजना होगा। हमें बाब साहब भीमराव अम्बेडकर को उनके सघर्षो के जरिए समाज के प्रति किये योगदान को याद रखना होगा। उन्होंने अपनी बात कों चंद पंक्तियाँ कहकर समाप्त किया।बाबा साहब भीमराव,राष्ट्र के गौरव गान है। कर्तव्य, अधिकार का बोध करता संविधान है आगे कि कडी में डॉ0 पवन कुमार, असि0 प्रो0 भूगोल और डॉ0 नीलम बाजपेई, असि0 प्रो0 जन्तु विज्ञान और डॉ0 रीता दयाल असि0 प्रो0 प्राचीन भारतीय इतिहास ने अपने बिचार रखे कार्यक्रम का कुशल संचालन समारोहक डॉ. अजय कुमार द्वारा सफलतापूर्वक किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ0 रीता दयाल असि0 पगो0 प्राचीन भारतीय इतिहास, डॉ0 नीलम बाजपेई, असिस्टेन्ट प्रोफेसर जन्तु विज्ञान, डॉ0 रमेश चन्द्र असिस्टेन्ट प्रोफेसर वाणिज्य, डॉ0 सतोष कुमार असि0 प्रो0 वनस्पति विज्ञान डॉ0 अमित कुमाार असिस्टेन्ट प्रोफेसर दर्शनशास्त्र, डॉ0 शैलेश मालवीय असि0 प्रो0 वाणिज्य , डॉ0 पवन कुमार असि0 प्रो0 भूगोल, डॉ0भावना केसरवानी असि0 प्रो0 रसायन विज्ञान एवं डॉ0 तरित अग्रवाल असिस्टेन्ट प्रोफेसर अंग्रेजी तथा महाविद्यालय के सभी कार्मचारी और छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे।

अधिकार और कर्तव्य की दी समाज को शिक्षा

डीजे बाजे के साथ निकाली गयी रैली मनाई गई अम्बेडकर जयंती

अझुवा कौशाम्बी। आज 14 अप्रैल को देशभर में संविधान निमार्ता बाबा साहब भीम राव अम्बेडकर की जयंती बड़े धूम धाम से मनाई जा रही है रैली का आयोजन ग्राम सभा भैरायें से शुरू होकर टाण्डा,नादेमई कनेमई बहुआ होते हुए नगर पंचायत अझुवा पहुंची इस दौरान सैकड़ों की संख्या में मौजूद युवकों ने बाबा साहब अम्बेडकर की जय जय कार करते रहे उद्धोषक बाबा साहब द्वारा बताए गए सिद्धांतों का बखान करते रहे बाबा साहब अम्बेडकर जयंती रथ नगर पंचायत अझुवा में प्रवेश करने पर तमाम राजनीतिक दल के लोग साथ हो लिए रैली नगर पंचायत अझुवा के वार्ड नं 3 शांती नगर समाजसेवी अशोक गौतम के आवास पर पहुंची जहां तमाम लोगों ने संविधान निमार्ता बाबा साहब भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा पर पुष्प माला चढ़ाकर जयकारा लगाया है।जन्मोत्सव बड़े से धूमधाम से मनाया गया जिसमें तमाम राजनीतिक दल के लोग शामिल नजर आए ।रैली का समापन भोला चौराहे के पास टेण्डरी तिराहे पर हुआ जहां वक्ताओं ने डा भीमराव अम्बेडकर के जीवन के विभिन्न पहलुओं को विस्तार से बखान किया है इस दौरान कुलदीप गौतम,श्रवण संदीप गौतम ,श्री बाबू,मुकेश गौतम,ग्राम प्रधान भैरायें गोपी मौर्य,टाण्डा प्रधान सतीश,शिव सिंह राजपूत प्रधान कानेमाई,वरिष्ठ समाजसेवी अम्बर भाई उर्फ सिद्दीक हसन,वरिष्ठ समाजसेवी ओमप्रकाश कुशवाहा ,वरिष्ठ समाजसेवी मंगल प्रसाद मौर्य,पंकज खोजी,संदीप गौतम सहित सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

कौशांबी प्रेसिडेंसी स्कूल एंड कॉलेज में मनाया गया डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जयंती...

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। भरवारी स्थित कौशांबी प्रेसीडेंसी स्कूल एंड कॉलेज में रिद्धि सिद्धि ग्रुप ऑफ इंस्टिट्यूशन के सभी कॉलेज के समस्त शिक्षक शिक्षिकाओं ने भारत के संविधान निर्माता चिंतक समाज सुधारक डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की जयंती बहुत धूमधाम से मनाई संस्थान की डायरेक्टर श्रीमती सीमा पवार ने सबसे पहले डॉक्टर अंबेडकर की फोटो पर माल्यार्पण करके उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किया साथ-साथ वहां उपस्थित समस्त शिक्षक शिक्षिकाओं ने भी पुष्प अर्पित करके उनकी जयंती मनाई संस्थान के चेयरमैन निवर्तमान विधायक चायल संजय कुमार गुप्ता ने अपने संदेश में कहा कि भीमराव अंबेडकर ने अपना पूरा जीवन सामाजिक बुराइयों जैसे छुआछूत और जातिवाद के खिलाफ संघर्ष में लगा दिया बाबासाहेब ने गरीब दलितों और शोषित के अधिकार के लिए जीवन भर संघर्ष किया श्री बाबा साहब का यह जन्मदिवस समानता दिवस और ज्ञान दिवस के रूप में मनाया जाता है क्योंकि बाबासाहेब ने जीवन भर समानता के लिए संघर्ष किया विश्व भर में उन्हें मानव अधिकार आंदोलन संविधान निमार्ता और उनकी प्रकांड विद्वता के लिए जाना जाता है संयुक्त राष्ट्र ने डॉक्टर भीमराव अंबेडकर को विश्व का प्रणेता कहकर उनका गौरव बढ़ाया संयुक्त राष्ट्र के 70 वर्ष के इतिहास में पहली बार किसी भारतीय व्यक्ति का जन्म दिवस मनाया गया था संस्थान की डायरेक्टर श्रीमती सीमा पवार ने अपने संदेश में कहा कि अंबेडकर ने भारत के संविधान को बनाने में अपना अहम योगदान दिया था और जीवन भर गरीबों के उत्थान के लिए संघर्ष करते रहे इस मौके पर एंडी कॉन्वेंट स्कूल एंड कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉक्टर मयंक मिश्रा, केपीएस भीटी प्रिंसिपल श्री सुशील त्रिपाठी, प्रकाश किडजी प्रिंसिपल शिवांगी केसरवानी, दीपक मिश्रा एवं रिद्धि सिद्धि ग्रुप ऑफ इंस्टिट्यूशन के समस्त शिक्षक एवं शिक्षिकाएं उपस्थित रही।

हर्सोल्लास के साथ मनाई गई डॉ आंबेडकर की 132वीं जयंती

अखंड भारत संदेश

करारी कौशाम्बी। करारी कस्बे में शुक्रवार को संविधान निमार्ता डॉ भीमराव आंबेडकर की १३२ वीं जयंती बड़े ही हर्सोल्लास के साथ मनाई गई। कार्यक्रम में लोगों ने बाबा साहब को पुष्प अर्पित कर नमन किया। साथ ही उनके आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया। करारी कस्बे के अंसारगंज मोहल्ले में संविधान के शिल्पकार भारत रत्न बाबा साहब डॉ आंबेडकर की 132 वीं जयंती बड़े ही धूमधाम से मनाई गई। कार्यक्रम की शुरूआत केक काटकर व डॉ आंबेडकर के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्वलित कर किया गया। इसके बाद लोगों ने माल्यार्पण व पुष्प अर्पित कर नमन किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि द्वाबा विकास एवं उत्थान समिति के सचिव परवेज रिजवी ने कहा कि डॉ आंबेडकर ने जीवन भर दलितों, शोषितों और पिछड़ों के उत्थान में लगा दिया। देश का कानून लिखकर सभी को समानता और शिक्षा का अधिकार दिया। सही मायने में डॉ आंबेडकर विश्व रत्न हैं। इस मौके पर सुनील चौधरी ने कहा कि बाबा साहब डॉ आंबेडकर के आदर्शों पर चलकर ही दलित समाज विकास के नए आयाम स्थापित कर सकता है। आज विश्व के सैकड़ों देशों में बाबा साहब ही जयंती मनाई जा रही है संविधान निर्माता के साथ साथ बाबा साहब महान विद्वान व महान अर्थशास्त्री और देश के प्रथम कानून मंत्री रह चुके हैं। हम सब उनके बताए तीन मूलमंत्र शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष करो पर चलकर सामाजिक आर्थिक और शैक्षणिक उत्थान कर सकते हैं। इसके अलावा कार्यक्रम को कांग्रेस जिलाध्यक्ष अरुण विद्यार्थी, एनएसयूआई जिलाध्यक्ष अमित द्विवेदी, मुकेश राव, शैलेश गौतम आदि ने भी संबोधित किया। इस मौके पर अवधेश गौतम, इंद्रजीत सरोज, हीरा लाल, बड़कू शर्मा सहित काफी संख्या में महिलाएं मौजूद रहीं।

सकिपा ने धूमधाम से मनाई बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर की जयंती

कौशाम्बी। समर्थ किसान पार्टी के तत्वावधान में 14 अप्रैल शुक्रवार को पार्टी के जिला कार्यालय मंझनपुर में बोधिसत्व डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की जयंती धूमधाम से मनाई गई। बाबा साहब की प्रतिमा पर पार्टी नेताओं द्वारा माल्यार्पण किया गया और प्रतीकात्मक रूप से लड्डू खिलाया गया। साथ ही बाबा साहब अमर रहे, अमर रहे के नारे लगाए गए। शुक्रवार 14 अप्रैल को समर्थ किसान पार्टी के जिला कार्यालय मंझनपुर में पार्टी के तत्वावधान में भारत रत्न बोधिसत्व बाबा साहब डॉ भीमराव आंबेडकर की 132 वी जयंती धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर पार्टी के कई कार्यकताओं एवं पदाधिकारियों ने उन्हें माल्यार्पण कर नमन किया। साथ ही उनके द्वारा किए गए कार्यों को याद किया। पार्टी नेता अजय सोनी ने कहा कि बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर दलितों, वंचितो, शोषितो और गरीबों के कल्याण के लिए हमेशा संघर्षरत रहे। उन्होंने मजदूरों, कामगारों और महिलाओं के हक में तमाम कानून बनाए। आगे कहा कि उनके द्वारा बनाए गए संविधान से देश चलता है। अजय सोनी ने कहा कि देश के करोड़ों लोगों के जीवन में बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर क्रांतिकारी परिवर्तन लाए। पूरा देश उनका हमेशा ऋणी रहेगा। इस अवसर पर प्रेमचंद्र केसरवानी, सुरजीत वर्मा, फूलचंद्र लोधी, डॉ अरविंद मौर्य, हीरालाल निर्मल, परिहार लोधी, शिवबाबू मौर्य, रामभवन सरोज,जयसिंह पटेल, गिरिजा शंकर गुप्ता, जुम्मन अली आदि लोग मौजूद रहे।

जन संपादकीय

दिशाहीन होता धार्मिक अतिवाद

धर्म की अवधारणा ही परोपकार, जनकल्याण, अहिंसा तथा मानवता को निरंतर आगे बढ़ाना है। जबकि अतिवाद किसी मान्यता विचार व अवधारणा को जबरन लागू करने की प्रक्रिया गत सोच है। अतिवाद ही किसी भी विचारधारा या किसी पंथ को अति होने तक ले जाना है। अतिवाद किसी भी धार्मिक और राजनीतिक विषय में ऐसी विचारधारा के लिए प्रयुक्त होता है जो समाज की मुख्यधारा के नजरिए को स्वीकार नहीं करती है। यह एक ऐसा राजनीतिक अथवा धार्मिक सिद्धांत है जो अमर्यादित नीति का पक्षधर है तथा इसमें मध्यस्थता की कोई गुंजाइश भी नही होतीहै। यह धर्म की ओर एवं कठोर मान्यताओं को लोगों पर जबरदस्ती थोपने का कार्य करता है, तथा हिंसा ,हत्या बलात्कार आदि को सर्व मान्य रूप से सही ठहराता है। भारत में धार्मिक विवाद का असर युवाओं पर सबसे ज्यादा पड़ता है क्योंकि युवा मन अपरिपक्व तथा किसी विचारधारा में ढला हुआ नहीं रहता और भारत में 65% 35 साल से कम उम्र के युवा निवासरत हैं। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है' स्वतंत्रता के बाद से भारत के संविधान में लोकतंत्र को सर्वोपरि स्थान दिया गया है' देश की भौगोलिक तथा जनसंख्यात्मक विशालता में कुछ तत्व सांप्रदायिक हिंसा एवं अराजकता के परिस्थितियों के कारण उत्पन्न हो सकतें हैं, पर भारतीय लोकतंत्र की महानता एवं विशालता है कि इससे संवैधानिक भारतीय लोकतंत्र को बहुत ज्यादा फर्क नहीं पड़ता, पर यह तय है कि सांप्रदायिक हिंसा एवं धार्मिक कट्टरता से लोकतंत्र की अवधारणा थोड़ी दिग्भ्रमित जरूर होती है पर इसकी मजबूती ना तो पहले कम हुई है और ना ही भविष्य में होने की कोई गुंजाइश ही है। हिंसा ,विवाद किसी भी बात का कोई हल नहीं। यह लोकतंत्र के लिए एक धब्बे के समान है। किसी भी देश में लोकतंत्र की आम धारणा आपसी सद्भाव और समभाव को लेकर आधारभूत रचनात्मक रूप से की गई है। विश्व के शांति प्रस्तावक भारत देश में हिंसा और हिंसक आंदोलन की कोई जगह नहीं एवं यह किसी धार्मिक, सामाजिक अथवा आर्थिक असहमति का परिणाम तो कतई नहीं हो सकती है।भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक,प्रजातांत्रिक स्वतंत्र राष्ट्र है।वैचारिक चिंतन, प्रभुद्धता लोकतंत्र के प्रमुख अवयव होते हैं, राष्ट्र के किसी भी नीति में सहमत और असहमत होना एक सामान्य प्रक्रिया, प्रतिक्रिया हो सकती है, और आम जनमानस का किसी मुद्दे पर आप सहमत होना भी एक सामान्य बात हो सकती है पर किन्ही भी परिस्थितियों में असहमति हिंसा के रूप में कतई बर्दाश्त के योग्य नहीं होनी चाहिए, विरोध का स्वरूप राष्ट्रीय संपत्ति की बबार्दी तो किसी भी काल और खंड में स्वीकार्य नहीं है। यह राष्ट्र के लिए घातक और विकास की अवधारणा को अवरुद्ध करने वाला आत्मघाती कदम है।आंदोलन का स्वरूप सदैव शांति पूर्वक हो तो राष्ट्र तथा आमजन के हित में ही होगा। आंदोलनकारियों को शायद यह गुमान नहीं है कि राष्ट्रीय सरकारी संपत्ति आपके द्वारा दिए गए टैक्स के रूप में रुपयों से ही निर्मित होती है, इसे नष्ट करके आप स्वयं अपनी संपत्ति का नुकसान ही कर रहे हैं। आजादी के बाद से भारत के समक्ष कई सामाजिक आर्थिक समस्याएं आई है। अक्सर सामाजिक क्षेत्र में समस्याओं ने अर्थव्यवस्था की उत्तरोत्तर प्रगति पर अवरोध खड़े किए हैं' देश की सामाजिक विषमताओं ने समाज में कई समस्याओं को जन्म दिया है एवं आर्थिक प्रगति पर विभिन्न सोपानों में लगाम लगाई है। भारतीय समाज में विषमता एवं विविधता भारत के लिए एक बड़ी समस्या बनकर सामने खड़ी है। स्वतंत्रता के पूर्व तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय समाज में विषमताएं भारत के लिए चुनौती बनकर वर्तमान में कई बाधाएं उत्पन्न कर रही हैं। आज जातिगत संघर्ष बढ़ गए हैं,जातिगत संघर्षों को राजनीतिक महत्वाकांक्षा ने बहुत क्लिष्ट बना दिया है। राजनीति सदैव महत्वाकांक्षा के बल पर जातिगत समीकरण को नए-नए रूप तथा आयाम देती आई है और सदैव समाज में वर्ग विभेद आर्थिक विभेद कर के अपना उल्लू सीधा करना मुख्य ध्येय बन चुका है। उच्च वर्ग तथा निम्न वर्ग सदैव सत्ता के संघर्ष के लिए न सिर्फ एक दूसरे का परस्पर विरोध करते है बल्कि शासन प्रशासन के विरोध में भी सदैव खड़े पाए गए हैं। सत्ता पाने की लालसा में जातीय संघर्ष, नक्सलवाद तेजी से समाज में पनपता जा रहा है। भारतीय परिपेक्ष में आज सिर्फ जाती ही नहीं धार्मिक महत्वाकांक्षा देश के समाज के समक्ष चुनौती बन गया है। भारत में हिंदू ,मुस्लिम,सिक्ख,इसाई जातीय संघर्ष ऐतिहासिक तौर पर अपनी जड़ें जमां चुका है, वर्तमान में मंदिर और मस्जिद के झगड़े देश में अशांत माहौल पैदा करने का एक बड़ा सबक बन चुके है।और यही वर्ग विभेद संघर्ष भारतीय आर्थिक विकास के बीच एक बड़ा अवरोध बनकर खड़ा है। पश्चिमी विद्वान भी कहते हैं कि भारत के राष्ट्र के रूप में विकसित होने में जाति एवं धर्म ही सबसे बड़ी बाधाएं हैं जिन्हें दूर करना सर्वाधिक कठिन कार्य है क्योंकि इसकी जड़ें भारत के स्वतंत्रता के पूर्व से देश में गहराई लिए हुए हैं। जातीय वर्ग संघर्ष और भाषाई विवाद ऐसा मुद्दा रहा है जिससे लगभग एक शताब्दी तक भारत आक्रांत रहा है। आजादी के बाद से ही भाषा विवाद को लेकर कई आंदोलन हुए खासकर दक्षिण भारत राज्यों द्वारा हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने एवं देश पर हिंदी थोपे जाने के विरोध में विरोध प्रदर्शनों को प्रोत्साहित किया गया। आज भी विभिन्न राज्यों में भाषाई विवाद एक ज्वलंत एवं संवेदनशील मुद्दा बना हुआ है, चाहे वह बंगाल हो, तमिलनाडु हो, आंध्र प्रदेश हो, उड़ीसा और महाराष्ट्र में भी भाषाई विवाद अलग-अलग स्तर पर सतह
पर पाए गए हैं। समान सिविल संहिता को लेकर बहुसंख्यक संविधान में आक्रोश है दूसरी तरफ अल्पसंख्यक समुदाय इसलिए डरा हुआ है कि कहीं उसकी अपनी अस्मिता एवं पहचान अस्तित्व हीन ना हो जाए। स्वतंत्रता के बाद से यह विकास की मूल धारणा थी कि पंचवर्षीय योजनाओं में वर्ग विहीन समाज में लोकतांत्रिक एवं धर्मनिरपेक्ष तरीके से समाज का आर्थिक विकास तथा रोजगार के साधन उपलब्ध हो सकेंगे। पर स्वतंत्रता के 75 साल के बाद भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में वर्ग विभेद भाषाई विवाद ने अभी भी आर्थिक विकास में कई बाधाएं उत्पन्न की है।

आयोग, आरक्षण और बाबा साहेब आंबेडकर

प्रवीण गुगनानी

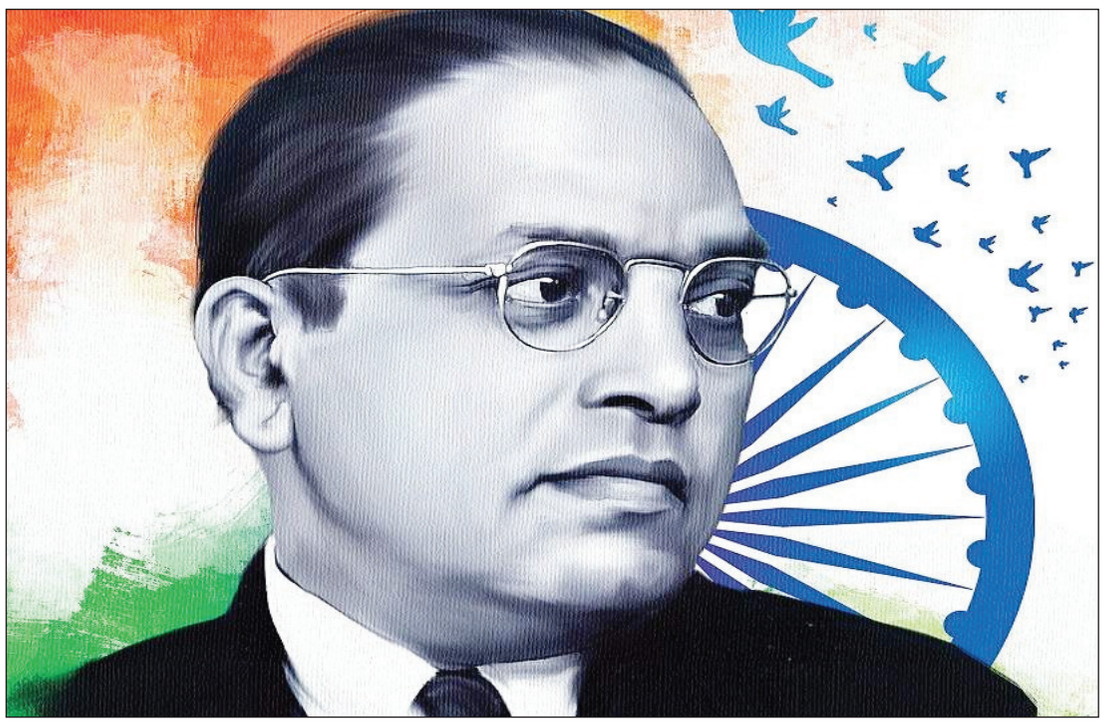

एक गोंडी मुहावरा है - 'बुच्च बुच्च आयाना कव्वीते पालकी रेंगिना'। इसका अर्थ होता है आगे-आगे होना किंतु अपने मूल विषय पर कुछ भी ध्यान न देना। रंगनाथ मिश्र आयोग पर यह मुहावरा सटीक बैठता है। रंगनाथ मिश्र आयोग के बाद मोदी सरकार ने केजी बालकृष्ण आयोग का गठन कर आरक्षण के दुरुपयोग को जांचने, मापने और थामने का संवेदनशील प्रयास किया है। रंगनाथ मिश्र आयोग के माध्यम से कांग्रेस और मनमोहन सरकार ने अपनी चिरकालिक तुष्टिकरण की नीति को ही आगे बढ़ाया है। साथ ही मुस्लिम समाज को भी बैसाखियों पर चलाने और आत्मनिर्भर न होने देकर उसे मात्र एक वोट बैंक बनाए रखने की अनैतिक राजनीति जारी रखी थी। केजी बालकृष्ण आयोग से आशा है कि वह बाबासाहेब की भावना के अनुरूप भारत में आरक्षण के अंतर्तत्व, अंतर्भाव व अंतरात्मा को बनाए रखने में सार्थक सिद्ध होगा।

भाजपा एससी कोटे में दलित, मुस्लिम और दलित ईसाइयों को शामिल करने का सतत और स्पष्ट विरोध करती आई है। संविधान के अनुसार हिंदू, सिख या बौद्ध धर्म के चिह्नित लोगों को ही अनुसूचित जाति का दर्जा मिलता है। भाजपा का मानना है कि इससे धर्म परिवर्तन और तेजी से बढ़ेगा। मुस्लिम और ईसाई धर्म के लोग भी इस दर्जे की मांग कर रहे हैं। आरक्षण की व्यवस्था का लाभ उसके मूल हितग्राही को न मिलने से क्या स्थितियां बन रही हैं? आरक्षण का अधिकतम लाभ समाज के छद्म दलित, अवसरवादी दलित और अपने ही दलित समाज को उपेक्षा और हास्य की दृष्टि से देखने वाले तथाकथित दलितों को मिलने से दलित व जनजातीय समाज पर कितना विषाक्त प्रभाव पड़ रहा है या पड़ेगा ? इन दुष्प्रभावों को हमारा समाज प्रत्यक्ष देख रहा है। वस्तुतः आंबेडकर के कार्यों को, स्वप्नों को, सोच को यदि हम यथार्थ के धरातल पर उतारना चाहते हैं तो हमें उनके सम्पूर्ण विचार, लेखन और रचना संसार के मूल तत्व और सत्व को समझना होगा। आंबेडकर केवल आरक्षण नहीं अपितु आरक्षण के वैज्ञानिकीकरण, युक्तियुक्त करण और आरक्षण के सामयिकी करण के घोर पक्षधर थे। वह आरक्षण ही क्या जिसका लाभ सर्वाधिक दीन हीन हितग्राही को मिल न पाए और उसमें लीकेजेस इतने हो जाएं कि आंबेडकर का मूल विचार और लक्ष्य ही धराशायी हो जाए। कितनी बड़ी विडंबना है कि आज आरक्षण की अस्सी प्रतिशत सुविधाओं का लाभ ऐसे 20 प्रतिशत नकली अनुसूचित और अनुसूचित जनजातीय उठा रहें हैं जो लोभ लालच में इस देश से बाहर के धर्म में कन्वर्ट हो चुके हैं। ये लोग दलित समाज को मिलने वाले आरक्षण का शोषण और दोहन कर रहे हैं। ये लोग अपने समाज के अन्य लोगों से रोटी-बेटी का व्यवहार भी नहीं रखते। यह मतांतरित अनुसूचित जाति और जनजातीय लोग अपने ही लोगों के प्रति घृणा, निकृष्टता और हास्य व्यंग्य का भाव रखते हैं। यह 20 प्रतिशत कन्वर्टेड ईसाई और मुस्लिम अपने कॉकस से, चतुराई से, धन बल से व अपनी राजनीतिक शक्ति से आरक्षण की सुविधाओं को अपने कन्वर्टेड कुनबे तक सीमित किए रहते हैं। आज यदि बाबासाहेब जीवित होते तो विदेशी धर्म को अपनाने वाले इन लोगों की आरक्षण सुविधाएं तत्काल समाप्त कर देते। अब देश के नीति निर्धारकों को सोचना होगा की मुस्लिम समाज को ओबीसी आरक्षण दिया जाना कैसे उचित है? वस्तुतः ओबीसी आरक्षण का ताना बाना ही पिछड़ी हिंदू जातियों के उन्नयन के लिए बुना गया था। इस्लाम की ओर से सदैव कहा जाता है कि उनके धर्म में जाति व्यवस्था नहीं है, यह भी कहा जाता है कि इस्लाम में हर मुसलमान बराबर है। जब उनमें जाति व्यवस्था ही नहीं है, सब बराबर हैं तो पिछड़ी जातियों को मिलने वाला आरक्षण उन्हें क्यों मिलना चाहिए? जाति व्यवस्था मुक्त होने का दंभ ईसाई धर्म भी भरता है, जब जाति ही नहीं है, उपेक्षा और भेदभाव ही नहीं है तो जातिगत आरक्षण का लाभ क्यों? वस्तुतः यह बीमारी तुष्टिकरण की देन है। कितनी बड़ी विसंगति है कि अभी हाल ही वर्षों तक भारत में हिंदुओं पर 800 वर्षों तक शासन करने वाले, उस शासन में विशेष नागरिक का दर्जा प्राप्त करने वाले, हमारा दमन करने वाले मुसलमानों की नब्बे प्रतिशत जनसंख्या ओबीसी में सम्मिलित होकर आरक्षण का अवैध लाभ उठाना चाहती है? स्मरण रहे कि शेख, सैय्यद, मुगल पठान को छोड़कर बाकी सभी मुस्लिम जातियां ओबीसी में आती हैं। मुस्लिम समाज को उच्च सामाजिक स्थान मिलता थ। आठ सौ वर्षों तक हिंदुओं के मुकाबले कम टैक्स देना पड़ता था, इन्हें शासन से बहुत सी अतिरिक्त सुविधाएं भी मिलती थीं तो वो पिछड़े कैसे हो गए?! क्या शासक वर्ग कभी पिछड़ा हो सकता है। देश में तुष्टिकरण की जनक कांग्रेस ने 2007- 2008 में एक विशेष विधेयक पास कर सुनिश्चित किया कि हिंदू धर्म से कनवर्जन कर गए ईसाई और ओबीसी ईसाई को भी आरक्षण का लाभ मिलेगा। आरक्षण का अनीतियुक्त वितरण हमारे समाज को रोगी बना रहा है। खतरनाक स्वप्न देखने वाले अनियंत्रित गति से भयविहीन होकर धर्म कनवर्जन के कार्य में लगे हुए हैं। आरक्षण कानून की धज्जियां उड़ रही हैं। वस्तुतः केजी बालकृष्ण आयोग से आशा यही है कि वह बाबा साहेब की आंखें बनकर इस समूची स्थिति की जांच करेगा। यदि आपने धर्म परिवर्तन कर लिया है तो आपको अनुच्छेद-341 से आरक्षण का लाभ क्यों मिले? यह प्रश्न अब बाबासाहेब आंबेडकर की भावनाओं को लागू करने या खारिज करने का प्रश्न है। मतांतरित एसटी एससी को आरक्षण के लाभ के इस विवाद से अल्पसंख्यकों की परिभाषा का नया विमर्श उपजा है। भारत में धर्म के आधार पर अलग सिविल कानून हैं। मूल वंचित वर्ग को वांछित लाभ नहीं मिलना और मुस्लिम और ईसाई को आरक्षण का अनुचित लाभ मिलने और हिंदू धर्म के दलितों को सुविधाओं में हानि होने से देश में विवाद व असमानता बढ़ रही है। कई राज्य धर्म परिवर्तन के खिलाफ कानून बना भी रहे हैं। धर्मांतरण के बाद आरक्षण का लाभ मिलने की अनुमति मिली, तो धर्म परिवर्तन के सामाजिक अपराध को तीव्र गति मिलेगी। देश, समाज और कानून को धोखा देने के लिए धर्म परिवर्तन के बाद भी लोग अपना नाम नहीं बदलते और आरक्षण का लाभ लेते रहते हैं। यह समाज की आंखों में मिर्च झोंकने जैसा है। वर्तमान में ऐसे मामलों के लिए साफ कानूनी प्रावधान नहीं हैं। आयोग की रिपोर्ट के बाद ऐसी अनेक कानूनी विसंगतियों पर समाज, सरकार, संसद और सुप्रीम कोर्ट में नए सिरे से मंथन होकर कुछ युक्तियुक्त स्थिति बनेगी। वर्तमान में आरक्षण की सुविधा में नए नए सुराख हो गए हैं। इस संदर्भ में समाज विज्ञान की दृष्टि से जांच, अध्ययन और समस्या का निदान एकमात्र मार्ग है। केजी बालकृष्ण आयोग इस मार्ग का शिल्पी सिद्ध होगा यही देश को विश्वास है।

(लेखक, विदेश मंत्रालय में राजभाषा सलाहकार हैं।)

राजस्थान विधानसभा चुनाव का खेल

रमेश सर्राफ

राजस्थान विधानसभा के चुनाव होने में सिर्फ सात महीने का समय रह गया है। ऐसे में अब सभी राजनीतिक दल अपने संगठन को मजबूत बना कर चुनावी व्यूह रचना बनाने में लग गए हैं। जहां सत्तारूढ़ कांग्रेस पार्टी के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत का मानना है कि उनकी लोक हितकारी योजनाओं से इस बार के चुनाव में हर बार सत्ता बदलने का रिवाज बदल जाएगा। वहीं भाजपा सहित सभी विपक्षी दलों के नेताओं का मानना है कि प्रदेश की जनता गहलोत सरकार को हटाकर राज बदलने को तैयार बैठी है। वोट पड़ेंगे तब राज बदल जाएगा।

राजस्थान में सबसे पहले आम आदमी पार्टी ने कोटा के नवीन पालीवाल को प्रदेश अध्यक्ष बनाकर अपने संगठन को मजबूत करने की दिशा में काम करना प्रारंभ कर दिया है। आप ने विधानसभा चुनाव का प्रभारी राज्यसभा सांसद व पार्टी के राष्ट्रीय संगठन महामंत्री डॉ संदीप पाठक को पहले ही नियुक्त कर रखा है। दिल्ली के द्वारका से विधायक विनय मिश्रा को राजस्थान का प्रभारी बनाया गया है। इसके साथ ही पार्टी ने दिल्ली, पंजाब और गुजरात के 7 विधायकों अमनदीप सिंह गोल्डी, नरेश यादव, चेतर वसावा, नरेंद्र पाल सिंह सवाना, हेमंत खावा, शिवचरण गोयल और मुकेश अहलावत को सह प्रभारी लगाया है। पार्टी कार्यकताओं को उत्साहित करने के लिए दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल व पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान जयपुर में रोड शो करके एक जनसभा को भी संबोधित कर चुके हैं। हालांकि पिछले विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी का ट्रैक रिकॉर्ड बहुत ही खराब रहा था। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष रहे रामपाल जाट को 628 वोट ही मिल पाए थे। यही हाल अन्य प्रत्याशियों का रहा था। 2018 के चुनाव में आप को प्रदेश में 0.38 प्रतिशत वोट मिले थे। हालांकि अब पार्टी के नेता प्रदेश में अगली सरकार बनाने का दावा कर रहें है। राजस्थान में मुख्य विपक्षी दल भाजपा भी विधानसभा चुनाव की तैयारी करने में कोई कसर नहीं छोड़ रही है। पिछले विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने 1.22 प्रतिशत यानी एक लाख 77 हजार 699 वोट अधिक प्राप्त कर 79 सीट अधिक जीत ली थी। वही इतने वोटों के अंतर पर भाजपा की 90 सीटें कम हो गई थी। जिससे भाजपा सत्ता से बाहर हो गई थी। अपनी पिछले विधानसभा चुनावों की कमी को दूर करने के लिए भाजपा अभी से जुट गई है। आगामी विधानसभा चुनाव को देखते हुए भाजपा प्रदेश की राजनीति में सोशल इंजीनियरिंग के फामूर्ले पर काम कर रही है। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष पद पर ब्राह्मण समाज के चंद्रप्रकाश जोशी (सीपी जोशी) को नियुक्त किया गया है। सीपी जोशी चित्तौड़गढ़ से दूसरी बार लोकसभा सदस्य हैं। जयपुर में कुछ दिनों पूर्व ही ब्राह्मण समाज ने लाखों लागों को एकत्रित कर एक विशाल सम्मेलन का आयोजन किया था। जिसमें ब्राह्मण समाज ने प्रदेश की सभी पार्टियों से उनके समाज को सत्ता में अधिक भागीदारी देने की मांग की थी। उस सम्मेलन के कुछ दिनों बाद ही भाजपा ने सीपी जोशी की प्रदेश अध्यक्ष के रूप में ताजपोशी कर दी। भाजपा ने राजपूत समाज के सातवीं बार विधायक बने राजेंद्र राठौड़ को विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष नियुक्त किया है। जबकि प्रदेश अध्यक्ष पद से हटाए गए डॉक्टर सतीश पूनिया को विधानसभा में उपनेता प्रतिपक्ष बना कर जाट समाज को भी साधने का काम किया है। सतीश पूनिया पहली बार आमेर से विधायक बने हैं। इसलिए उन्हें उपनेता का पद ही मिल पाया है। चर्चा है कि मीणा समाज के राज्यसभा सदस्य डॉक्टर किरोड़ीलाल मीणा को केंद्र में मंत्री बनाया जा सकता है। राजपूत समाज के गजेंद्रसिंह शेखावत, यादव (अहीर) समाज के डॉक्टर भूपेंद्र यादव, ब्राह्मण समाज के अश्विनी वैष्णव केंद्र सरकार में कैबिनेट मंत्री हैं। जाट समाज के कैलाश चौधरी, अनुसूचित जाति के अर्जुनराम मेघवाल केंद्र सरकार में राज्य मंत्री हैं। बनिया समाज के ओम बिरला लोकसभा अध्यक्ष हैं। वही गुलाबचंद कटारिया को असम का राज्यपाल बनाया गया है। झुंझुनू से सांसद, केंद्र सरकार में उप मंत्री, अजमेर जिले के किशनगढ़ से विधायक व पश्चिम बंगाल के राज्यपाल रहे जगदीप धनखड़ भी उपराष्ट्रपति पद पर हैं। गुर्जर समाज की अलका गुर्जर भाजपा की राष्ट्रीय सचिव है। ओमप्रकाश माथुर केंद्रीय चुनाव समिति के सदस्य हैं। अभी तक पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे या उनके किसी समर्थक को भाजपा चुनाव अभियान समिति का संयोजक बनाने कि चर्चा चल रही थी। मगर कांग्रेस नेता सचिन पायलट द्वारा उनपर भ्रष्टाचार के आरोप लगाने के बाद पार्टी में उनकी भूमिका कम हो सकती है। ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन के राष्ट्रीय अध्यक्ष असादुदीन ओवैसी भी प्रदेश में अपनी पार्टी संगठन को मजबूत करने में लगे हुये हैं। राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी का पूरा संगठन पार्टी अध्यक्ष व नागौर सांसद हनुमान बेनीवाल के इर्द गिर्द ही घूमता रहता है। बेनीवाल ने हाल ही में दिल्ली में अपनी पुत्री का जन्मदिन मनाया था। जिसमें दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल व पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान शामिल हुये थे। कार्यक्रम में सभी दलों के बड़े नेता आये थे। कांग्रेस की चुनावी कमान पूरी तरह मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने संभाल रखी है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा भी संगठन के काम में लगे हैं। उन्हें अध्यक्ष बने तीन साल होने वाले हैं। ऐसे में चर्चा चल रही है कि प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर किसी अन्य नेता को नियुक्त किया जा सकता है। यदि प्रदेश अध्यक्ष बदला जाता है तो मुख्यमंत्री अशोक गहलोत का पूरा प्रयास रहेगा कि उनके समर्थक महेश जोशी, महेंद्र चौधरी, नरेंद्र बुडानिया, लालचंद कटारिया, रघु शर्मा में से किसी को अध्यक्ष बनाया जाए। ताकि चुनाव में उनके मन मुताबिक टिकटों का वितरण हो सके। कांग्रेस के 400 में से 367 ब्लॉक अध्यक्षों की तो नियुक्तियां हो चुकी है। मगर अधिकांश जिला अध्यक्षों के पद लंबे समय से खाली पड़े हैं। इस कारण नीचे के स्तर पर संगठन पूरी तरह सक्रिय नहीं हो पा रहा है। हालांकि प्रदेश अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने हाल ही में 3 विधायकों अमित चाचान, इंद्राज सिंह गुर्जर, प्रशांत बैरवा सहित कुल 8 लोगों को पार्टी का प्रवक्ता नियुक्त किया है। वही सात लोगों को मीडिया पैनलिस्ट और तीन लोगों को मीडिया कोऑर्डिनेटर बनाया गया है। कांग्रेस में 25 सितंबर 2022 की घटना में दोषी नेताओं पर अभी तक कार्यवाही नहीं होने से भी सचिन पायलट खासे नाराज बताये जा रहे हैं। सचिन पायलट ने जयपुर में एक दिन का उपवास रखकर अपनी ही सरकार को कटघरे में खड़ा कर दिया है। पायलट ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे पर मिलीभगत का खेल खेलने का आरोप लगाया है। पायलट के अनशन को रोकने के लिए कांग्रेस आलाकमान ने बहुत दबाव बनाया था मगर पायलट अनशन करके ही माने। हालांकि कांग्रेस प्रभारी सुखजिंदर सिंह रंधावा ने पायलट के अनशन को पार्टी विरोधी गतिविधि घोषित कर दिया था। मगर पायलट के खिलाफ अभी तक अनुशासनात्मक कार्यवाही करने की किसी ने हिम्मत नहीं दिखाई है। अंदरखाने पायलट को हनुमान बेनीवाल सहित आम आदमी पार्टी का भी समर्थन मिल रहा है। कांग्रेस आलाकमान को पता है कि यदि पायलट के खिलाफ किसी तरह की अनुशासनात्मक कार्यवाही करेंगे तो राजस्थान की स्थिति भी पंजाब की तरह हो सकती है। कुल मिलाकर चुनावी दौर में कांग्रेस पार्टी आपसी गुटबाजी की शिकार हो गई है जिसका खामियाजा उन्हें अगले विधानसभा चुनाव में उठाना पड़ेगा। **(लेखक राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त स्वतंत्र पत्रकार है।**

डॉ. आंबेडकर ने कहा था- इस्लाम का चरित्र लोकतंत्र विरोधी

कुमार जितेन्द्र

डॉ. भीमराव आंबेडकर की ख्याति इसलिए अधिक है कि भारतीय संविधान के निर्माण में उनकी एक प्रमुख भूमिका थी। ऐसे में उन्हें संविधान निमार्ता की उपाधि से विभूषित किया गया। आज उनकी 133वीं जयंती है। वस्तुतः वे एक महान चिंतक, समाज सुधारक, कानून विशेषज्ञ, आर्थिक विश्लेषक, वक्ता, लेखक और संपादक भी थे। उन्होंने हर विषय पर गहन अध्ययन भी किया और उस संबंध में अपने स्पष्ट विचार भी लिखे और भाषण में बोले। उनका लेखन बहुत व्यापक है। डॉ. आंबेडकर की दृष्टि कितनी पारखी थी, विश्लेषण क्षमता कितनी गहरी थी और वे उसे कितना साफगोई से रखते थे, इसे यदि लोकतंत्र की कसौटी पर कसें तो पाएंगे कि वह सार्वकालिक सोच रखते थे। यदि आज वैश्विक इस्लामी सत्ताओं में जाएं और वहां लोकतंत्र खोजें तो पाएंगे कि इस्लामी विचारधारा में लोकतंत्र के लिए बहुत स्थान नहीं है। मध्य पूर्व के इस्लामी देश, जहां सल्तनत ही रहीं, उन देशों को छोड़ भी दें तो पड़ोसी अफगानिस्तान और पाकिस्तान को ही देख लें तो समझ जाएंगे कि वहां लोकतंत्र क्यों जड़ें नहीं जमा पा रहा है। अफगानिस्तान तो तालिबान के हाथ चला गया और पाकिस्तान का लोकतंत्र हिचकोले खाता हुआ कई बार सेना के बूटों तले कुचला गया है और आगे भी उसकी संभावना बनी हुई है। ऐसे में डॉ. आंबेडकर का इस्लाम और लोकतंत्र पर विश्लेषण आईना दिखाने का काम करता है

डॉ. आंबेडकर लिखते हैं ह्यह्यमुस्लिम राजनीति कितनी विकृत है यह भारतीय राज्यों में हुए कुल राजनीतिक सुधारों और मुस्लिम नेताओं के तौर तरीकों से ही देखा जा सकता है । मुसलमानों की महत्वपूर्ण चिंता लोकतंत्र नहीं है । महत्वपूर्ण चिंता यह है कि बहुमत शासन वाला लोकतंत्र हिंदुओं के खिलाफ मुसलमानों के संघर्ष को किस प्रकार प्रभावित करता है ? क्या यह उनको शक्तिशाली बनाएगा या कमजोर ? यदि लोकतंत्र उन्हें कमजोर करेगा तो उनके पास लोकतंत्र नहीं रहेगा । मुस्लिम राज्य सड़ी-गली व्यवस्था ज्यादा पसंद करेंगे बनिस्पत एक अच्छे तंत्र के, क्योंकि वे भी हिंदुओं के मुद्दों में ही ज्यादा रुचि रखते हैं । मुस्लिम समुदाय में जो राजनीतिक और सामाजिक स्थिरता आई है उसका एक और एकमात्र कारण है मुसलमान सोचते हैं कि हिंदुओं और मुसलमानों को एक समान संघर्ष करना चाहिए । हिंदू मुसलमानों के ऊपर अपना प्रभुत्व स्थापित करना चाहते हैं और मुसलमान फिर से राज करने वाले समुदाय की अपनी ऐतिहासिक स्थिति को देखना चाहते हैं । तब इस संघर्ष में मजबूत ही जीतेगा, और अपनी शक्ति बढाएगा । वे ऐसी किसी भी चीज के बारे में नहीं सोचेंगे जो उनकी पद प्रतिष्ठा में कोई कमी लाने वाला हो । (डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर राइटिंग्स एंड स्पीचेज, पृष्ठ संख्या 236- 237) डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर राइटिंग्स एंड स्पीचेज के विभिन्न खंडों में यदि इस्लाम, लोकतंत्र और संविधान से जुड़े विषयों पर डॉ. आंबेडकर के विचार पढ़ेंगे तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि देश में इस समय जो वैचारिक वातावरण बनाने की कोशिश की जा रही है, उसके पीछे की सोच क्या है। जो लोग आज खतरे में लोकतंत्र की बात जोर-शोर से उठा रहे हैं, वे किस सोच से प्रभावित हैं। डॉ. आंबेडकर लिखते हैं मुसलमानों का दिमाग किस तरह काम करता है और किन कारणों से यह प्रभावित होता है यह तब स्पष्ट होगा जब हम इस्लाम के उन बुनियादी सिद्धांतों को, जो मुस्लिम राजनीति पर हावी हैं और मुसलमानों द्वारा भारतीय राजनीति में पैदा किए गए मसलों को भी ध्यानपूर्वक देखेंगे। अन्य सभी सिद्धांतों और उसूलों के साथ इस्लाम का यह सबसे बड़ा उसूल है कि यदि कोई देश मुस्लिम शासन के अधीन नहीं है, जहां कहीं भी यदि चाहे मुस्लिम कानून और उस सरजमीं के कानून के बीच संघर्ष हो, तो मुसलमानों को जमीन या देश के कानून की खिलाफत कर अपने मजहब अर्थात मुस्लिम कानून का पालन करना चाहिए। (डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर राइटिंग्स एंड स्पीचेज पृष्ठ संख्या 292)

शादी का कार्ड

डॉ. सुरेश कुमार

वैसे शादी के कार्ड में होता ही क्या है? ज्यादा से ज्यादा कार्ड के आरंभ में गणेश जी से संबंधी कोई श्लोक, वर-वधू के नाम, उनके माता-पिता के नाम, दिनांक, समय, विवाह स्थल और अंत में बंधुजनों के नाम आदि। इससे ज्यादा क्या लिखा जाता है? लेकिन महामारियों के चलते शादी के कार्ड की रूपरेखा ही बदल गयी है। अब भविष्य में बनने वाले शादी के कार्ड अजीबो-गरीब होंगे। पहले जहाँ लिखा होता था कि आप सपरिवार विवाह में उपस्थित होकर नव दंपत्ति को आशीर्वाद प्रदान करें, वहीं आगे चलकर लिखा होगा कि एक परिवार से केवल एक ही सदस्य विवाहोत्सव में भाग ले सकता है। साफ-सफाई का ध्यान रखें। किसी भी सूरत में मुँह से मास्क न हटाएँ। बेवजह में किसी भी चीज को छूने का प्रयास न करें। नवदंपत्ति से चिपक-चिपककर फोटो खिंचवाने की कोशिश न करें। जहाँ तक हो सके दूर से ही फोटो खिंचवाकर चलते बनें। हर जगह कम-से-कम दो मीटर की सामाजिक दूरी बनाए रखें। काउंटरों की सेवा का पूरा-पूरा लाभ उठाएँ और उनका भरपूर इस्तेमाल करें। उदाहरण के लिए काउंटर-1 पर राशि उपहार, काउंटर-2 पर वस्तु रूपी उपहार, काउंटर-3 पर ऑनलाइन भुगतान जैसे- गूगल पे, पेटीएम, रूपे, क्रेडिट कार्ड की सहायता से भेटंस्वरूप दी जाने वाली राशि जमा कराएँ।

काउंटर-4 पर पुष्पगुच्छ, पुष्पहार आदि के स्थान पर राशि भुगतान करें और काउंटर-5 पर भुगतान की गयी राशि की पावती पर्ची दिखाकर भोजन का टोकन प्राप्त करें। इस टोकन की सहायता से पूरे परिवार के लिए पैक्ड भोजन प्राप्त कर सकेंगें। इसे आप बड़े इत्मिनान से अपने घर ले जाकर सपरिवार बैठकर खा सकते हैं। शादी के कार्ड में अंत में अतिथियों को बुलाने का कारण लिखा होगा। इसमें यह स्पष्ट रूप से उल्लेखित होगा कि हम उन्हीं अतिथियों को बुला रहे हैं जिनके विवाह में जाकर हमने उपहार अथवा राशि भेंट की थी। इस आमंत्रण के बहाने हम अपने रुपये-पैसे वसूलना चाहते हैं। विशेष सूचना के अंतर्गत अतिथियों से आग्रह किया जाएगा कि वे अपने साथ अपने-अपने मास्क और सेनिटाइजर्स लाना न भूलें।

शादी के कार्ड का उद्देश्य पूरा करने तथा आदर्श प्रस्तुत करने के लिए नवदंपत्ति सामाजिक दूरी बनाते हुए डंडियों की सहायता से एक-दूसरे को पुष्पमालाएँ पहनायेंगे।

डॉ अम्बेडकर की 132वीं जयंती लोगों ने धूमधाम से मनाई

एसपी-सीएमएस समेत जिले में भव्य ढंग से मनी अम्बेडकर जयंती

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिले में धूमधाम से डॉ भीमराव अम्बेडकर की 132वीं जयंती मनाई गई। भारी तामझांम से जुलूस निकालकर अम्बेडकर वादियों ने जयंती मनाई। अम्बेडकर वादियों को जूस व शरबत पिलाकर समाजसेवी रामबाबू गुप्ता ने स्वागत किया।

शुक्रवार को पुलिस अधीक्षक कार्यालय में संविधान निमार्ता बाबा साहब डॉ भीमराव अम्बेडकर की 132वीं जयंती पर पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृन्दा शुक्ला ने बाबा साहब के चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि दी। इस मौके पर सीओ प्रज्ञान अनुज कुमार मिश्र, प्रतिसार निरीक्षक सुमेर सिंह, प्रभारी एलआईयू सूर्यकान्त अरुण राय, प्रभारी चुनाव सेल प्रदीप यादव, वाचक परितोष दीक्षित, प्रधान लिपिक अनुज पाण्डेय आदि मौजूद रहे। पुलिस अधीक्षक ने डॉ अम्बेडकर के जीवन एवं कृतित्व पर रोशनी डाली। इसी क्रम में जिले के सभी थानों में अम्बेडकर जयंती मनाई गई। जिला अस्पताल में सीएमएस डॉ सुधीर शर्मा ने अम्बेडकर जयंती पर डॉ अम्बेडकर के चित्र पर माल्यार्पण कर जयंती मनाई। इस मौके पर जिला अस्पताल के सभी डॉक्टर व कर्मचारी मौजूद रहे। आम आदमी पार्टी जिलाध्यक्ष संतोषीलाल शुक्ला ने काली देवी मन्दिर शंकर बाजार में अम्बेडकर जयंती मनाई। इस मौके पर प्रेमचन्द्र पटेल, अंकित सिंह पटेल, संजय करवरिया आदि मौजूद रहे। भाकपा जिला सचिव का अमित यादव ने बाबा साहब की जयंती पर कहा कि अपने पूरे जीवनकाल में जाति व्यवस्था, छुआछूत, पाखंड और अन्याय को समाप्त करने की लडाई लडते रहे। इस मौके पर का महेन्द्र प्रताप, का चन्द्रपाल पाल, शारदा यादव आदि मौजूद रहे। माकपा जिला कार्यालय उप्र किसान सभा के राज्यकारिणी सदस्य का रुद्र प्रसाद मिश्र ने डॉ अम्बेडकर की 132वीं जयंती पर उनके चित्र पर माल्यार्पण कर कहा कि संविधान निमार्ता बाबा साहब के विचारों को समझिये, उन्हें पूजिये मत, उन्हें पढिये और उनके अनुसार कार्य करें। इस मौके पर काशीमोहन यादव, अजय पटेल, अभिलाषा, मिथलेश, पूनम, लल्लूराम तिवारी, सोनम, प्रतिभा, रानी आदि मौजूद रहे। सपा जिला कार्यालय में संविधान निमार्ता/भारत रत्न डॉ भीमराव अम्बेडकर की 132वीं जयंती पर उनके चित्र पर सपा जिलाध्यक्ष शिवशंकर सिंह यादव ने माल्यार्पण कर गोष्ठी की। गोष्ठी में कहा कि बाबा साहब ने समता स्वतंत्रता बंधुत्व का अधिकार संविधान में दिया है। गोष्ठी में रामचन्द्र वर्मा, विधायक अनिल प्रधान, आरके कुरील, कैलाश बौद्ध, प्रेमचन्द्र वर्मा, रामप्रसाद वर्मा, गौरीशंकर सोनी, साहबलाल द्विवेदी, सुभाष पटेल समेत तमाम लोग मौजूद रहे। डॉ भीमराव अम्बेडकर जयंती समिति के अध्यक्ष गया प्रसाद बौद्ध ने जिले में जुलूस निकालकर धूमधाम से अम्बेडकर जयंती मनाई। इस मौके पर समाजसेवी रामबाबू गुप्ता आदि ने समाज में फैली कुरीतियों को दूर करने का आवाहन किया।

सामाजिक न्याय सप्ताह अभियान के तहत बाबा साहब आम्बेडकर की मनाई गई जयंती

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट । भारतीय जनता पार्टी चित्रकूट के द्वारा सामाजिक न्याय सप्ताह अभियान के तहत शुक्रवार को जिले में बाबासाहब आम्बेडकर जी की जयंती के उपलक्ष्य पर पुष्पांजली कार्यक्रम का आयोजन सभी मण्डलों के सभी बूथों में किया गया । जयंती कार्यक्रम में पार्टी कार्यकताओं ने ज्यादा से ज्यादा संख्या में सहभागिता की ।तरांव गांव में जिला प्रभारी व प्रदेश उपाध्यक्ष देवेश कोरी जी के मुख्यातिथ्य, जिलाध्यक्ष चन्द्र प्रकाश खरे जी की अध्यक्षता, सांसद आर के पटेल जी, जिला पंचायत अध्यक्ष अशोक जाटव जी , गठबंधन के साथी अपना दल के मऊ मानिकपुर विधायक अविनाश चन्द्र द्विवेदी जी, ब्लॉक प्रमुख सुशील द्विवेदी जी, जिला महामंत्री आलोक पाण्डेय जी की गरिमामय उपस्थिति में संगोष्ठी का आयोजन किया गया ।साथ ही गनींवा मण्डल में मण्डल अध्यक्ष सुशील द्विवेदी जी, रामनगर मंडल में अध्यक्ष श्री प्रदीप सिंह जी , मऊ मण्डल में मंडल अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश मिश्र जी, ऐंचवारा में मंडल अध्यक्ष श्री आशीष पाण्डेय जी, भरतकूप में श्री सच्चिदानंद गर्ग जी, शिवरामपुर मण्डल में श्री श्रवण पटेल जी , पहाडी मे श्री विनोद पाण्डेय जी, सरधुवा मे श्री योगेन्द्र सिंह जी के नेतृत्व व मार्गदर्शन में सभी बूथों पर जयंती कार्यक्रम सम्पन्न हुए। संगोष्ठी में देवेश कोरी जी ने कहा कि बाबा साहब ने कहा था कि शिक्षा ही परिवर्तन की धुरी है। शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो। आम्बेडकर जी का जीवन संघर्ष की महागाथा है। बाबा साहेब का जीवन प्रेरणा का अक्षय स्त्रोत है। बाबा साहेब के संकल्प को भाजपा की डबल इंजन सरकार ही साकार कर रही है। जिलाध्यक्ष चन्द्र प्रकाश खरे जी ने कहा कि भाजपा सरकार ने बाबा साहेब को सर्वाधिक सम्मान दिया है।

सांसद आर के पटेल जी ने कहा कि बाबा साहब के खिलाफ कांग्रेस ने उनके सचिव को चुनाव लडाकर उनको संसद जाने से रोकने का षड़यंत्र रचा था। तब जनसंघ ने ही उन्हे सदन में जाने मे मदद की थी। भाजपा की मोदी सरकार ने बाबा साहब के जीवन से जुड़े स्थानों को पंचतीर्थ की तरह विकसित किया है। मुगलों ने समाज का उत्पीड़न किया और जातिगत बंटवारा किया ।जिला पंचायत अध्यक्ष अशोक जाटव जी ने कहा कि हम सबको बाबा साहेब के संकल्पों को पूरा करने के लिए संकल्पित प्रयास करना होगा ।जिला महामंत्री आलोक पाण्डेय ने कहा कि संकल्प के बिना परिवर्तन की कल्पना नहीं की जा सकती है। भाजपा की डबल इंजन सरकार आम्बेडकर जी के विचारों को धरातल पर उतार रही है ।जयंती कार्यक्रम में हरिओम करवरिया, पंकज अग्रवाल, राजकुमार त्रिपाठी, राकेश कोल, निर्मलेन्द्र पाण्डेय, अखिलेश रैकवार, राघव अग्रवाल, भागवत त्रिपाठी, रमाकांत पाण्डेय, संतोष, भगवानदीन, के साथ समस्त कार्यकर्ता सहभागी हुये ।

ट्रैक्टर ट्राली की चपेट में आने से एक युवक की मौत, भाई बहन हुए घायल

बलिया। सदर कोतवाली थाना क्षेत्र के जलालपुर पेट्रोल पंप के समीप ट्रैक्टर ट्राली की चपेट में आने से एक युवक की मौत हो गई जबकि भाई-बहन घायल हो गए वहीं पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया घटना के बाद ट्रैक्टर चालक मौके से फरार हो गया है। गाजीपुर जनपद के कर्म जौनपुर थाना क्षेत्र के ताजपुर गांव निवासी मनोज कनौजिया अपनी बहन को छोटे भाई बिट्टू कनौजिया के साथ बाइक से बलिया आ रहे थे कि अचानक तबीयत खराब थी जिसे जिला अस्पताल दिखाना था अभी जलालपुर स्थित पेट्रोल पंप के पास पहुंचे थे ट्रैक्टर की टक्कर से मौत हो गई वहीं मनोज कनौजिया हो गई आसपास के लोगों ने दोनों घायलों का प्राथमिक उपचार कराया।

उप्र सीनियर बेसिक शिक्षक संघ का स्वर्ण जयंती समारोह मनाया गया

बलिया। उत्तर प्रदेश सीनियर बेसिक शिक्षक संघ के स्थापना की पचासवीं वर्षगांठ यानी स्वर्ण जयंती समारोह गुरूवार को टाउन इंटर कालेज के सभागार में आयोजित किया गया। समारोह में सेवानिवृत्त शिक्षकों व शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के साथ ही 2015 के पश्चात नियुक्त शिक्षकों को सम्मानित किया गया। वक्ताओं ने उप्र सीनियर बेसिक शिक्षक संघ के संस्थापक स्व अयोध्या प्रासाद अवस्थी के संघर्षों को याद करते हुए कहा कि 1973 में आज ही के दिन उन्होंने संगठन की नींव रखी थी। उनके प्रयासों से जूनियर हाईस्कूलों के शिक्षकों व शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के लिए सेवा नियमावली बनाई गई थी। शिक्षकों व शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के खाते में आज सीधे वेतन जा रहा है तो यह भी उनके ही संघर्षों की देन है।

न्यूज झरोखा

आवाज उठाना जुर्म यहां, सीने में धरी दोनाली है, पाठा में फिर गहराया पेयजल संकट

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। बीते वर्षों की भांति इस साल भी पाठा क्षेत्र के गोपीपुर गांव में पेयजल संकट छाया है। तीन दशक से पेयजल संकट दूर नहीं हो रहा। प्रशासन हर वर्ष कुआ, हैण्डपम्प से जलापूर्ति के दावे करता है, लेकिन स्थायी रूप से पेयजल संकट दूर नहीं हो पा रहा।

प्रत्येक वर्ष गर्मी कहर बरपा कर चली जाती है। वर्षा आने पर पेयजल संकट टल जाता है, किन्तु गर्मी आने पर पेयजल संकट फिर मुंह फैलाकर खड़ा हो जाता है। गोपीपुर गांव में तीन दशक बाद भी पेयजल संकट का निदान नहीं हो पा रहा है। समय-समय पर सतही साधनों से सार्थक समाधान न होने से गोपीपुर गांव उजड़ने की कगार पर है।

जल संकट जिले के पठारी क्षेत्र की नियति बन चुकी है। अमचुर नेरुवा, बगरहा, भेंड़ा, केकरामार, टिकुरी, कोटा कंदैला आदि गांव हैं, जिनकी कोई सुध लेने वाला नहीं है। अमचुर नेरुवा, छोटे दादू लैण्ड मारकुण्डी के पास का आदिवासी कोलों का लगभग 70 परिवारों का एक उपेक्षित गांव है। लगभग 500 आबादी में पढ़ने योग्य 170 बालक-बालिकायें हैं। इस गांव के स्कूल को गांव से डेढ़ किमी दूर बनाया गया है, ताकि आदिवासी कोल पढ़-लिख न सकें। बेगार करने को दादुओं के लिए उपलब्ध रहें। इस गांव के सभी परिवार एक किमी से अधिक दूर जंगल को पार कर 80 फिट से ज्यादा गहरे नाले में रिस रहे पत्तियों से सड़े जल को पीने के लिए लेने को प्रतिदिन जाते हैं।

आदिवासी कोलों के लिए रोजगार के नाम पर जिन्दा रहने पर जंगल की लकड़ी है। जंगल की लकड़ी को काटकर विभिन्न टेज्नों से विभिन्न स्थानों पर ले जाकर बेंचना उनका मुख्य कारोबार है। लकड़ी बेंचने के बाद भोजन सामग्री आदि खरीदकर रात में लौटना और खाना बनाकर खाकर सवेरे पुनः इसी कार्य में लग जाना उनकी जीवनचर्या है। कोल आदिवासी आज भी जनजाति का दर्जा नहीं पा सके हैं। पाठा के इन कोलों की धरती खासी धीरज वाली है। आवाज उठाना जुर्म यहां, सीने पर धरी दोनाली है- ये पंक्तियां यहां आज भी चरितार्थ हैं। भय, भूख तथा प्यास यहां का रिवाज बन गया है।

आठ माह से नदारद डॉक्टर का हुआ बांदा तबादला, मूल तैनाती से निकलेगा वेतन

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। चित्रकूट धाम मंडल बांदा के चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के अपर निदेशक ने जिला संयुक्त चिकित्सालय में कार्यरत डॉ ऋषि कुमार का तबादला बांदा जिला अस्पताल के लिए कर दिया है, जबकि उनका वेतन मूल तैनाती स्थल से देय होगा।

शुक्रवार को अपर निदेशक ने बताया कि फिजीशियन डॉ ऋषि कुमार ने बीती छह अप्रैल को दिये पत्र में बताया था कि वह जिला अस्पताल में सात साल से काम कर रहे हैं। विगत दिनों उनका विवाद अस्पताल में तैनात वार्ड आया से हो गया था। इससे वह संयुक्त जिला चिकित्सालय के अलावा अन्य किसी चिकित्सालय में अपनी सेवाएं देने को तैयार है। अग्रिम आदेशों तक के लिए फिजिशियन डॉ ऋषि कुमार को बांदा के जिला अस्पताल में कार्य करने को अपर निदेशक ने आदेशित किया है।

इधर, सीएमएस डॉ सुधीर शर्मा ने बताया कि डॉ ऋषि कुमार सात सालों से सेवायें देने की बात कह रहे हैं। वह तो जिला अस्पताल में आठ माह से नदारद चल रहे हैं। जिला अस्पताल चित्रकूट महत्वपूर्ण जगह है। यहां वीआईपी का आना-जाना लगा रहता है। फिजीशियन की लगातार कमी है। जबकि बांदा में पर्याप्त फिजीशियन हैं। एडी स्वास्थ्य ने इन्हें बांदा कर दिया है, जबकि एडी स्वास्थ्य को इन्हें सख्ती से समझाना चाहिए। इस संबंध में एडी स्वास्थ्य ने कहा कि डॉ ऋषि लगातार शासन को त्याग पत्र को लिख रहे हैं। प्रदेश में डॉक्टरों की कमी है। कुछ दिनों के लिए उन्हें बांदा किया गया है। इनके स्थान पर दूसरा फिजीशियन बांदा से चित्रकूट जिला अस्पताल भेजा जायेगा।

प्रदेश संगठन मंत्री आलोक आर्य तो प्रदेश मंत्री बने आनन्द जायसवाल, हुआ भव्य स्वागत

सुलतानपुर। राष्ट्रीय जन उद्योग व्यापार संगठन के प्रदेश संगठन महामंत्री आलोक आर्य तो प्रदेश मंत्री बने आनन्द जायसवाल को बनाये जाने पर भव्य स्वागत समारोह का आयोजन किया गया।

स्वागत समारोह का आयोजन नगर के एक निजी आवास पर गुरुवार को किया गया। इस मौके पर व्यापारियों एवं संगठन के सदस्यों को सम्बोधित करते हुए आलोक कुमार आर्य ने कहा कि इस समय देश के 8 प्रांतों में संगठन पूरी तरह से सक्रिय है। संगठन का प्रत्येक सदस्य व्यापारियों एवं समाज की सेवा के लिए हमेशा सक्रिय रहता है।

प्रदेश मंत्री आनन्द जायसवाल ने कहा कि व्यापारियों के हित मे हम हमेशा आपके साथ है। इस मौके पर प्रमुख रूप से कमल सेठ,विनोद लोहिया,अनिल बरनवाल,आशीष श्रीवास्तव,संजय कसौधन , राहुल सेठ ,संदीप अग्रहरी ,मुन्ना सोनी ,अशोक वर्मा ,विनय सेन ,अनुज सोनी ,मक्खनलाल मोदनवाल ,संतोष अग्रहरी, दुर्गाप्रसाद मोदनवाल,यश अग्रहरी,शिवम् अग्रहरी,सूरज मोदनवाल,अशोक गुप्ता , दयाशंकर साहू,उत्कर्ष मोदनवाल आदि रहे।

दो ब्राह्मण प्रत्याशियों की घोषणा के साथ कानपुर मेयर सीट के लि?ए संघर्ष शुरू

कानपुर। यहां मेल की सीट पर कब्जा जमाने के लिए संघर्ष शुरू हो चुका है जिसमें भाजी मारने के लिए ब्राह्मण कार्ड खेलते हुए कांग्रेसमें आशनी अवस्थी और समाजवादी पार्टी ने विधायक अमिताभ बाजपेई की पत्नी वंदना वाजपेई को अपना प्रत्याशी घोषित कर दिया है जबकि भारतीय जनता पार्टी में अभी तक प्रत्याशी के नाम की घोषणा किए जाने का इंतजार है।

इसमें भारतीय जनता पार्टी से टिकट के दावेदारों की संख्या तकरीबन एक दर्जन से भी ज्यादा बताई जाती है अभी तक अभी तक यह सीट भाजपा के पास थी। और जिस तरह की तैयारियां की जा रही हैं उसके आधार पर दावा है कि इस बार भी भारतीय जनता पार्टी मेयर की सीट पर कब्जा करने में सफल होगी।

कानपुर मेयर की सीट पर कांग्रेस के प्र?याशी घोष?ित करने के बाद आज समाजवादी पार्टी ने भी ब्राह्मण कार्ड खेलते हुए सपा वि?धायक अमि?ताभ बाजपेयी की पत्?नी बन्?दना बाजपेयी को उम्?मीदवार बनाया है।

यहां महापौर पद के लिए कांग्रेस ने बुंदेलखंड जोन में महिला कांग्रेस की महासचिव आशनी अवस्थी को उम्मीदवार बना ब्राह्मण व युवा चेहरे पर दांव लगाया है। उनके पति विकास अवस्थी अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य व प्रदेश कमेटी के सचिव हैं।

छात्र राजनीति से आए विकास युवा इंटक के प्रदेश अध्यक्ष भी रह चुके हैं। इनके पिता स्वर्गीय अजय अवस्थी कल्याणपुर क्षेत्र से जिला पंचायत सदस्य रहे। कांग्रेसी मेयर की प्रत्याशी बनाई गई आशनी अवस्थी 2017 कांग्रेस से सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में जुड़ीं। 2021 में वह बुंदेलखंड जोन में महिला कांग्रेस की महासचिव बनीं।

चार को दबोच ठेका की भारी मात्रा में शराब बरामद

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृन्दा शुक्ला के निर्देश में अवैध शराब निर्माण एवं बिक्री की रोकथाम को जारी अभियान के क्रम में पुलिस ने चार लोगों के कब्जे से 55 क्वार्टर देशी शराब व 18 बीयर की कैन बरामद की है।

शुक्रवार को चैकी प्रभारी सरैंया चद्रमणि पाण्डेय की टीम ने अंजू उर्फ अखिलेश कुमार पुत्र घनश्याम पटेल निवासी उड़कीमाफी थाना रैपुरा के कब्जे से 20 क्वार्टर देशी शराब समेत दबोचा। अभियुक्त के खिलाफ मानिकपुर थाना में आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया। टीम में चन्द्रमणि पाण्डेय, सिपाही दशरथ राम, सिपाही चन्द्रभूषण राय शामिल रहे।

सरधुवा थाने के दरोगा शिवमणि मिश्रा की टीम ने विनय कुमार पुत्र कृष्णचन्द्र निवासी ओमनगर चिल्लीमल को 18 बीयर की केन के साथ दबोचा है। उसके खिलाफ थाने में आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया है। टीम में दरोगा शिवमणि मिश्रा, सिपाही धर्मेन्द्र कुमार, महेन्द्र कुमार शामिल रहे।

भरतकूप थाने के दरोगा यदुवीर सिंह की टीम ने अशोक कुशवाहा पुत्र स्व राजू कुशवाहा निवासी गौतमबुद्ध नगर कस्बा भरतकूप के कब्जे से 20 क्वार्टर देशी शराब समेत गिरफ्तार किया है। उसके खिलाफ थाने में आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया है। टीम में दरोगा यदुवीर सिंह, सिपाही अंकित राजपूत, सिपाही राकेश कुमार शामिल रहे।

मारकुण्डी थानाध्यक्ष अनिल कुमार की टीम ने कोदूलाल सेन पुत्र मिठाईलाल निवासी मिचकुरियन थाना मझगवां सतना मप्र को 15 क्वार्टर देशी शराब के साथ दबोचा है। उसके खिलाफ थाने में आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया है। टीम में थानाध्यक्ष मारकुण्डी अनिल कुमार व सिपाही प्रमोद कुमार शामिल रहे।

सरधुवा पुलिस ने जिला बदर दबोचा

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक वृन्दा शुक्ला के निर्देश पर सरधुवा थानाध्यक्ष प्रवीण कुमार सिंह की टीम ने जिला बदर अपराधी को दबोचा है।

शुक्रवार को सरधुवा थानाध्यक्ष प्रवीण कुमार सिंह गश्त पर थे। उन्हें मुखबिर से सूचना मिली कि जिला बदर शिवभरत पुत्र बाबू उर्फ बउवा निवासी पनौटी अपने गांव में घूम रहा है। जिला बदर के आदेश का जिलाधिकारी के उल्लंघन करने पर पुलिस टीम ने उसे गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने उस पर गुंडा एक्ट का मामला दर्जकर जेल भेजा है। टीम में सरधुवा थानाध्यक्ष प्रवीण कुमार सिंह व सिपाही अमित सिंह शामिल रहे।

इसी क्रम में बहिलपुरवा थानाध्यक्ष गुलाबचन्द्र सोनकर की टीम ने वांछित शंकर पुत्र रामलाल निवासी छीतूपुर को गिरफ्तार किया है। टीम में बहिलपुरवा थानाध्यक्ष गुलाबचन्द्र सोनकर के साथ सिपाही शक्ति सिंह व अभिनेश पाल शामिल रहे।

दो एटीएम जालसाजों को दबोच 117000 रुपये किये बरामद

एएसपी ने पत्रकार वार्ता में दी जानकारी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश में अपराधों पर अंकुश लगाने को की जा रही कार्यवाही के क्रम में एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी व सीओ सिटी हर्ष पाण्डेय की देखरेख में कर्वी कोतवाल गुलाब त्रिपाठी की अगुवाई में पुलिस ने एटीएम से फ्रॉड कर दो घटनाओं का खुलासा कर दो अन्तर्राज्यीय जालसाजों को दबोचकर चोरी के 117000 रुपये, तमंचा, कारतूस व बिना नम्बर की मोटरबाइक बरामद की है।

ज्ञात है कि 13 अप्रैल को निरीक्षक अजीत पाण्डेय की टीम को मुखबिर से सूचना मिली कि पटेल तिराहे से बिना नम्बर की होण्डा साइन मोटरबाइक पर सवार श्यामलाल पुत्र अच्छेलाल चैधरी निवासी देवेन्द्रनगर थाना पन्ना मप्र व रामप्यारे चैधरी पुत्र कल्ला प्रसाद चैधरी निवासी नोनगरा थाना सिंहपुर जिला सतना मप्र को दबोचा। अभियुक्तों के कब्जे से चोरी के 117000 रुपये व तमंचा 315 बोर, कारतूस, दो कीपैड मोबाइल बरामद किये। कडाई से पूंछताछ में अभियुक्तों ने बताया कि दोनों ने 18 दिसम्बर 2022 को आर्यावर्त बैंक शाखा कर्वी तथा छह फरवरी 2023 को बैंक ऑफ बडौदा शाखा कर्वी के एटीएम बूथों से ग्राहकों के एटीएम कार्ड बदलकर पिन कोड नम्बर देखकर छल करके खातों से रुपये निकाले थे। अभियुक्तों ने बताया कि बरामद रुपये छह फरवरी व 18 दिसम्बर को ग्राहकों से छल करके कुल 134000 रुपए निकाले थे। जिनमें 117000 रुपये बचे हैं। शेष रुपये खर्च कर डाले। दोनों आपस में रिश्तेदार हैं। जगह बदलकर सीधेसादे लोगो को एटीएम बूथ से पैसा निकालने में मदद के बहाने पिनकोड जानकर एटीएम कार्ड बदल देते है। बाद में वहां से हटकर ग्राहक सेवा केन्द्रों पर जाकर एटीएम कार्ड के साहरे पैसा निकालते रहे हैं। इस बाबत कोतवाली कर्वी में जालसाजी का मामला दोनों के खिलाफ दर्ज किया।

पुलिस टीम में निरीक्षक अजीत कुमार पाण्डेय, दरोग पवन कुमार प्रधान, दरोगा रामअधार सिंह, सिपाही गोलू भार्गव, सिपाही रोहित यादव शामिल रहे।

मिजार्मुराद क्षेत्र के एक गांव से बीते 2 अप्रैल को 13 वर्षीया किशोरी रहस्यमय परिस्थिति में घर से गायब हो गई थी।पुलिस ने किशोरी के भाई के तहरीर पर अपरहण का मुकदमा दर्ज कर किशोरी के तलाश में जुट गई थी।

गुरुवार को मिजार्मुराद पुलिस ने अपरहणकर्ता को गिरफ्तार करते हुए किशोरी को बरामद कर लिया। मिजार्मुराद एसओ दीपक कुमार रनावत ने बताया कि किशोरी की तलाश जारी थी गुरुवार की सुबह मुखबिर की सूचना पर रूपापुर के पास से अपरहणकर्ता भोरकला निवासी बादल पांडेय को पुलिस ने गिरफ्तार करते हुए नाबालिग किशोरी को बरामद कर लिया ।गिरफ्तार अभियुक्त को पुलिस ने लिखा पड़ी के बाद जेल भेज दिया वही किशोरी को परिजनों को सुपुर्द कर दिया गया ।गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम में एसओ दीपक कुमार रनावत, एसआई संग्राम सिंह यादव, कांस्टेबल फूलचन्द्र व धर्मेंद्र कुमार रहे।

नाबालिग किशोरी बरामद, अपरहणकर्ता गिरफ्तार

अध्यक्ष पद के लिए कोंच में 6, नदीगांव में बिके 3 नाम निर्देशन पत्र

कोंच(जालौन)। नगरीय निकाय चुनाव में जारी नामांकन प्रक्रिया में दूसरे दिन बुधवार को भी कोंच नगर पालिका और नदीगांव नगर पंचायत में एक भी नामांकन दाखिल नहीं किया गया, अलबत्ता पर्चों की खरीद में और तेजी आई है। कोंच में अध्यक्ष पद के लिए 6 और सभासद पद के लिए 88 पर्चे बिके जबकि नगर पंचायत नदीगांव में अध्यक्ष पद के लिए 3 और सभासद पद के 8 पर्चे बिके।

निकाय चुनाव की चल रही नामांकन प्रक्रिया में अभी रौनक कम ही नजर आ रही है। एसडीएम कृष्ण कुमार सिंह की देखरेख में तहसील परिसर में विभिन्न पदों के लिए अलग अलग काउंटरों की व्यवस्था की गई है। रिटर्निंग ऑफिसर से मिली जानकारी के मुताबिक बुधवार को कोंच नगर पालिका में न ही अध्यक्ष और न ही सभासद पद पर किसी ने नामांकन किया, यही स्थिति नगर पंचायत नदीगांव की भी रही। कोंच के 25 वार्डों में 63 लोगों ने 88 पर्चे खरीदे जबकि नदीगांव के 10 वार्डों में 8 लोगों ने 8 पर्चे खरीदे। कोंच में अध्यक्ष पद पर तीन लोगों ने 6 पर्चे खरीदे जिनमें निवर्तमान पालिकाध्यक्ष डॉ. सरिता वर्मा उनके पति आनंद अग्रवाल और ममता सिंह कुशवाहा शामिल हैं। नदीगांव में अध्यक्ष पद पर 3 पर्चे खरीदे गए।

नेपाल में नए साल का जश्न

काठमांडू। नेपाल में शुक्रवार को नया साल विक्रम संवत 2080 बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। नए साल के अवसर पर आज देशभर में सार्वजनिक अवकाश है।नेपाल के आधिकारिक कैलेंडर विक्रम संवत के अनुसार आज नववर्ष है। विक्रम संवत को मान्यता केवल नेपाल ने दिया है।

सूर्य के मेष राशि में प्रवेश करने के दिन यानी बैसाख की पहली तारीख से विक्रम संवत का नया साल शुरू होता है। नेपाल में लिच्छवी, मल्ल, सेन और शाह राजवंशों के शिलालेखों में विक्रम संवत का उल्लेख मिलता है। इसलिए इस बारे में एक बहस है कि इसे औपचारिक रूप से सरकारी संवत के रूप में कब मान्यता दी गई थी।नेपाल में नया साल काठमांडू के पास भक्तपुर जिले में बिस्का जात्रा, थिमी में जिवे वेदी और तराई में सिंदूर जशा, सिरुवा उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इसलिए नववर्ष का विशेष सांस्कृतिक महत्व है।

विदेश मंत्री कुलेबा ने कहा, क्रीमिया और यूक्रेन से अपनी सेना को हटाए रूस

कीव। रूस क्रीमिया, यूक्रेन के अन्य हिस्सों से अपनी सेना हटा ले, जिस पर मास्को ने हाल में अवैध रूप से कब्जा कर लिया है। यह मांग यूक्रेन के विदेश मंत्री दिमित्रो कुलेबा ने करते हुए कहा कि उनका देश अपनी इस मांग पर कायम रहेगा। यूक्रेनी विदेश मंत्री कुलेबा ने कहा कि 13 महीने से अधिक समय पहले रूस के पूर्ण पैमाने पर आक्रमण के बाद क्रेमलिन से निपटने में उनके देश के सभी क्षेत्रों के साथ समान व्यवहार किया जाना चाहिए।

कुलेबा ने रोमानिया की राजधानी बुखारेस्ट में एक सभा को डिजिटल तरीके से संबोधित करते हुए कहा कि हम संयुक्त राष्ट्र चार्टर सिद्धांतों और साझा विश्वास से एकजुट हैं कि क्रीमिया यूक्रेन है और यह यूक्रेन के नियंत्रण में वापस आएगा। उन्होंने काला सागर सुरक्षा सम्मेलन में कहा, हर बार जब आप दुनिया के किसी भी कोने से किसी को यह कहते हुए सुनते हैं कि क्रीमिया किसी तरह विशेष है और यूक्रेन को वापस नहीं किया जाना चाहिए तो आपको यह जानना होगा कि यूक्रेन स्पष्ट रूप से इन बयानों से असहमत है।

क्रेमलिन चाहता है कि कीव क्रीमिया पर रूस की संप्रभुता को स्वीकार करे और सितंबर में डोनेत्स्क, खेरसॉन, लुहांस्क और जेपोरिजिया के यूक्रेनी प्रांतों के कब्जे को भी मान्यता दे। यूक्रेन ने उन मांगों को खारिज कर दिया है और कहा है कि वह रूस के साथ तब तक बातचीत नहीं करेगा जब तक मॉस्को की सेना सभी कब्जे वाले क्षेत्रों से पीछे नहीं हट जाती।

दक्षिण कोरिया घूमना इजरायली पर्यटकों को पड़ा भारी, एक की मौत, 34 घायल

वाशिंगटन। दक्षिण कोरिया में दर्जनों इजरायली पर्यटकों को ले जा रही एक बस के पलटने से एक महिला की मौत हो गई। वहीं 34 लोग घायल हुए हैं।

गियरबॉक्स में खराबी

विदेश मंत्रालय के अनुसार, दक्षिण कोरिया के चुंगजू में एक बस के पलटने के बाद 11 लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां एक 60 वर्षीय महिला की मौत हो गई। बताया जा रहा है कि

दुर्घटना गियरबॉक्स में खराबी के कारण हुई थी। गियर बदलने में असमर्थ ड्राइवर ने बस रोक दी, तभी वह पलट गई।

वहीं, अधिकारियों का कहना है कि मामले की जांच कर रहे हैं। जल्द ही घटना की सही वजह पता चल जाएगी।

दक्षिण कोरिया आए थे घूमने

बता दें, बस में 11 पुरुष और 22 महिलाएं सवार थीं। यह सभी 6 अप्रैल को दक्षिण कोरिया घूमने के लिए पहुंचे थे। ये सभी पर्यटक 17 अप्रैल को वापस अपने देश जाने वाले थे, लेकिन इससे तीन दिन पहले ही उनकी बस हादसे का शिकार हो गई। प्रशासन का कहना है कि हम इस मामले की जांच कर रहे हैं, बस के ड्राइवर ने गियर में खराबी की बात कही है। सियोल में इजराइल के दूतावास की अपील के बाद साउथ कोरिया के विदेश मंत्रालय की ओर से कहा गया है कि वह घायलों को हर संभव मदद मुहैया कराएंगे।

नेपाल में प्रधानमंत्री प्रचंड को सता रहा गणतंत्र को खत्म करने का डर

काठमांडू,। नेपाल में प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल प्रचंड को गणतंत्र के पलटने का खतरा नजर आ रहा है। नए साल में काठमांडू में पार्टी के केंद्रीय कार्यालय में हुई बैठक में उन्होंने कहा कि गणतंत्र को खत्म करने की कोशिश की जा रही है।

उन्होंने तर्क दिया कि संविधान सभा द्वारा की गई गणतंत्र घोषणा को स्वीकार कर लिया गया था लेकिन अब इसे पलटने का प्रयास किया जा रहा है। प्रचंड ने कहा कि संविधान सभा द्वारा की गई घोषणा को स्वीकार किया गया था, लेकिन अब इसे पलटने का बहुत प्रयास हो रहा है। प्रधानमंत्री प्रचंड ने कहा है कि उन्होंने वर्ष 2008 में नेपाल में घोषित गणतंत्र में एक प्रमुख भूमिका निभाई थी। हालांकि उनका कहना है कि गणतंत्र के पलटने का खतरा समय-समय पर आ रहा है।पार्टी के केंद्रीय

कार्यालय में हुई बैठक में उन्होंने कहा कि विषम स्थिति को रोकने के लिए गणतंत्र के अलावा अन्य बदलाव जिम्मेदारी की भावना से किए जाने चाहिए। पूर्व राजा ज्ञानेंद्र शाह ने नववर्ष की पूर्व संध्या पर शुभकामनाएं देते हुए राजनीतिक दलों के नेताओं पर राजशाही कायम रखने के समझौते को तोड़ने का आरोप लगाया। अगले ही दिन, प्रचंड ने राजतंत्र का उल्लेख किए बिना गणतंत्र को समाप्त करने के प्रयासों के बारे में बताया। हाल ही में नेपाल में राजशाही के समर्थकों की गतिविधियां तेज हो गई हैं।

नेपाल में नववर्ष 2080 के स्वागत में हिन्दू स्वयंसेवक संघ ने देशभर में किया दीप प्रज्वलन

काठमांडू। नेपाल में नववर्ष 2080 के स्वागत के लिए देशभर में हिंदू स्वयंसेवक संघ की ओर से दीप जलाए गए। संघ ने नए साल में हमारी शान के नारे के साथ मंदिरों, धर्मस्थलों और मठों में दीये जलाए। हिंदू स्वयंसेवक संघ नेपाल के तत्वावधान में काठमांडू के मैतीघर मंडला में नेपाल का नक्शा बनाकर विशाल दीप प्रज्वलन कार्यक्रम आयोजित किया गया। ऐसे ही ललितपुर के महालक्ष्मी स्थान पर भी दीप प्रज्वलित किया गया। नेपाल में विक्रम संवत को सरकार और सार्वजनिक दोनों स्तरों पर मान्यता प्राप्त है। यह कैलेंडर प्रचलन में है। अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार हर साल बैसाख की पहली तारीख अप्रैल के महीने में पड़ती है। इस वर्ष विक्रम संवत का नववर्ष 14 अप्रैल से प्रारंभ हो रहा है।

मोजांबिक के साथ बढ़ेगा भारत का व्यापार, ऊर्जा और रक्षा क्षेत्र में सहयोग

-भारतीय विदेश मंत्री की तीन दिवसीय यात्रा पर मापुटो पहुंचे

मापुटो। भारत के विदेश मंत्री डॉ.एस. जयशंकर मोजांबिक की तीन दिवसीय यात्रा पर यहां पहुंच गए। इस दौरान दोनों देशों के बीच व्यापार, ऊर्जा व रक्षा क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने की बात कही गई है। युगांडा की यात्रा पूरी कर मोजांबिक पहुंचे जयशंकर ने राष्ट्रपति समेत देश के शीर्ष नेतृत्व के साथ बातचीत की। उन्होंने व्यापार, बुनियादी ढांचे, ऊर्जा और रक्षा के क्षेत्रों में संभावित सहयोग पर चर्चा की। यहां उनका

गर्मजोशी के साथ स्वागत किया गया। उन्होंने ट्वीट कर कहा, हमने द्विपक्षीय साझेदारी का विस्तार करने के लिए अपने राजनीतिक और आर्थिक सहयोग की समीक्षा की।विदेश मंत्री एस जयशंकर ने मोजांबिक की राजधानी में अपनी यात्रा के दौरान मेड इन इंडिया ट्रेन में सवारी की और मोजांबिक के परिवहन मंत्री के साथ ट्रेन नेटवर्क इलेक्ट्रिक मोबिलिटी और जलमार्ग कनेक्टिविटी का विस्तार करने में भारत की साझेदारी के बारे में चर्चा की। उन्होंने ट्वीट किया, मोजांबिक के परिवहन एवं संचार मंत्री और मोजांबिकन पोर्ट एंड रेल अथॉरिटी के अध्यक्ष माटेउस मागला के साथ ग्रीन ट्रांसपोर्ट बातचीत हुई। इस दौरान ट्रेन नेटवर्क, इलेक्ट्रिक मोबिलिटी और जलमार्ग कनेक्टिविटी के विस्तार के बारे में बात की। इसके अलावा उन्होंने भारतीय समुदाय के साथ भी बातचीत की और मापुटो में श्री विश्वंभर महादेव मंदिर में पूजा-अर्चना की।

ट्रंप से फिर हुई पूछताछ, न्यूयॉर्क अटॉर्नी जनरल के धोखाधड़ी के मुकदमे में बयान हुआ दर्ज

टोरंटो। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से न्यूयॉर्क में धोखाधड़ी के एक मुकदमे में पूछताछ की गई। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, न्यूयॉर्क की अटॉर्नी जनरल लेटिटिया जेम्स के धोखाधड़ी के मुकदमे में ट्रंप का बयान दर्ज किया गया। अटॉर्नी जनरल लेटिटिया जेम्स ने डोनाल्ड ट्रंप और उनके तीन बच्चों के खिलाफ धोखाधड़ी का मुकदमा दायर किया है।

बता दें, पिछले सप्ताह पूर्व राष्ट्रपति ट्रंप के खिलाफ एक अलग आपराधिक आरोप सामने आया था, जब अटॉर्नी जनरल लेटिटिया जेम्स ने ट्रंप, उनके पारिवारिक व्यवसाय और उनके तीन बच्चों पर धोखाधड़ी का आरोप लगाया गया था। यह मुकदमा सितंबर में दायर किया गया था और इस साल के अंत में ट्रायल होना है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, जेम्स ने दावा किया कि पूर्व राष्ट्रपति की संपत्ति अरबों डॉलर से अधिक थी। जेम्स ने मुकदमे में 250 मिलियन अमेरिकी डॉलर की मांग की है। इस मामले से परिचित एक व्यक्ति ने कहा डोनाल्ड ट्रंप ने सवालों के जवाब दिए। सवाल और जवाब तुरंत सार्वजनिक नहीं किए जाएंगे। एक अलग मामले में मैनहट्टन कोर्ट रूम में आपराधिक आरोपों पर ट्रंप के ऐतिहासिक आरोप के एक हफ्ते बाद बंद दरवाजे के पीछे का बयान आया।

नेपाल के पूर्व राजा का दावा, पार्टियों ने राजशाही कायम रखने वाले समझौते को तोड़ा

काठमांडू। नेपाल के पूर्व राजा ज्ञानेंद्र शाह ने दावा किया है कि राजनीतिक दल के नेताओं ने राजशाही कायम रखने के लिए किए गए समझौते को तोड़ा है। उन्होंने टिप्पणी की कि पार्टी के नेताओं ने समझौता करके अशिष्टता से समझौता तोड़ा।

नेपाल के नव वर्ष विक्रम संवत 2080 की पूर्व संध्या पर एक संदेश के माध्यम से पूर्व राजा ने यह भी चेतावनी दी कि समझौते को अशिष्टता से तोड़ना राजनीति और राज्य व्यवस्था में वांछनीय नहीं है। उन्होंने दावा किया कि वर्तमान में अशांति, अविश्वास, संघर्ष और जटिलता के मूल कारण पिछले समझौते को तोड़ना है। उन्होंने अपने संदेश में कहा, 'राजनीति और राज्य व्यवस्था में यह वांछनीय नहीं है कि राय, मान्यता और नीतिगत निर्णय विनम्रता के साथ किए जाएं और समझौते को अशिष्टता से तोड़ा जाए।' नेपाल में 28 मई, 2008 को संविधान सभा ने राजशाही को समाप्त कर गणतंत्र घोषित किया। वर्ष 2006 में एक जन आंदोलन हुआ, जिसके परिणामस्वरूप एक समझौता हुआ। उस समय भी राजतंत्र था। हालांकि उसके ठीक दो साल बाद तत्कालीन राजा ज्ञानेंद्र शाह से समझौता करने वाले दलों ने संविधान सभा के जरिए 240 साल पुराने शाह वंश को खत्म करने का फैसला किया। हाल ही में, पूर्व राजा पार्टी नेताओं की आलोचना करते हुए संदेश जारी कर रहे हैं। मार्च में, उन्होंने एक संदेश के माध्यम से पार्टियों से सहकार्य करने का आह्वान किया था। नेपाल के अंतिम राजा ज्ञानेंद्र शाह की राजनीतिक सक्रियता पिछले कुछ समय से बढ़ रही है। वह विभिन्न अभियानों में शामिल हो रहे हैं। नेता इसे गंभीरता से ले रहे हैं।सीपीएन (यूएस) के अध्यक्ष माधव कुमार नेपाल ने पिछले हफ्ते एक कार्यक्रम में पूर्व राजा की गतिविधियों पर आंखें मूंदने और राजशाही को वापस लाने की कोशिश नहीं करने की चेतावनी दी थी।

पने संदेश में कहा, 'राजनीति और राज्य व्यवस्था में यह वांछनीय नहीं है कि राय, मान्यता और नीतिगत निर्णय विनम्रता के साथ किए जाएं और समझौते को अशिष्टता से तोड़ा जाए।' नेपाल में 28 मई, 2008 को संविधान सभा ने राजशाही को समाप्त कर गणतंत्र घोषित किया।

नेपाल में उपचुनाव के बाद होगा प्रधानमंत्री प्रचंड के मंत्रिमंडल का विस्तार

काठमांडू। नेपाल में 23 अप्रैल को संसदीय सीट पर होने वाली उपचुनाव के बाद ही कैबिनेट का विस्तार होगा। प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल प्रचंड ने सत्तारूढ़ गठबंधन की घटक दलों से बाकी मंत्रियों के नाम मांगे हैं। हालांकि गठबंधन के दलों ने जवाब दिया है कि वे उपचुनाव के बाद ही मंत्रियों का नाम देंगे।

आज नेपाली कांग्रेस के सभापति शेर बहादुर देउबा ने अपनी पार्टी के विभिन्न गुटों के नेताओं से विचार-विमर्श कर मंत्रियों के हिस्से की व्यवस्था की है। इसकी ब्रीफिंग कांग्रेस के विभिन्न गुटों के नेताओं की बैठक में हुई। बैठक में शामिल एक नेता के मुताबिक, कांग्रेस के शेखर कोइराला गुट ने तीन मंत्री और एक राज्य मंत्री लेने की बात कही। हालांकि उनकी नियुक्ति उपचुनाव के बाद ही की जाएगी।

कांग्रेस के पास 8 मंत्रालय हैं। वो पहले ही 4 मंत्रियों को प्रधानमंत्री प्रचंड की मंत्रिमंडल में भेज चुके हैं और बाकी 4 की नियुक्ति होनी बाकी है। उपेंद्र यादव के नेतृत्व में जनता समाजवादी पार्टी (जेएसपी) को दो मंत्रालय मिला है। उनमें से एक को मंत्री बनाया गया है। बताया जा रहा है कि उपचुनाव के बाद ही दूसरे मंत्री का नाम तय होगा।

सीके राउत की नेतृत्व वाली जनमत पार्टी ने मंत्री को वापस बुला लिया है। उन्होंने कोई नया मंत्री नहीं भेजा है। प्रधानमंत्री प्रचंड के नेतृत्व वाली सरकार में अभी 6 मंत्रियों की नियुक्ति बाकी है। सरकार में

प्रधानमंत्री, दो उप प्रधानमंत्री, 13 मंत्री और एक राज्य मंत्री सहित 17 सदस्य होते हैं।पुष्प कमल दहल के नेतृत्व वाली सरकार में सत्ता संतुलन में बदलाव के बाद नए मंत्रियों को शामिल करने के बावजूद भी इसने पूर्णता नहीं पाया है।

47 साल बाद सामने आई प्लेन क्रैश की वजह, हादसे में गई थी कई नेताओं की जान; मलेशिया का मामला

नई दिल्ली। मलेशिया में एक टॉप सीक्रेट फाइल को 47 साल बाद सार्वजनिक किया गया है। बता दें कि साल 1976 में मलेशिया में एक विमान हादसा हुआ था, जिसमें कई बड़े राजनेता और मंत्री मारे गए थे। विमान हादसे के बाद से ही इसकी फाइल को मलेशिया की सरकार ने गुप्त रखा था और हादसे की वजह अनुसार, जो विमान हादसे का शिकार हुआ, वो ऑस्ट्रेलिया की

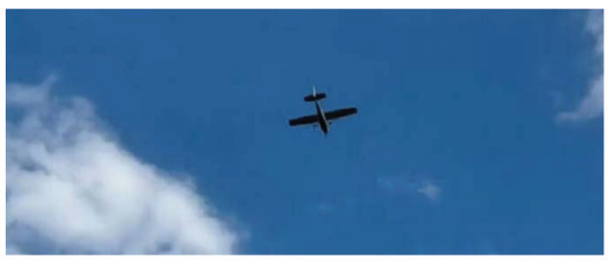

सरकारी एयरक्राफ्ट फैक्ट्री में बना था। विमान सबाह राज्य की राजधानी कोटा किनाबालु जा रहा था, जब वह समुद्र में समा गया था। इस विमान हादसे में सबाह राज्य के तत्कालीन मुख्यमंत्री तुन फुआद स्टीफेंस और राज्य के आवास मंत्री, वित्त मंत्री और संचार मंत्री की मौत हो गई थी। रिपोर्ट के अनुसार, ऐसा कोई सबूत नहीं मिला कि विमान में किसी तरह की कोई खराबी थी या फिर आग लगने की घटना या विस्फोट हुआ था। रिपोर्ट में बताया गया है कि विमान में तय मानकों से ज्यादा सामान भरा गया था और उसे ठीक तरह से भी नहीं भरा गया था, जिसकी वजह से विमान का हवा में संतुलन बिगड़ा और यही उसके हादसे की वजह बनी।

मृतकों के परिजनों ने की थी मांग

विमान हादसे की फाइल को गुप्त रखने के सरकार के फैसले का विरोध हो रहा था और मृतकों के परिजन लंबे समय से इस फाइल को सार्वजनिक करने की मांग कर रहे थे। जिसके बाद बीते दिनों मलेशिया के प्रधानमंत्री अनवर इब्राहिम ने इस रिपोर्ट को सार्वजनिक करने की बात कही थी। रिपोर्ट में ये भी बताया गया है कि विमान में दो पायलट सवार हो सकते हैं लेकिन इस विमान में एक ही पायलट सवार था। पायलट के हादसे के वक्त नशे में होने की बात कही जा रही थी लेकिन रिपोर्ट में ऐसी कोई बात नहीं है। हालांकि रिपोर्ट में ये बताया गया है कि विमान के पायलट का रिकॉर्ड अच्छा नहीं था और वह एक औसत दर्जे का पायलट था। मलेशिया सिविल एविएशन विभाग, एयर फोर्स के साथ ही ऑस्ट्रेलिया के ट्रांसपोर्ट विभाग ने मिलकर इस हादसे की जांच की थी। 25 जनवरी 1977 को इस हादसे की रिपोर्ट तैयार हुई थी, जिसे अब सार्वजनिक किया गया है।

यूक्रेनी राष्ट्रपति और उनकी टीम पर गंभीर आरोप; दावा- ईंधन खरीद सहायता से 400 मिलियन अमेरिकी डॉलर का गबन किया

कीव। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की और उनके सहयोगियों पर 400 मिलियन डॉलर के गबन का आरोप लगा है। अमेरिकी पत्रकार ने अपनी रिपोर्ट में यह खुलासा किया है, जिसे रूस के सरकारी मीडिया स्पुत्निक ने अमेरिकी पत्रकार का हवाला देते हुए प्रकाशित किया है। रिपोर्ट में आरोप है कि यूक्रेनी राष्ट्रपति और उनके सहयोगियों ने डीजल खरीद में यह गबन किया है। बता दें कि अमेरिकी पत्रकार सेमर हेर्स ने अपनी वेबसाइट पर यह रिपोर्ट अपलोड की है।

क्या है रिपोर्ट में

रिपोर्ट में दावा किया गया है कि यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की और उनके सहयोगियों ने डीजल खरीद के लाखों डॉलर की हेराफेरी की है। सेंट्रल इंटेलीजेंस एजेंसी ने अपनी रिपोर्ट में माना है कि बीते साल ही करीब 400 मिलियन डॉलर का गबन किया गया है। हालांकि अभी तक यूक्रेन में कोई प्रोफेशनल ऑडिट रिपोर्ट

जारी नहीं हुई है। हेर्स की रिपोर्ट में विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकेन और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जैक सुलीवन पर भी गंभीर आरोप लगाए हैं और अमेरिकी सरकार में जारी संकट के लिए इन दोनों को जिम्मेदार ठहराया गया है। आरोप है कि व्हाइट हाउस और अमेरिकी खूफिया एजेंसियों के बीच तालमेल में कथित तौर पर गड़बड़ी है।

अमेरिका कर रहा यूक्रेन की मदद

बता दें कि रूस यूक्रेन युद्ध के बाद से ही अमेरिका द्वारा यूक्रेन की मदद की जा रही है। यूएस, यूक्रेन को लाखों डॉलर की आर्थिक मदद दे चुका है। बीते महीने ही अमेरिका ने यूक्रेन को 350 मिलियन डॉलर की आर्थिक मदद देने का एलान किया था। यह मदद यूक्रेन को हथियारों की खरीद में मदद देने के लिए की गई थी। अमेरिका कई और देशों से भी यूक्रेन को मदद दिलाने की कोशिश कर रहा है। यूक्रेन-रूस युद्ध के बाद से यूक्रेन को करीब 29 बिलियन डॉलर की आर्थिक मदद मिली है।

रिपोर्ट में आरोप है कि यूक्रेनी राष्ट्रपति और उनके सहयोगियों ने डीजल खरीद में यह गबन किया है।
बता दें कि अमेरिकी पत्रकार सेमर हेर्स ने अपनी वेबसाइट पर यह रिपोर्ट अपलोड की है।

जी-20 देशों ने भारत के अनेक प्रस्तावों का मजबूत समर्थन किया: सीतारमण

वाशिंगटन। जी-20 समूह के सदस्य देशों ने भारत के अनेक प्रस्तावों का समर्थन किया है। इस पर सक्रिय बातचीत हो रही है। केंद्रीय वित्त निर्मला सीतारमण ने जी-20 देशों के अपने अनेक समकक्षों के साथ सिलसिलेवार मुलाकात के बाद यह बात कही। सीतारमण ने गुरुवार को वाशिंगटन में अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) और विश्व बैंक समूह की 2023 स्प्रिंग बैठकों से इतर प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि जी-20 देशों के समकक्षों के साथ मुलाकात बेहतर रही। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि भारत के ज्यादातर प्रस्तावों को अच्छा समर्थन मिला है। इसको लेकर सक्रिय जुड़ाव हो रहा है।

वित्तमंत्री ने कहा कि भारत को दिसंबर में जी-20 की अध्यक्षता मिली थी। सितंबर के शुरूआत में नई दिल्ली में नेताओं के शिखर सम्मेलन की मेजबानी करने की योजना है। जी-20 विश्व की 20 प्रमुख विकसित और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं का महत्वपूर्ण मंच है। सीतारमण ने कहा कि भारत जी-20 अध्यक्षता के तहत वित्तीय संरचना को हम कैसे देखना चाहते हैं। इस पर विस्तार से जानने के लिए कई सत्र आयोजित किए जाएंगे। वैश्विक वित्तीय ढांचे को मजबूत करने के लिए अगले कदम क्या होने चाहिए, इस पर चर्चा चल रही है।

उल्लेखनीय है कि भारत की अध्यक्षता के तहत जी-20 देशों के वित्तमंत्रियों और केंद्रीय बैंकों के गवर्नरों (एफएमसीबीजी) की दूसरी बैठक, आईएमएफ और विश्व बैंक समूह की 2023 स्प्रिंग बैठक 12-13 अप्रैल को आयोजित की गई थी। वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण और रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के गवर्नर शक्तिकांत दास ने बैठक की संयुक्त रूप से अध्यक्षता की। इस बैठक में जी-20 सदस्यों, 13 आमंत्रित देशों और विभिन्न अंतरराष्ट्रीय और क्षेत्रीय संगठनों के लगभग 350 प्रतिनिधियों उपस्थिति रहे।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।